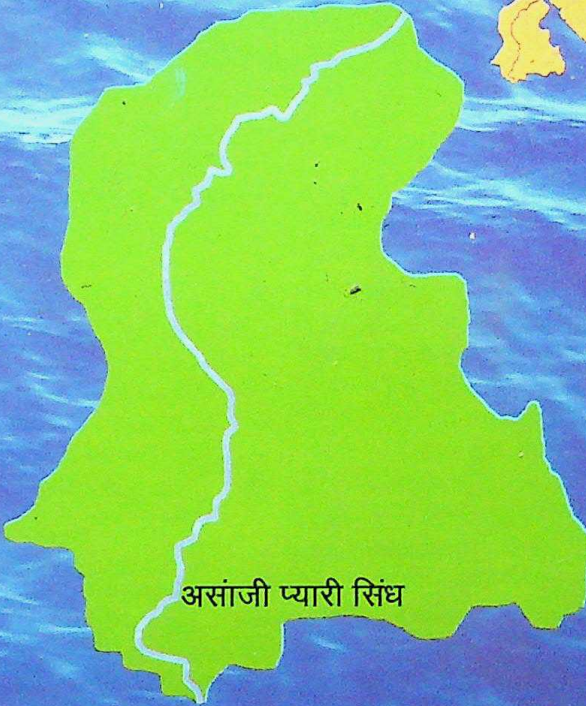


आओ हिंद में सिंध बनायें

- लखपत
- श्रीझूलेलाल तीर्थघाम
- नारायण सरोवर



असांजी प्यारी सिंध

हेमन्त कुमार सिंह

लेखक परिचय



हेमन्त कुमार सिंह

भारत की बहुआयामी जनसंख्या समस्या के पूर्णकालिक समाधान को दर्शाती अपनी पहली पुस्तक 'दो बच्चे का कानून' के बाद

सिंध बिना सूना हिंद

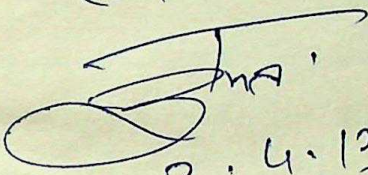
के अपने चार दशक पुराने दर्द के उपचार हेतु 'आओ हम सिंध बनायें' में सिंधियों सहित भारतीयों को जोड़ती इस रचना द्वारा राष्ट्रगान और सिंधियत के जाग्रत योगदान से प्रखर भारतीयता की पूर्णता अपेक्षित है। इस पुस्तक का लक्ष्य ही है सिंधी मानस की तरंगों को हिंदी मानस में प्रवाहित-संचारित कर भारत में सिंध निर्माण के विचार को राष्ट्रीय फोकस के केन्द्र बिन्दु में लाना। आगे प्रभु कृपा!

सम्पर्क : हेमन्त कुमार सिंह

405, स्वरूप कॉम्प्लेक्स,
बाजार समिति रोड, पटना-800 016

Mob.: 9801069042

570 अग्नि शेरखरजी
का लप्रे न भेंट.


2.4.13.

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सन्मेल भेंट

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Gandhi Memorial College Of Education Bantala Jammu

आओ हिंद में सिंध बनायें

हेमन्त कुमार सिंह

अग्निशेखर और समा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G.M. College of Education
Raipur, Bantala
Jammu

Acc No.

Date

3899

7-11-2023



नोवेल्टी एण्ड कम्पनी

अशोक राजपथ, पटना-800 004

★ प्रकाशक

नोवेल्टी एण्ड कम्पनी

ताराभवन, अशोक राजपथ

पटना - 800 004

फोन नं. - 0612-2672775

★ © लेखक

★ प्रथम संस्करण : 2012

★ ISBN:978-81-906934-0-0

★ मूल्य : ₹ 195/-

★ नोवेल्टी एण्ड कम्पनी

अशोक राजपथ, पटना - 800 004

द्वारा प्रकाशित तथा

विजयश्री ऑफसेट प्रिंटर्स, पटना-16 द्वारा मुद्रित।

Aao Hind Mein Sindh Banayan : by Hemant Kumar Singh

समर्पण

प्यारे राष्ट्रगान, प्रिय सिंध, पवित्रतम सिंधु नद
और संघर्षशील तथा जीवट सिंधी समाज को।

आओ हिंद में सिंध बनायें

आओ हिंद में सिंध बनायें
हिंद-इंडिया को सम्मान दिलायें
राष्ट्रगान का छिद्र मिटायें
कोटि सिंधियों का मान बढ़ायें
आओ हिंद में सिंध बनायें।

आओ इतिहास सुधारें
प्रायश्चित का भाव उभारें
अपनों की पीड़ा समझें
इतिहास बोध पनपायें
आओ हिंद में सिंध बनायें।

सिंध बोध से हिंद बोध जगायें
सिंध बना हिंद अंगड़ाई लायें
सिंध को हिंद की पाठशाला में बदलें
सिंध संवार हिंद को संवारें
आओ हिंद में सिंध बनायें।

हिंद को दुबारा दर्द न दिलायें
दर्द की जड़ों को तेल से गलायें
सारे भारती असांजी प्यारी सिंध गायें
वन्दे सिंध वन्दे में भारत खोजें
आओ हिंद में सिंध बनायें
आओ हिंद में सिंध बनायें।

भारत के सबसे पुराने समाज को आजादी की सबसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। पूरा का पूरा सिंध भारत से अलग कर दिया गया। सिंध का एक छोटा सा हिस्सा भी हम नहीं ले सके। तब जब की दृढ़ता और रणनीति से हम सिंध के कुछ हिस्से को तो पा ही सकते थे। भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंश पूर्णतः अपनी जड़ों से उखड़ गया। आजादी के बाद भी उसकी भू-राजनैतिक धरातल को लेकर हम भारतीय संवेदनहीन बने रहे। उनकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली के अनुकूल परिवेश निर्माण को लेकर कोई हलचल नहीं हुई।

विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा.....

में सिंध के क्षेत्रगत अभाव ने हमारे राष्ट्रगान में एक तरह की कमी को स्थायित्व प्रदान किया। सारे सम्बोधन तो प्रत्यक्ष, केवल सिंध की भाव जगत-छाया जगत की उपस्थिति की असहजता का बोध मन को तो सालता ही है।

एक ओर यह वेदनाकारी स्थिति थी तो दूसरी ओर कुछ मूढमति लोग एक तो करेला दूजे ऊपर नीम चढ़ा वाली कहावत चिन्तार्थ करते हुए राष्ट्र गान से सिध्द शब्द 'हटाने के लिए' न्यायसिंह का 'रसगुल' खटखटाने लगे।

आमुख

अखण्ड भारत का सिंध और आज का भारतीय सिंधी समाज भारतीय इतिहास में सबसे ज्यादा दुख के दिन देखे हैं। उनके लिए 712 ई. के अरब आक्रमण से लेकर 1843 ई. तक का काल अनंत त्रासदी का काल रहा है। इन 1131 वर्षों में शेष भारत ने सिंध पर कभी ध्यान नहीं दिया।

भारत के सबसे पुराने समाज को आजादी की सबसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। पूरा का पूरा सिंध भारत से अलग कर दिया गया। सिंध का एक छोटा सा हिस्सा भी हम नहीं ले सके। तब जब की दृढ़ता और रणनीति से हम सिंध के कुछ हिस्से को तो पा ही सकते थे। भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंश पूर्णतः अपनी जड़ों से उखड़ गया। आजादी के बाद भी उसकी भू-राजनैतिक धरातल को लेकर हम भारतीय संवेदनहीन बने रहे। उनकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली के अनुकूल परिवेश निर्माण को लेकर कोई हलचल नहीं हुई।

जो सबसे बड़ी विडम्बना बनी वह थी हमारे राष्ट्रगान में पूर्णता का अभाव। गान के सारे ग्यारह सम्बोधनों—

पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,

द्राविड़, उत्कल, बंग,

विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा.....

में सिंध के क्षेत्रगत अभाव ने हमारे राष्ट्रगान में एक तरह की कमी को स्थायित्व प्रदान किया। सारे सम्बोधन तो प्रत्यक्ष, केवल सिंध की भाव जगत-छाया जगत की उपस्थिति की असहजता का बोध मन को तो सालता ही है।

एक ओर यह वेदनाकारी स्थिति थी तो दूसरी ओर कुछ मूढ़मति लोग एक तो करेला दूजे ऊपर नीम चढ़ा वाली कहावत चिन्तार्थ करते हुए राष्ट्र गान से सिंध शब्द हटाने के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाने लगे।

नहीं वैसे लोगों को पूरे सिंधी समाज सहित राष्ट्रवादी भारतीय समाज को मर्माहत पीड़ा पहुँचाने में कौन सा सीधा आनंद या लाभ नजर आया। वैसे इस पर न्यायपालिका की सटीक टिप्पणी आ चुकी है।

उसी मनःस्थिति में इतिहास का छात्र होने के नाते मेरे मन में तीन दशक पुरानी मनोभावों की धारा बह चली। बी.ए.ऑनर्स (1973-75) के पाठ्यक्रम में सिंध के संक्षिप्त इतिहास को पढ़ने के दौरान ही यह बात मानस में बैठ गई कि भारत के इतिहास में सिंध की उपेक्षा हुई है। अंततः शेष भारत ने भी उसके बहुत ही बुरे दुष्परिणाम देखे हैं।

देश विभाजन के समय तथा आजादी के बाद भी हम भारतीय सिंध और सिंधी समाज के साथ न्यायोचित व्यवहार नहीं कर सके। इसी दबी वेदना को वैचारिक गति मिली सन् 2005 में इस संकल्प के मन में आते ही कि क्या भारत में सिंध निर्माण कर हम भारतवासी एक तीर से कई लक्ष्य नहीं साध सकते हैं ?

राष्ट्रगान की पूर्णता, सिंधी समाज का आत्म-सम्मान एवं प्रतिष्ठा की स्थापना और बंटवारे के दंश की भरपाई को लेकर मन में विचारों-भावों के तरंग आने लगे।

पर एक सामान्य व्यक्ति इतनी बड़ी बात को उठाये तो उठाये कैसे? उसी संकल्प-विकल्प में भारत में सिंध निर्माण की परिकल्पना, जो स्थिर विचार का रूप ले चुकी थी, को एक पुस्तक के माध्यम से रखने का निर्णय हुआ।

कहा जाता है कि विचार की ताकत दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। अपने देश में भी सबों को विचार करने और अपने विचार को रखने का अधिकार है। भारत के अन्दर सिंध निर्माण ऐसा ही विचार है, जिसका वक्त आ चुका है। हमारे यहाँ जनमत का राज है और यह जनमत का गति विज्ञान ही है, जो हाशिये पर बैठे विचार को न सिर्फ खींचकर केन्द्र के बीच में ले आता है बल्कि उन्हें उनके योग्य अंजाम तक पहुँचा भी देता है। यह पुस्तक सिंध निर्माण के विचार को जनमत में बदलने का एक प्रयास है।

देखना है कि भारत के लोग हमारे जैसे आम आदमी के विचार, सोच एवं इच्छाओं के साथ तादात्म्य यानी भावात्मक एवं बौद्धिक सम्बंध स्थापित कर पाते हैं या नहीं, यही महत्व की बात होगी। एक सामान्य व्यक्ति की सोच, वेदना और चाहना के साथ पाठक का भी सुर, ताल और लय मिलता है या नहीं—परीक्षण इसी का होना है। परीक्षण की सकारात्मकता ही जनमत होगी।

पुस्तक में कल्पना के कैनवास पर सिंध निर्माण जरूर है पर यदि इससे कोई धरातल बनती भी दिखने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। संभावनाओं के बिम्ब पर सिंध निर्माण को खड़ा किया गया है। यदि यह बिम्ब अवलम्ब में बदलने की कोई छटा बिखरे तो मैं इसे अपना अहोभाग्य मानूँगा। अपने जीवन की पूर्णता समझूँगा। मातृभूमि की सेवा इच्छा का फलित पुण्य समझूँगा।

और अंत में, यदि पढ़ने के क्रम में भारत बोध कौंधता हो, जगाता हो और मन के उदात्त भावों को ऊँचाइयों की ओर ले जाता मनोरंजन भी होता हो तो क्या हर्ज है ?

पटना

— हेमन्त कुमार सिंह

1/11/2011 (छठ व्रत, मंगलवार)

अनुक्रम

	पृष्ठ सं.
1. टर्निंग प्वाइंट	1-16
2. राष्ट्रगान में सिंध महक-मुस्कान	17-30
3. सिंध समर्थकों की जय हो! जये हो!	31-36
4. गंगा तीरे सिंध शरीरे	37-73
5. आइये जानें अपने सिंध और सिंधी समाज को	74-117
6. समर्थन का सैलाब	118-124
7. शुभारंभ	125-139
8. वैश्विक विश्वकर्मा उदय	140-143
9. वन्दे सिंध वन्दे	144-147

टर्निंग प्वाइंट

प्रोफेसर रघुनन्दन सिंह 3 जनवरी 2005 को पत्नी के साथ अपने फ्लैट की बालकोनी में शाम की चाय पीकर अभी उठे ही थे कि उनका मोबाइल बज उठा। नम्बर देखा तो वह प्रोफेसर बिपिन थे। बटन दबाते और प्रोफेसर सिंह के हेलो कहते ही प्रोफेसर बिपिन बिहारी बोलने लगे, “सर! आपके सिंध पर हमला कर दिया गया है। और वह भी भारत के सर्वोच्च न्यायालय में। यदि यह हमला कारगर हुआ, तो आपकी मानसिक समस्या बढ़ जायेगी। शायद आपका पेपर वर्क भी बढ़ जायेगा। और सिंध को लेकर आपको कहने-सुनने के लिए कुछ न बचे।”

प्रोफेसर सिंह ने उन्हें बीच में टोकते हुए कहा, “बिपिन बाबु, मैं आपकी बात समझ नहीं रहा हूँ। कृपया व्यंग्य की भाषा में बात नहीं करके सीधे-सीधे हमें बतायें।”

“सर! सुप्रीम कोर्ट में किसी भटनागर नाम के व्यक्ति ने जनहित याचिका दायर कर राष्ट्रगान से सिंध शब्द को हटाने की माँग की है। उसका कहना है कि जब सिंध राज्य अब भारत में नहीं ही है तो फिर राष्ट्रगान में सिंध नाम का रहना गलत है। उसका कहना है कि सिंध के स्थान पर दूसरा नाम जोड़ा जाय। सर, सभी न्यूज चैनलों पर यह खबर आ रही है। आप भी टी.वी. खोलकर देख लें।”

प्रोफेसर रघुनन्दन के मन में हलचल मच गई। चित्त चंचल हो उठा और मन में आक्रोश भर आया। न्यूज चैनल ‘आजतक’ के न्यूज स्कॉल पर यह समाचार तो था पर उसमें विस्तार नहीं था। लेकिन कुछ देर बाद ही जब विस्तार से न्यूज पढ़ा जाने लगा तो सारी बातें साफ हो गई। सुप्रीम कोर्ट में संजीव भटनागर नाम के व्यक्ति ने जनहित याचिका के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट से माँग की है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत सरकार को यह निर्देश दे की राष्ट्रगान से सिंध शब्द हटाया जाय। पूरा का पूरा सिंध पाकिस्तान में है। अब सिंध का नाम भारत के राष्ट्रगान में रहना पाकिस्तान की संप्रभुता पर प्रहार है। इससे निर्र्थक दोनों देशों के संबंध खराब होते हैं।

जब सिंध भारत में है ही नहीं तो सिंध शब्द के स्थान पर कश्मीर शब्द राष्ट्रगान में डाला जाय।

प्रोफेसर सिंह के मन में तीव्र प्रतिक्रिया होने लगी और अंतर्मन में कई तरह के भाव आने लगे। खुद अपने ही भारतीयों के हाथों राष्ट्रीय बोध के प्रतीकों की उपेक्षा और राष्ट्रीय पहचान के बिन्दुओं को लेकर हो रहे खिलवाड़ से मन की संवेदनशीलता काफी आहत हो रही थी। प्रोफेसर सिंह को आश्चर्य हो रहा था कि कैसी मूढ़ और विकृत सोच वाले हम भारतीय हैं, जो 1947 के देश विभाजन के बाद सिंध के भारत में नहीं रहने पर भी संजोये उससे संबंधित वृहत्तर भाव-संसार की गरिमा के साथ खिलवाड़ करने पर आमादा हो गये हैं। सिंध को लेकर उसकी भावना एक बार पुनः जाग्रत ही नहीं उग्र भी होने लगी।

प्रोफेसर सिंह की मान्यता है कि भारतीय इतिहास में सिंध के साथ घोर अन्याय और उपेक्षा हुई है। और उस उपेक्षा और अन्याय का सबसे निकृष्टतम रूप स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत विभाजन में पूरा का पूरा सिंध पाकिस्तान को निर्विरोध सौंपना और आजादी के बाद भारत में आ बसे भारतीय सिंधी जन और इनका मानस, जिसे सिंधी लोग सिंधियत भी कहते हैं, के साथ न्यायसंगत व्यवहार का नहीं होना है। इसके साथ ही प्रोफेसर सिंह की यह भी साफ समझ है कि सिंध की उपेक्षा एवं उसके साथ किये अन्याय की सजा भी भारत उसी अनुपात में भुगतता रहा है। उसे आगे भी भुगतना है.....तब तक जब तक कि पूरा भारत सिंध के इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझेगा और सिंध संबंधी अपनी गलतियों को नहीं समझेगा-सुधारेगा और उसका परिष्कार नहीं करेगा।

प्रोफेसर सिंह को अपना थीसिस याद आने लगा, जिस पर उसे पी.एच. डी. मिला था— 'भारतीय इतिहास में सिंध की उपेक्षा के दुष्परिणाम।' इसी विषय पर उसने डाक्टरेट किया था और उसे रघुनंदन सिंह से डॉ. रघुनंदन सिंह कहा जाने लगा था।

प्रोफेसर रघुनंदन सिंह पटना विश्व विद्यालय में इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष के साथ ही प्रखर और प्रतिभावान प्राध्यापक भी हैं। ये मध्यकालीन भारतीय इतिहास के गहरे ज्ञाता तथा छात्रों के पसंदीदा प्रोफेसर

हैं। पटना विश्व विद्यालय के दरभंगा हाउस के स्नातकोत्तर (एम.ए.) के उनके क्लास में विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति रहती है। ये विद्यार्थियों को विषय वस्तु से संबंधित विविध जिज्ञासाओं और प्रश्नों के लिए न केवल उन्हें उत्साहित करते हैं, अपितु उनके प्रश्नों को विस्तार में लेते हुए उसका उत्तर भी देते हैं। इनके पढ़ाने की शैली ही ऐसी है कि विद्यार्थियों के मन में प्रश्न कुलबुलाने लगते हैं। ये इतिहास को जानकारीयों का पुलिन्दा न बनाकर विद्यार्थियों में इतिहास बोध भरने वाली जिज्ञासा भी जगाते हैं। इससे चैप्टर सरल हो जाता है, रूचि बढ़ने से अंक भी ज्यादा आते हैं। विषय पर पकड़ भी बढ़ जाती है। पढ़ाते समय प्रोफेसर सिंह इतिहास के sense यानि बोध या मैसेज के प्रति विद्यार्थियों को ज्यादा तवज्जो देने पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि यदि इतिहास पढ़ते समय इतिहास बोध नहीं जगा तो वह व्यक्ति वैसा ही है जैसे आँख-कान विहीन मस्तिष्क।

प्रोफेसर सिंह का कहना है कि दुर्भाग्य से भारत में इतिहास रटने और जानकारी रखने तक ही ज्यादा सीमित है। इतिहास बोध का घोर अभाव है। हमारा देश उसकी सजा भुगत रहा है। उसका कहना है कि इतिहास बोध जगाकर राष्ट्र निर्माण किया जा सकता है। इतिहास से सीखना, सबक लेना और गलतियों को पुनः दुहराने से बचना ही नहीं बल्कि प्रतिकूल परिणाम को अपने अनुकूल बनाने का राष्ट्रीय मानस तैयार करना ही इतिहास की सही पढ़ाई है। अध्यापन के दौरान इतिहास के हर स्टेप पर कार्य-कारण और तत्कालिक-दूरगामी परिणाम तथा आज के राष्ट्रीय संदर्भ में उसका प्रभाव एवं वर्णन उसकी शैली का प्रधान अंग होता है। किसी घटना के कारणों की वो विशद व्याख्या करता है; जिसमें विभिन्न विचारधाराओं सहित उसकी अपनी टिप्पणी भी उल्लेखनीय हुआ करती है। 'हिस्ट्री-ज्योग्राफी बहुत बेवफा, रात पढ़े दिन सफा' वाली कहावत उसके क्लास में विद्यार्थियों के साथ नहीं होती है।

दूसरे दिन 4 जनवरी 2005 की सुबह सिंध संबंधी समाचार के लिए प्रोफेसर सिंह अखबार की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था। वो दो अखबार लेता है। हिन्दी में हिन्दुस्तान एवं अंग्रेजी का टाइम्स ऑफ इंडिया। इतनी बेसब्री से उसने शायद ही कभी अखबार की प्रतीक्षा की थी। एक-एक

मिनट की देर उसे खल रही थी। हॉकर से अखबार हाथों-हाथ लेते हुए उसने तुरंत निगाहें गड़ा दी। हिन्दुस्तान में मुख पृष्ठ पर सिंध संबंधी समाचार छपा था। जबकि टाइम्स ऑफ इंडिया में यह आठवें पृष्ठ पर था। हिन्दुस्तान में समाचार इस प्रकार था—

“राष्ट्रगान में सिंध क्यों: सुप्रीम कोर्ट

सिंध हटाने के लिए दायर याचिका पर केन्द्र को नोटिस

नई दिल्ली, (विसं) उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रगान की पंक्ति से सिंध का नाम हटाने के लिए दायर जनहित याचिका पर केन्द्र सरकार को नोटिस जारी किया है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति आर.सी. लाहोटी और न्यायमूर्ति जी.पी. माथुर की दो सदस्यीय खण्ड पीठ ने एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले एथलीट संजीव भटनागर की याचिका पर सोमवार को संक्षिप्त सुनवाई के बाद केन्द्र सरकार को नोटिस जारी किया।

श्री संजीव भटनागर ने जनहित याचिका पर बहस करते हुए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित गीत के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत किया और कहा कि देश के बंटवारे के बाद सिंध प्रांत पाकिस्तान का हिस्सा हो चुका है। इसलिए इस शब्द को राष्ट्रगान से हटाया जाना चाहिए। श्री भटनागर गृह मंत्रालय के इस तर्क से असहमति व्यक्त की कि सिंध शब्द का सम्बंध सिर्फ सिंध प्रांत से ही नहीं बल्कि सिंधी संस्कृति से भी है जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। गृह मंत्रालय ने गत वर्ष नौ दिसम्बर को श्री संजीव भटनागर को भेजे पत्र में आधुनिक भारत के निर्माण में सिंधी समुदाय के योगदान का जिक्र करते हुए लिखा था कि सिंध शब्द को राष्ट्रगान से निकालना उचित नहीं होगा। गृह मंत्रालय के अनुसार राष्ट्रगान के किसी भी शब्द में बदलाव के प्रयास के बाद इसमें विभिन्न धर्म, संस्कृति अथवा ऐसे ही अन्य हितों के आधार पर नये शब्दों को शामिल करने अथवा कुछ को इसमें से निकालने की इसी तरह की माँग उठ सकती है। न्यायालय ने गत वर्ष 20 सितम्बर को राष्ट्रगान की पंक्ति से सिंध शब्द हटाने के लिए दायर जनहित याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी थी कि वादी को इसके लिए केन्द्र सरकार से सम्पर्क करना चाहिए। इसके बाद ही

श्री भटनागर ने 24 सितम्बर को गृह मंत्रालय को पत्र लिखा था। श्री भटनागर का तर्क है कि चूँकि सिंध प्रांत अब भारत का अंग नहीं है, इसलिए देश के राष्ट्रगान में इस शब्द की आवश्यकता नहीं है। उनका कहना था कि देश के राष्ट्रगान में सिंध प्रांत का नाम शामिल होने से जहाँ पड़ोसी राष्ट्र की सर्वभौमिकता का उल्लंघन होता है वहीं आजादी के पहले के इस गान को आज भी करने से भारतवर्ष के एक अरब से अधिक नागरिकों की भावनाओं को ठेस पहुँचती है। याचिका के अनुसार राष्ट्रगान विषय पर 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा की बैठक में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा था कि इसके शब्दों में आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तन किया जा सकता है।”

टाइम्स ऑफ इंडिया में यह समाचार इस प्रकार छपा था—

“SC notice on anthem : Why not omit Sindh ?

Times News Network

New Delhi: why can't "Sindh" be substituted with some Indian State like Kashmir in Rabindra Nath Tagore's song written in praise of India and called the national anthem? This issue of national importance came up for a resolution before the supreme court on Monday, which issued notices to the centre and the HRD ministry.

Sung first time in 1911 when the country was not divided and still ruled by the Britishers, the national anthem was adopted by the constituent Assembly in the presence of top national leaders on January 24, 1950, despite all of them being aware of the fact that "Sindh" was part of Pakistan at that time.

A Bench of Chief Justice R.C. Lahoti and Justice G.P. Mathur issued the notice as petitioner Sanjeev Bhatnagar a national skates champion said the centre had said that the word "Sindh" in the national anthem represented the culture and not the province."

इसे पढ़ने के बाद प्रोफेसर समझ गया कि सिंध पर अब अदालती कार्यवाही शुरू हो गई है और कोर्ट तथा भारत सरकार का क्या दृष्टिकोण है। पर भारत में पटाखा फोड़ने, सनक या योजनाबद्ध ढंग से सनसनी द्वारा

नाम कमाने और देश की अस्मिता की कीमत पर भी परपीड़कों के व्यवहार से निपटा कैसे जायेगा, इसी की परीक्षा होनी थी। प्रोफेसर रघुनन्दन पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। वो समझ रहा था कि संवेदनशील भारतीय मानस इससे असहमत है परन्तु प्रोफेसर के भारतीय सिंधी समाज से किसी भी प्रकार के सम्पर्क में नहीं रहने के कारण सिंधी समाज की मानसिक पीड़ा की जानकारी नहीं होने का एहसास उसके मन में सूनापन पैदा कर रहा था। प्रोफेसर को लग रहा था कि सिंध से संबंधित पीड़ादायी संवेदनशीलता का उत्स और विस्तार तो भारतीय सिंधी समाज के बीच ही होगा, पर प्रोफेसर का वहाँ तक नहीं पहुँचना एक बड़ी रिक्तता थी।

प्रोफेसर के लिए भारतीय इतिहास के छात्र और प्राध्यापक के नाते भारत की प्राकृतिक सीमा के ध्वस्त हो जाने, हिन्दुस्तान की सबसे पुरानी सभ्यता के उद्गम स्थल सिंधु घाटी के खो देने तथा हिन्दू, हिन्दुस्तान एवं इंडिया के नामकरण के आधार स्तंभ सिंधु नदी से भारत के लगभग पूरी तरह पृथक हो जाने का दर्द तो देश के भूगोल या क्षेत्रीय विखंडन की पीड़ा थी, पर अपने संस्कृति स्थल, गृह प्रदेश एवं जड़ों से पृथक उन लाखों सिंधी भाई-बहनों के ऊपर इस याचिका द्वारा हो रहे भावात्मक प्रहार की पीड़ा में उनके साथ नहीं होना अन्याय प्रतीत हो रहा था।

प्रोफेसर ने निश्चय किया कि वह अपने शहर पटना और बिहार प्रांत सहित देश के विभिन्न स्थानों के सिंधीजनों, संस्थाओं, सिंधी पत्र-पत्रिकाओं आदि से न केवल निजत्व स्थापित करेगा, अपितु आलेख आदि लिखकर सिंध और सिंधीजनों के बारे में पूरे देश का ध्यान आकृष्ट करेगा।

लेकिन सर्वप्रथम दिल्ली जा सर्वोच्च न्यायालय में इस याचिका की जानकारी एवं उसके प्रतिकार के प्रयासों को जानने-समझने का मन बनने लगा।

कल शाम से लेकर सुबह अखबार पढ़ने तक मन में आते विचारों के आरोह-अवरोह को प्रोफेसर की पत्नी जानकी गौर से महसूस कर रही थी। प्रोफेसर का म्लान चेहरा और अवसाद ग्रस्त चित्त को देख वह भी चिंतित थी। उसकी चिंता का कारण प्रोफेसर का स्वास्थ्य था। जानकी को अपने पति

के ब्लड प्रेशर और सूगर के बढ़ते लेवल की चिंता रहती थी। जब से डॉक्टर ने दिल पर इसके सम्भावित प्रभावों के प्रति सचेत किया था तब से ही वह प्रोफेसर को सदा खुश रहने और तनाव नहीं लेने की बात कहते रहती थी। प्रोफेसर की आदत थी कि वो पत्नी को अपने मन के आवेग और मनोद्वारों से अवगत कराते रहता था। इस बार भी यही हुआ और जानकी ने उसे शांत रहने और कोर्ट के निर्णय आने की प्रतीक्षा करने की सलाह दी थी।

जानकी ने प्रोफेसर को सुबह का नाश्ता कराया और दोपहर के लंच को पैक कर ड्राइवर को टिफिन दे दिया। आज प्रोफेसर का दो क्लास था। पहला सिक्स्थ ईयर के लिए और दूसरा फिफ्थ ईयर के लिए।

जब प्रोफेसर की कार दरभंगा हाउस के पोर्टिको में पहुँची; दिन के ग्यारह बज रहे थे। पटना विश्व विद्यालय के कला संकाय के स्नातकोत्तर विभाग के क्लास दरभंगा हाउस में ही लगते हैं। इतिहास विभाग का स्नातकोत्तर विभाग इसी दरभंगा हाउस में है जो गंगा नदी के किनारे स्थित है।

दरभंगा हाउस एक बड़ा महल है जो आजादी पूर्व देश के सबसे बड़े जमींदारों में से एक दरभंगा राज का था। यह भव्य तीन मंजिला महल पटना विश्व विद्यालय की शान है, जिसको पटना विश्व विद्यालय ने सन् 1955 में 7 लाख रुपये में दरभंगा राज से खरीदा था। इस राजमहल का पूर्वी भाग रानी ब्लॉक और पश्चिमी भाग राजा ब्लॉक के नाम से जाना जाता है। 1917 में अखण्ड भारत के सातवें विश्व विद्यालय के रूप में स्थापित पटना विश्व विद्यालय का यह दरभंगा हाउस अपने कुक्षि से अनेक राष्ट्रीय प्रतिभाओं, विद्वानों एवं अधिकारियों को पैदा किया है।

प्रोफेसर कार से उतर अपने विभागाध्यक्ष के कक्ष में अभी पहुँचा ही था कि प्रोफेसर बिपिन बिहारी आ धमके।

आते ही उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में सिंध की बात छेड़ी। भन्नाये सिंह ने उन्हें चुप कराते हुए कहा, “देखिये बिपिन बाबु, हमसे आपको खुदक हो सकती है; यह हमारे आपके बीच विभागीय और विश्व विद्यालय

का Internal politics है। कृपया उसे सिंध से नहीं जोड़िये। किसी सनकी और फेम के लिए अति आतुर व्यक्ति ने राष्ट्रगान से सिंध को हटाने की याचिका दायर की है। कोर्ट उसे देखेगा। लाखों सिंधियों की भावना इससे आहत हुई है। हमारे जैसे लाखों-करोड़ों गैर सिंधियों के लिए भी यह दुःखद समाचार है। जहाँ तक मेरी बात है तो आप जानते ही हैं कि मैंने सिंध पर ही डॉक्टरेट किया है। चाहता हूँ कि सिंध और सिंधियों के प्रति भारत में प्रायश्चित्त करते हुए सम्मान का भाव जगे और अपना देश भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य में इसके महत्व को स्वीकारे। बस हमारी यही चाहत है। आगे जैसी प्रभु इच्छा। अभी मैं बड़ी पीड़ा में हूँ। कृपया अभी हमें छोड़ दें। भविष्य में ढेर सारे अवसर और विभागीय विषय आयेंगे-तब आप दाव-पेंच चलाईयेगा। हमें संकट में देख मुस्कुराइयेगा।”

प्रोफेसर बिपिन बिहारी को आशा नहीं थी कि प्रोफेसर सिंह इतनी कड़ी प्रतिक्रिया करेंगे। उन्होंने ज्यादा प्रतिवाद नहीं किया और अपने लाल चेहरे को संभालते हुए क्लास लेने के लिए कक्ष से बाहर निकल गए।

प्रोफेसर सिंह को मिलाकर पटना विश्व विद्यालय के स्नातकोत्तर विभाग में मात्र छः प्रोफेसर हैं और चार रिसर्च ऑफीसर हैं जो फिफ्थ और सिक्स्थ ईयर के करीब 275 विद्यार्थियों को सम्भालते हैं। विश्व विद्यालय की राजनीति, विभागीय उठापटक और असंतुलन, कला संकाय का गिरता स्तर तथा एम.ए. करने के बाद भी विद्यार्थियों का अनिश्चित भविष्य अन्य विभागों सहित इतिहास विभाग में भी मायूसियत की काली चादर ताने रहता है।

प्रोफेसर सिंह के कक्ष से सटे पूरब में दरभंगा हाउस को बीच से विभक्त करती एक गली है जो गंगा घाट को जाती है। गली के दूसरी ओर माँ काली का मंदिर है जहाँ मंदिर के घंटियों की ध्वनि, पूजा तथा नारियल फोड़ने की आवाज कक्ष में आते रहती है। आहत मन में व्यक्ति का चित्त स्वतः ईश्वरमुखापेक्षी हो जाता है। वही मनोदशा अभी प्रोफेसर सिंह की हो रही थी। वो अपने कक्ष से निकल दरभंगा हाउस के पोर्टिको होते हुए मंदिर में गया और माँ के आगे नतमस्तक हो बैठ आधे घंटे तक मन के आवेग

को शांत तथा सर्वोच्च न्यायालय की याचिका के खारिज होने की याचना

करता रहा। रह-रह कर दुःख और वेदना में उसकी आँखें भर-भर आती थी। लेकिन माँ से अभ्यर्थना करते-करते जब उसका मन कुछ स्थिर और मन में यह विश्वास जगने लगा कि न्यायालय में सिंध अवश्य जीतेगा तभी वो मंदिर से बाहर आया और गंगा तट पर जाकर गंगा जी की तेज धारा में हाथ-मुँह धोया।

गंगा घाट से वो सीधे अपने विभागीय कक्ष में आया। वहाँ उसने अपने सहयोगी डॉ. अवध किशोरी प्रसाद एवं डॉ. ओम आनंद को बैठे देखा। प्रोफेसर सिंह की गंभीर मुखाकृति को देखकर प्रोफेसर अवध ने पूछा, “सर, आज आप कुछ उदास नजर आ रहे हैं। हमने मंदिर और गंगा घाट पर आपको बहुत कम ही आते-जाते देखा है। कोई विशेष बात है सर! हमलोगों को भी बताइए।” प्रोफेसर सिंह ने सिंध से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय की याचिका के बारे में बताया एवं सिंध से संबंधित अपनी भावना एवं लाखों सिंधियों के आहत मन का उल्लेख किया। प्रोफेसर अवध ने प्रोफेसर सिंह को सर्वोच्च न्यायालय के सकारात्मक निर्णय की आशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि सर आप दिल्ली जरूर जायें एवं यदि उस याचिका को निरस्त करने के संदर्भ में आपकी कोई भूमिका बनती है तो आप अपना योगदान दें। इससे न केवल आपके अशांत मन को शांति मिलेगी बल्कि कुछ और करने की संभावना के द्वार भी खुल सकते हैं। आज के अखबार में सिंध के बारे में मैंने भी पढ़ा था और तब मुझे आपकी याद आई थी। सर, और बाकि अखबारों के न्यूज किस प्रकार आये हैं। क्या इस समाचार के साथ अखबारों की कोई और प्रतिक्रिया भी आई है?

प्रोफेसर सिंह ने कहा, “अवध जी मैंने हिन्दुस्तान और टाइम्स ऑफ इंडिया देखा है। बाकि अन्य अखबारों में क्या छपा है कह नहीं सकता। लेकिन आपकी बात से हमारी जिज्ञासा बढ़ गई है और मैं अभी बचे अखबार देखता हूँ।”

प्रोफेसर सिंह ने तुरंत दरभंगा हाउस में इतिहास विभाग के लाइब्रेरियन रामचरण मेहता को निर्देश दिया कि हिन्दुस्तान और टाइम्स ऑफ इंडिया अखबारों में छपाया गया अन्य अखबारों की एक-एक प्रति लेकर आये।

आज प्रोफेसर सिंह फिफ्थ और सिक्स्थ ईयर के क्लास में सिंध को लेकर ही बोलते रहे। इसका प्रभाव यह पड़ा कि दोनों वर्गों के छात्र-छात्राओं में संजीव भटनागर की सिंध सम्बंधी याचिका में एक खलनायक का चेहरा नजर आने लगा। सिंधियों तथा सिंध को लेकर सद्भावनाओं में उफान आने लगा। विद्यार्थियों में अपने मनोनुकूल मनोवैज्ञानिक बदलाव को देखकर प्रोफेसर सिंह ने बहुत राहत महसूस किया। जब उसने दिल्ली जाने और कोर्ट की कार्यवाही को निकट से देखने की बात की तो विद्यार्थियों ने भी उनकी हौसलाफजाई की। लगभग सभी विद्यार्थियों की यही राय थी कि इस याचिका का राष्ट्रगान में सिंध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। पर प्रोफेसर सिंह विद्यार्थियों की भावनाओं की प्रतिध्वनि सामान्य भारतवासियों की जनभावनाओं में देखने की लालसा को लेकर वैचारिक गोते लगाने लगा।

क्लास से अपने विभागाध्यक्ष के कक्ष में लौटने पर प्रोफेसर सिंह ने देखा की कई अखबार उसके टेबुल पर रखे हैं। प्रोफेसर सिंह क्रमशः सिंध से संबंधित समाचार को पढ़ने लगा। सभी अखबारों में एक जैसी ही बातें थी। लगभग एक जैसी ही खबर थी। प्रोफेसर को लगा कि अभी मामला के ताजा ही होने और संभवतः मामला कोर्ट में होने के कारण शायद अखबार अपनी प्रतिक्रिया देने में बच रहा था।

कल शाम की तुलना में आज जब प्रोफेसर शाम को दरभंगा हाउस से घर आया तो चेहरे पर उदासी की छाया नहीं थी। जानकी ने राहत महसूस की।

लगता था कि जानकी ने प्रोफेसर की माँ को प्रोफेसर की उदासी के बारे में कुछ बताया था। इसीलिए घर में प्रवेश करते और पुत्र को शांत देखकर माँ मुस्कुरा दी। प्रोफेसर की माँ कैन्सर से पीड़ित थी। प्रोफेसर का भाई में अकेले होने के कारण उसका माँ से और माँ का उससे बहुत ही भावुक और संवेदनात्मक लगाव था। जब से कैन्सर डीटेक्ट हुआ था, प्रोफेसर माँ के पास ज्यादा समय व्यतीत करता था और उसके मन को बहलाने के लिए घर-गृहस्थी की बातें तथा धार्मिक पुस्तकों का पाठ भी किया करता था।

प्रोफेसर की माँ पूरी तरह एक ग्रामीण महिला थी। ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठे हुए टेलीविजन पर चल रहे धार्मिक सीरियल को देखते हुए माँ ने अपनी मोकामा-बड़हिया की क्षेत्रीय बोली मगही में पुत्र को दुलार करते हुए बोली, “अखने हम्मर बेटवा के मुंहा ठीक लगहै। अरे बेटा! मन के प्रसन्न रखें। तों अर तो पढ़े-लिखे वाला आदमी हैं। खुश रहम्हीं तब न कुछ सोचम्हिं और करम्हिं। देखीं, डाक्टरो तोरा खुश रहेले कहलकौ हैं। दू गो बाल बच्चा हौ, दुल्हन हखूँ और हम दोनों बूढ़ा-बूढ़ी भी तो तोरे पर हिऔ। तोरा पर बहुत जिम्मेदारी हौ। चाहे सिंध के बात रहौ चाहे हिंद के। तों, ठीक त हमरा ले सब ठीक नय तो कुछ नय।”

माँ की बात पर जानकी सिर हिला-हिला कर मुस्कुरा रही थी।

प्रोफेसर अपनी माँ को दीदी कहता था। माँ को देखते हुए कहा, “तों ठीके कहलीं दीदी। खुशे रहकर कुछ अच्छा कैल जा सकले हैं।.....देखीं ने कल शाम से मना एकदम खिन्न हलया। लेकिन आज जैसे-जैसे मना हल्का होल गेलै वैसे-वैसे चिंता के जगह आशा नजर आबे लगलया।”

प्रोफेसर जानता था कि यदि माँ के पास और बैठा रहा तो उसका लड़की और लड़का, जो अपनी दादी के पास ही बैठा था और पिता को देख रहा था, प्रश्नों की झड़ी लगा देगा। प्रोफेसर को दो ही बच्चे हैं और दोनों डी.पी.एस. पटना के विद्यार्थी हैं।

प्रोफेसर ज्यों ही उठकर चलने लगा त्यों ही उसकी दोनों संतानों में बड़ी लड़की ने कहा, “ये पिता जी, जो अपने देश में नहीं है, उसको लेकर आप इतने चिंतित क्यों हैं?”

अब लड़का बोल उठा, “हाँ पिता जी बोलिये ना। लेकिन दीदी यह भी तो देखो की हम लोग नेशनल एंथम में सिंध तो बोलते ही हैं। पिता जी बताइये ना कि यदि नेशनल एंथम में सिंध नहीं ही बोलेंगे तो क्या हो जायेगा?”

अभी प्रोफेसर बच्चों के साथ कुछ भी बात करने की इच्छा नहीं

हुए प्रोफेसर ने बोलना शुरू किया, “देखो बेटा! अंग्रेजों ने भारत के विभिन्न इलाकों को जीतते हुए एक पूर्ण प्राकृतिक सह भौगोलिक क्षेत्र को एक राजनैतिक नियंत्रण के अन्तर्गत लाया था। सिंध उसका हिस्सा था। जब भारत में स्वाधीनता आन्दोलन प्रारंभ हुआ तो देश के प्रति सम्पूर्ण सम्मान को प्रदर्शित करने वाली रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचना जन-गण-मन को देश भक्ति पैदा करने वाली तथा सम्पूर्ण भारत की छवि को दिखलाने वाली एवं भारतीयों की अनेकता में एकता को दर्शाने वाली इस रचना को राष्ट्रगान के उपयुक्त जानकर इसका गायन होने लगा। इसका पहला गायन 27 दिसम्बर 1911 को इंडियन नेशनल कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में हुआ। इसके बाद तो कांग्रेस के हर अधिवेशन में यह पूर्ण राष्ट्रीय श्रद्धा, समर्पण और आदर्श का प्रतीक हो गया।

चूँकि इसमें सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ भारतवर्ष की भूस्थिति के दर्शन होते थे इसलिए इस गान के प्रति राष्ट्रीय मोह और लगाव बढ़ता गया। फिर भारत का बंटवारा हुआ। देश के जिन-जिन हिस्सों में मुस्लिम समाज के लोग बहुसंख्या में थे, का हिस्सा पाकिस्तान बना। सिंध में मुसलमान बहुसंख्यक थे इसलिए सिंध पाकिस्तान का हिस्सा बन गया।

आजादी बाद भारत का संविधान बना। 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने जन-गण-मन को राष्ट्रगान घोषित किया। ठीक है कि सिंध अब भारत में नहीं था, पर लाखों हिन्दू सिंधी भारत आ चुके थे। फिर सिंध और सिंधु नदी से भारत का ऐतिहासिक और गहरा भावात्मक लगाव रहा है। उसी महत्त्व को देखते हुए राष्ट्रगान में सिंध शब्द भारतीयों के लिए क्षेत्रीय नहीं सांस्कृतिक तथा रागात्मक लगाव और राष्ट्रीय मनोदशा का प्रतीक के तौर पर स्वीकारा गया। तब से लेकर अब तक कभी भी सिंध शब्द पर कोई आपत्ति नहीं हुई थी। बात वहीं खत्म हो गई थी।

अब सिंध शब्द को हटाने तथा किसी और शब्द को जोड़ने की बात जहाँ इस राष्ट्रगान की लयात्मकता और मौलिकता को ध्वस्त करेगी वहीं लाखों-लाख सिंधीजनों के जख्मी दिलों पर नमक छिड़कने का काम करेगी।

तुम दोनों जानते हो, आजादी की वेदी पर आज के भारतीय सिंधी लोगों के

पूर्वजों को बहुत बड़ी कुर्बानी देनी पड़ी है। उनके पास आज भारत में अपनी कोई भू-राजनैतिक पहचान नहीं है। ये पूरी तरह अपनी जड़ों से उखाड़ दिये गये हैं। कम-से-कम राष्ट्रगान में अपने सिंध का उल्लेख सुनकर उन्हें कुछ तो संतोष होता है। उनसे वह मानसिक बंधन भी छीनना कितना बड़ा आघात है। फिर और अन्य नाम या नामों को डालने या निकालने को लेकर एक अलग मारा-मारी होगी। फिर यह एक कविता पर आधारित गान है कोई लघु कथा नहीं है कि कोई शब्द या वाक्य जोड़ दिया गया। लगभग सौ साल से गाये जा रहे गान के लय को भंग करना कितना गलत है। हम समझते हैं कि अब तुम लोग राष्ट्रगान में सिंध के महत्त्व को समझ गए होगे।”

प्रोफेसर के दोनों बच्चे संतुष्ट हो गये। प्रोफेसर अपने विश्राम कक्ष गया। कपड़ा बदला और जानकी से पानी माँगा।

बाथ रूम में फ्रेश होने के बाद शाम की चाय दोनों पति-पत्नी ने अपने फ्लैट की बालकनी में पी। चौबीस घन्टे के अन्तराल में निराशा, क्रोध और आशा के झोंकों की पूरी एक लहर गुजर चुकी थी।

प्रोफेसर दिल्ली जाने के पूर्व पटना के सिंधी जनों से मिलना-जुलना, उनकी प्रतिक्रिया जानना एवं इस समाज के लोगों से गहरा आत्मिक सम्बन्ध स्थापित करने का निर्णय कर चुका था। अब वह सिंधी सभ्यता, संस्कृति जीवन दर्शन, साहित्य, इतिहास, पूजा-पद्धति सहित उनकी वेदना और स्पंदन तक अपनी सीधी पहुँच बनाने का निर्णय लिया।

सिंध के ऊपर प्रोफेसर का पी.एच.डी. 712 ई. से लेकर 1947 के भारत विभाजन और पूरा सिंध पाकिस्तान के हिस्से में चले जाने तक सीमित था। यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज जैसा था। उसमें 1947 के बाद के सिंधीजनों का संघर्ष, उनकी उपलब्धि तथा स्थिति का कोई वर्णन नहीं था। पूरा पी.एच.डी. एक एकेडमिक प्रयास था। उसमें सिंध-सिंधी विध्वंस की संवेदना तो थी पर आज का परिदृश्य गायब था। प्रोफेसर इस कमी को पूरा करने की योजना बनाने लगा। पर शुरूआत कहाँ से करें; कुछ पता नहीं चल पा रहा था। प्रोफेसर का एक भी सिंधी का नाम-पता नहीं जानना या उससे

विद्यार्थी जीवन से ही प्रोफेसर पटना की एक विख्यात मिठाई की दुकान कौजी की मिठाईयों का आनन्द लेता रहा था। वह जानता था कि यह किसी सिंधी सज्जन की दुकान है। सपत्नीक चाय पीने के बाद उसने सीधे कौजी दुकान पर पहुँच, काउन्टर पर के सेल्समैन से पूछा कि मालिक कहाँ हैं? सेल्समैन ने कहा कि वो सात बजे आयेंगे। प्रोफेसर ने सेल्समैन से ही यह जानकारी भी पक्की कर ली कि इसके मालिक सिंधी हैं। चूँकि प्रोफेसर दूकान का नियमित ग्राहक था इसलिए सेल्समैन ने बताया तो; पर कुछ अजीब निगाहों से देख भी रहा था। सेल्समैन से ही यह जानकारी भी मिली कि मालिक का नाम पी.सी. दास है।

शाम के सात बजे जब प्रोफेसर पुनः दुकान पर पहुँचा तो दुकान मालिक आ गये थे। प्रोफेसर ने अपना परिचय दिया। प्रोफेसर ने बताया कि वो उनसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं। श्री पी.सी. दास उन्हें दुकान के पीछे के एक छोटे से कमरे में ले गये। जब प्रोफेसर दुकान के पीछे के कमरे में जाने लगा तो उसे लगा कि श्री दास उसे कोई ऑफिस नुमा कमरे में बिठायेंगे; पर एक छोटे कमरे में एक साधारण टेबुल कुर्सी और कमरे में जहाँ-तहाँ मिठाईयों की भरी ट्रे देखकर प्रोफेसर इस दुकान की ख्याति और कमाई के राज को समझ गया।

प्रोफेसर ने उनसे सिंध संबंधी लोकहित याचिका की चर्चा की। पी.सी. दास ने विषाद भरे स्वर से बताया कि पटना का पूरा सिंधी समाज दुःखी है। फिर बातचीत में इतनी अंतरंगता आ गई कि घंटों विभिन्न सिंधी विषयों पर उनसे बातें होती रहीं। श्री दास ने प्रोफेसर को अपने घर आमंत्रित किया।

प्रोफेसर दूसरे दिन पटना के बुद्धा कॉलोनी स्थित उसके मकान पर गया। वहीं उसने अपने जीवन का सबसे पहला सिंधी मंदिर देखा। सिंधियों के इष्टदेव 'झूलेलाल' सम्मान के साथ एक मछली पर विराजमान थे। जिस मछली की मूर्ति पर झूलेलाल बैठे थे उस मछली के बारे में जानकारी मिली कि यह पाला मछली है। मंदिर छोटा था पर वहाँ का माहौल गरिमामय था। मंदिर की साज-सज्जा काफी सुरुचिपूर्ण नजर आ रही थी। प्रोफेसर ने झूलेलाल के सम्मुख श्रद्धा से सर झुकाया और मन-ही-मन कुछ याचना की।

प्रोफेसर ने पूरा जनवरी महीना पटना के लगभग बीस सिंधीजनों से मिलने-जुलने, बातचीत करने, उनकी वेदना सुनने, समस्याओं को समझने तथा सिंध संबंधी जानकारीयों को इक्कठा करने में लगाया। जब पटना के ही नहीं बिहार के सबसे बुजुर्ग सिंधी सज्जन श्री पोलन दास भवनानी से मुलाकात हुई तो उन्होंने सिंधी के विख्यात राष्ट्रवादी विद्वान, कन्याकुमारी स्थित विवेकानन्द रॉक मेमोरियल के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर के.एन. वासवानी की 'हम सिंधी' कविता बड़ी मार्मिकता के साथ सुनाई -

हम सिंधी

बिना किसी अपने दोष के
अपने ही घर सिंध से निष्कासित
पूरे भारत में बिखरे हैं।

हम सिंधी

जिनका दिल बाग-बाग हो जाता है
जब राष्ट्रगीत में सुनते हैं
“पंजाब सिंध गुजरात मराठा”
क्योंकि यह सुन हम विश्वस्त होते हैं
कि हमें, जिन्हें विधाता ने
पूरे राष्ट्र में सर्वाधिक त्याग करने को चुना था
देश नहीं भूला है।

हम सिंधी

“हम भारतीयों” का अभिन्न अंग
भारत राष्ट्र का भाग हैं
हम फूल की पंखुड़ियाँ हैं।
भारतीय संस्कृति से पूरा तालमेल रखे
यही भारत का संगीत है, गीत है

हम इसका अभिन्न अंग हैं.....

इस कविता को गाते-गाते उनकी आवाज थरथरा गई। गला रूँध गया और आँखों में आँसूओं का सैलाब उमड़ आया। अपने दोनों हाथों में उन्होंने अपना चेहरा ढँक लिया। प्रोफेसर संज्ञा शून्य हो गया। वह उनके पैरों को सहलाने लगा। प्रोफेसर आदर और भावना के उद्रेक में सोफे से उतर कर नीचे बैठ उनके दोनों पावों को दबाने लगा। सम्भवतः किसी गैर सिंधी की सिंध संबंधी भावना को देख भवनानी जी बिलख-बिलख कर रोने लगे। प्रोफेसर ने अपना सर भवनानी जी की गोद में रख दिया। कुछ देर बाद शांत होने पर भवनानी जी ने उसके सर को सहलाना शुरू किया।

भवनानी जी के घर के लोग वहाँ जमा हो गए थे। सभी एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे। पानी पीकर जब भवनानी साहब और प्रोफेसर ने सारी बातें बताईं तो उदासी और खुशी का मिश्रित माहौल बन गया।

सबों को यही आशा और विश्वास था कि भारत सरकार और न्यायपालिका कभी भी राष्ट्रगान में सिंध शब्द के साथ किसी भी तरह का छेड़-छाड़ नहीं होने देगी। राष्ट्रगान अक्षुण्ण रहेगा।

पटना में जिन अन्य लोगों से सिंधी मानस और सिंधी वस्तुस्थिति की जानकारी मिली वे डॉ. आलोक कुमार भवनानी, श्री पिया लाला भवनानी, श्री मोहन मद्यान, श्री सुरेशचन्द्र तलरेजा, श्री मनोज कुमार तोलानी, श्री मरदा राम राजवानी, श्री नकुलदास गुरमानी, श्री सुरेश टहलानी, श्री कमल कुमार करमचन्दानी, श्री मोहन कुमार बदलानी, श्री रमेश थदानी, श्री मनोज लखमानी आदि थे।

श्री पी.सी. दास ने प्रोफेसर को पढ़ने हेतु कई पत्र-पत्रिकायें दीं। श्री सुरेशचन्द्र तलरेजा ने जुलाई 1985 के पाञ्चजन्य पत्रिका के सिंधु संस्कृति के अतिरिक्तांक की अमूल्य प्रति उपलब्ध कराई। इस अंक के अतिरिक्त उन्होंने अन्य कई पत्रिकाओं और अखबारों की प्रतियाँ भी दीं। इन सामग्रियों ने प्रोफेसर के सामने सिंध और सिंधी विषयक जानकारियों का पिटारा खोल दिया।



राष्ट्रगान में सिंध महक-मुस्कान

पटना में सिंधी समाज के बारे में जानकारीयों का जैसे-जैसे दायरा बढ़ता गया प्रोफेसर को सिंधी समाज के देश में बड़े-बड़े सेटलमेंट की जानकारी मिलती गई। इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी की पत्रिका सिंधोलॉजी के माध्यम से आदीपुर, जो गुजरात के कच्छ में है, के बारे में जानकारी मिली। मुम्बई के नजदीक कल्याण के पास उल्हासनगर में सिंधियों के सबसे बड़े सेटलमेंट की जानकारी मिली। मुम्बई में भी सिंधियों की बहुत बड़ी संख्या है। पता चला कि गुजरात के कई शहरों, राजस्थान के कई शहरों एवं मध्यप्रदेश के कई शहरों में भी सिंधियों की अच्छी संख्या है। आजादी पूर्व से ही राजस्थान के बाड़मेर क्षेत्र का सिंध से निकट का संबंध था।

सिंधियों के कई संगठनों की भी जानकारी मिली। इनमें से सिंधी कॉन्सिल ऑफ इंडिया (SCI) का दायरा सबसे विस्तृत है। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत की संस्था नेशनल कॉन्सिल फॉर प्रोमोशन ऑफ सिंधी लैंग्वेज (NCPSL) एवं एलायन्स ऑफ सिंधी एसोशिएसन्स ऑफ अमेरिकाज़, इंक की गतिविधियों की जानकारी मिली। पटना के सिंधी बन्धुओं से जानकारी मिली कि बिहार-झारखण्ड के पाकुड़, दरभंगा, मुजफ्फरपुर आदि शहरों में भी सिंधी समाज की अच्छी उपस्थिति है।

पटना में लोगों से मिलते-मिलते प्रोफेसर के मन में देश के विभिन्न स्थानों में रहने वाले सिंधी लोगों से मिलने की इच्छा इतनी प्रबल हो गई कि उसने दिल्ली जाने के पूर्व गाँधीधाम-आदीपुर-कांडंला क्षेत्र, नारायण सरोवर-कोटेश्वर मंदिर-कोरी क्रीक क्षेत्र, अहमदाबाद, जयपुर, कोटा, बाड़मेर, मुम्बई-उल्हासनगर, इन्दौर, कलकत्ता तथा लखनऊ का भ्रमण कर डाला। वहाँ के कई संस्थानों, व्यक्तियों, सिंध एवं सिंधी संबंधित साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं से प्रोफेसर परिचित हुआ। इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी से उसे के.आर. मलकाणी की पुस्तक, 'द सिंध स्टोरी' उपहार

स्वरूप मिली। वहीं से साहिब बिजानी द्वारा रचित 'समथिंग एबाउट सिंध एण्ड सिंधिज' भी मिली। इतनी जगहों की यात्रा, ढेर सारे सिंधी लोगों से मिलने एवं मलकाणी साहब की सारगर्भित पुस्तक के अध्ययन के बाद अब प्रोफेसर को ऐसा लगने लगा कि आजादी के बाद तथा वर्तमान में सिंधी लोगों के प्रति उसका अज्ञान समाप्त हो गया है। प्रोफेसर को ऐसा लगा कि दिल्ली सरकार के सिंधी अकादमी द्वारा प्रकाशित मलकाणी साहब की इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करवा कर उसे प्रचारित कर सर्वसुलभ किया जाय तो सामान्य जनों के बीच सिंध-सिंधी अज्ञान को दूर किया जा सकता है।

अब प्रोफेसर सिंधियों की भावना, उनकी वेदना और उनकी चाह को अच्छी प्रकार समझने लगा था। सिंधी जनों की विशिष्टता और उनकी संघर्ष से प्राप्त सम्पन्नता दाँतों तले अंगुली दबाने का मनोभाव पैदा करती थी। अब प्रोफेसर सिंधी अज्ञान के अपराध बोध एवं हीन ग्रंथि से मुक्त हो चुका था। वह अधिकार के साथ सिंध संबंधी किसी भी सत्प्रयास, अभियान एवं वार्तालाप के लिए अपने को सक्षम और अनुकूल मानने लगा।

परिभ्रमण में ही पूरा फरवरी और मार्च महीना बीता। वैसे प्रोफेसर ने सुप्रीम कोर्ट के अपने वकील मित्र नलनीरंजन सिंह से पाँच जनवरी को ही सम्पर्क कर सिंध संबंधी P.I.L. पर निगाह रखने की बात कह दी थी। नलनीरंजन जी ने उसे कहा था कि कोर्ट में P.I.L. पर कार्यवाही की शुरुआत होते ही वह उन्हें दिल्ली बुला लेगा। इसीलिए प्रोफेसर ने इस समय को सम्पर्क एवं ज्ञान संग्रह हेतु परिभ्रमण में व्यतीत किया।

मार्च के अंतिम सप्ताह में नलनीरंजन सिंह का फोन आया कि अब आप दिल्ली आइये और खुद देखिये की केस को लेकर क्या-क्या गतिविधियाँ हो रही हैं।

प्रोफेसर अप्रैल के प्रथम सप्ताह में दिल्ली पहुँचा। प्रोफेसर ने निर्णय कर लिया था कि न्यायालय का फैसला आने के बाद ही वह पटना लौटेगा। दिल्ली पहुँच उसने अपने वकील मित्र के आग्रह के बावजूद सुप्रीम कोर्ट के नजदीक यमुना पार लक्ष्मी नगर के शकरपुर मुहल्ले में एक सिंधी परिवार का पेइंग गेस्ट बन गया। मकान मालिक श्री विजय केवलरामाणी

भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी थे और उनकी धर्म पत्नी दुर्गा केवलरामाणी एक कुशल गृहणी और सामाजिक कार्यकर्ता थी। दुर्गा जी दिल्ली की कई सिंधी पंचायतों और संस्थाओं से जुड़ी थी। सिंधी भाषा और साहित्य तथा सिंधी संस्कृति के प्रति उनकी सक्रियता उन्हें दिल्ली में एक सम्मानजनक स्थान प्रदान कराई थी। इस दम्पति को दो बच्चे थे। बड़ी लड़की रूपा केवलरामाणी होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रही थी और लड़का विवेक केवलरामाणी खड़गवासला के नेशनल डिफेंस एकेडमी का कोर्स पूरा कर रहा था।

प्रोफेसर ने जब सुप्रीम कोर्ट जाना शुरू किया तो उसे पता चला कि संजीव भटनागर न केवल एक पूर्व राष्ट्रीय स्केट्स चैंपियन ही हैं बल्कि वह एक अधिवक्ता भी हैं। जहाँ भटनागर की याचिका के विरोध में भारत सरकार के कई विभाग हैं वहीं सिंधीजनों की भी सात संस्थाएँ विरोध में खड़ी हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत स्तर पर भी श्री आनन्द सागर वशिष्ठ नामक एक व्यक्ति भी संजीव भटनागर की याचिका के विरोध में खड़े हैं।

इस केस में रूचि लेने के क्रम में प्रोफेसर का सैकड़ों सिंधी लोगों से सम्पर्क हो रहा था और वह सम्पर्क घनिष्ठता और विश्वास में बदल रहा था।

एक दिन जब कुछ सिंधी सज्जनों के साथ प्रोफेसर कश्मीरी गेट के नजदीक एक सिंधी संस्थान के कार्यालय में बैठा गपशप कर रहा था तो बातचीत के बीच ही उनमें से एक सुरेश थरानी ने भारत के सभी गैर सिंधियों द्वारा सिंधी पीड़ा के प्रति उनके उपेक्षा भाव को घटनाक्रम से गिनाना शुरू कर दिया। क्रोध में उबलते हुए अंत में उन्होंने संजीव भटनागर के प्रति अभद्र शब्दों का प्रयोग करते हुए यहाँ तक कह दिया कि यह एहसान फरामोश तो सिंध शब्द को हटाकर राष्ट्रगान में उस कश्मीर शब्द को डालने की बात कह रहा है जहाँ भारत का खून और पैसा बहाया जा रहा है। जहाँ से सारे कश्मीरी हिन्दुओं को भगा दिया गया है और पूर्ण मुस्लिम बहुल वाले कश्मीर घाटी को भारत से अलग करने के लिए नित नये हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। देश की गाढ़ी कमाई बर्बाद हो रही है और भारत घृणा दिन-दूनी रात-चौगनी बढ़ती ही जा रही है। यदि कभी कश्मीर भारत से अलग हो

जायेगा तो फिर संजीव भटनागर किस नये शब्द को जोड़ने की याचिका करेंगे? ऐसे व्यक्ति पर तो देशद्रोह का मुकदमा चलना चाहिए। इसी तरह की अन्य बातों को तैश में कहने की रफ्तार में जब कमी नजर नहीं आती दिखी तो कई लोगों ने उन्हें शांत कराया और उनसे प्रोफेसर का परिचय कराया।

एक गैर सिंधी की सिंधी पीढ़ा को जान सुरेश थरानी कुछ लज्जित हुए। शांत होते ही उनसे श्री कन्हैया किशन लालवाणी ने कहा, “जानते हैं थरानी साहब, पूरे देश में इस याचिका को कहीं से कोई वैचारिक, मानसिक और नैतिक समर्थन नहीं मिल रहा है। यदि आपको ऐसा लगता है कि केवल सिंधी लोगों में ही असंतोष और क्रोध है तो आप गलतफहमी के शिकार हैं। अखबारों के सम्पादकीय और पाठकों की प्रतिक्रियायें इस याचिका की प्रतिकूल टिप्पणियों से भरी पड़ी हैं। मालूम है आपको पूरी केन्द्रीय सरकार इस याचिका की विरोधी है। यही नहीं पूरा भारतीय राजनैतिक वर्ग इसका विरोधी है। आप यह जान लीजिए कि संजीव भटनागर के विरुद्ध 12 प्रतिवादियों में चार भारत सरकार के विभिन्न विभाग जैसे- भारत संघ, गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और मानव संसाधन मंत्रालय ही हैं।”

बारह प्रतिवादियों में से चार के उल्लेख के बाद लालवाणी जी के चुप हो जाने पर वहीं उपस्थित नवीन अनुवाणी ने शेष आठ अन्य प्रतिवादियों के बारे में लालवाणी जी से पूछा।

लालवाणी जी ने अपने मनी बैग में से एक कागज निकाला और पढ़ना शुरू किया -

1. All India Sindhu culture society, Jaipur.
Through its founder and chief patron Justice (Retd) I.S. Israni & its president Prakash Tekwani, Jaipur.
2. Rastriya Sindhu Parisad
Through its president Shri Bherumal Sewakramani,
Advocate, Jaipur.
3. International Sindhi forum
Mataji Ram Pyaris Mandir, Khar, Mumbai

4. Sindhi Jagriti Sabha
Through its President Manoharlal Baiwani
Ashok Vihar Phase-1, Delhi.
5. Delhi Pradesh Sindhi Samaj
Through its president Mahesh Ragani, Sabzi Mandi
Main Bazar, Delhi.
6. Sindhi Council of India
Through its president
Sri Suresh A. Keswani, Ex M.P.
Mathura Road, New Delhi.
7. Bhartiya Sindhu Sabha
Through working President
Dr. Ghanshyam Das
Nehru Nagar, New Delhi.
8. व्यक्तिगत स्तर पर न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, नई दिल्ली के श्री आनन्द सागर वशिष्ठ।

लालवाणी जी चूँकि प्रोफेसर से बहुत घनिष्ठ हो गये थे, इसीलिए हल्के आक्रोश में सुरेश थरानी को देखते हुए इन बातों को बता वो प्रोफेसर को देखते हुए कुछ रीलेक्स होते नजर आये।

इस केस से संबंधित जानकारीयों को पाने के संदर्भ में पहले दिन ही प्रोफेसर को यह जानकारी मिली कि संजीव भटनागर 6 सितम्बर 2004 को ही भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 को आधार बनाकर राष्ट्रगान से सिंधु शब्द हटाने की लोकहित याचिका दायर की थी। 9 सितम्बर को कोर्ट ने उसकी बात को नहीं स्वीकारा। लेकिन पेटिशनर के इस आग्रह पर कि भारत सरकार राष्ट्रगान में परिवर्तन का अधिकार रखती है, इसलिए भारत सरकार से इस पर स्थिति स्पष्ट करने का कोर्ट निर्देश जारी करे। वैसे भटनागर का पहला आग्रह निरस्त हो चुका था पर उसके भारत सरकार के ध्यान को

आकृष्ट करने वाला आग्रह मान लिया गया। भटनागर ने पुनः 3 दिसम्बर

2004 को याचिका दायर कर दी। कोर्ट ने इसी याचिका के आधार पर केन्द्रीय सरकार की प्रतिक्रिया जानने का निर्देश जारी किया। एक वकील के नाते कोर्ट में संजीव भटनागर ने खुद अपनी बात रखी।

देश के विभिन्न हिस्सों में सिंधीजनों से मुलाकात करते तथा कोर्ट आते-जाते और सैकड़ों सिंधी जनों से बातचीत करते हुए प्रोफेसर यह जान चुका था कि यह समाज कहाँ से कहाँ पहुँच चुका है। जो समाज देश विभाजन के बाद शरणार्थी के रूप में भारत आया था, वह पुरुषार्थी होते हुए अब दानार्थी-परमार्थी की भूमिका में आ चुका है। सम्पन्नता इसकी चेरी हो गई है। कम लाभांश में बड़ा व्यवसाय या उत्पादन इसका मंत्र हो चुका है। आज जीवन के हर क्षेत्र में सिंधी समाज के लोग राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सफल हो गये हैं और तेजी से छाते जा रहे हैं। जीवन में आये थपेड़ों ने इसे दूब से लेकर दरख्त की मजबूती दे दी है। इस समाज ने अपने अस्तित्व को बचाने के लिए अद्भुत लचीलेपन की कला विकसित कर ली है।

कोर्ट में बहस के दौरान संजीव भटनागर ने याचिका की ही अपनी बात को रखा जबकि भारत सरकार की ओर से एटॉर्नी जनरल श्री मिलन बनर्जी एवं सिंधी संगठनों की ओर से कई वकीलों का नेतृत्व करते हुए सिंधी मूल के विख्यात कानून ज्ञाता श्री राम जेठमलानी ने संविधान, सिंधी समाज एवं देश की जनता की भावनाओं तथा तथ्यों को विस्तार में रखा।

श्री मिलन बनर्जी ने कोर्ट में कहा कि प्रजातांत्रिक ढंग से चुनी गई केन्द्रीय सरकार इतनी सुंदर एवं सधी रचना, जो हमारा राष्ट्रगान है, में किसी भी प्रकार के बदलाव के खिलाफ है। इसका हरेक शब्द सुनियोजित होकर एक आकार ले चुका है। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन टैगोर की महानता के साथ खिलबाड़ होगा। कविता में भाव की प्रधानता होती है। आलेख की तुलना में कविता ज्यादा सूक्ष्म, संप्रेषणशील और संकेतात्मक होती है। कविता की संरचना में संदेश और आवेग छिपा रहता है। यही संरचना कवि को रचनाशील बनाती है और कहने की कला को निखारती है। शब्दों का चयन

भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। शब्दों को सही स्थान देना ही कवि का कवित्व है। कोई कविता जब सम्मानजनक प्रचलन में आकर राष्ट्रगान बनती है, तो वह प्रतिकात्मक रूप से भावनाओं, विचारों और धारणाओं में हमारे मानस के साथ एकाकार हो आत्मसात हो जाती है। फिर उस कविता में कवि के प्रयुक्त शब्द या शब्द समूह शब्दकोष की परिभाषा की परिधि से बहुत ही बाहर हो जाते हैं।

विद्वान् एटोर्नी जनरल ने कोर्ट के ध्यान को आकर्षित करते हुए कहा कि मई 1979 में विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक India's National Anthem जो प्रबोधचन्द्र सेन द्वारा लिखी गई है को उद्धृत करते हुए कहा कि मई 1946 में टैगोर जी के जन्म दिन पर महात्मा गाँधी ने जन-गण-मन को केवल गान नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक गान कहा था।

श्री मिलन बनर्जी ने कहा कि इस कविता के गान की यह महिमा थी कि 1919 में जब टैगोर ने दक्षिण भारत के एक थियोसोफिकल कॉलेज में एक बार इस गान को गाया तो कॉलेज प्राचार्य सहित विद्यार्थियों ने इसे 'भारत का प्रातःगान' के तौर पर स्वीकारा।

जब श्री राम जेठमलानी ने प्रतिवादियों की ओर से बोलना शुरू किया तो प्रोफेसर ने मुख्य बातों को नोट करने के लिए अपना नोटबुक निकाल लिया। उन्होंने पेटिशनर के पेटिशन की तीव्र निंदा करते हुए प्रश्न किया कि राष्ट्रगान में सिंध शब्द का प्रयोग भारतीयों की राष्ट्रभक्ति की भावना को कहाँ और कैसे आहत करता है? फिर किस प्रकार और कैसे 100 करोड़ भारतीय जनता के लिए राष्ट्रगान को शुद्ध एवं संशोधित करके खुश किया जाय? विद्वान अधिवक्ता ने अगला प्रश्न किया कि पेटिशनर किसके लिए लड़ रहे हैं? क्या भारत की जनता के लिए या पड़ोसी देश के लिए? पेटिशनर ने कहाँ से यह धारणा बना ली है कि वह भारतीय जनता की भावना को अभिव्यक्ति देने के लिए इस तरह की बात कोर्ट में कह रहे हैं। श्री राम जेठमलानी ने बहुत दुःख और पीड़ा के साथ कहा कि जब से यह पेटिशन फाइल हुआ है तब से ही भारतीय अखबारों के सम्पादकीय और पाठकों के सम्पादक के नाम पत्रों के माध्यम से इस पेटिशन के प्रतिरोध में लिखा जा रहा है। इसमें न केवल पूरे भारत के लोगों की पीड़ा झलकती

है बल्कि सिंधी समाज के आहत मन की तीव्र प्रतिध्वनि भी सुनाई पड़ती है। इसीलिए इस पेटिशन के विरोध में कई संस्थाएँ और व्यक्ति कोर्ट में भी खड़े हो गये हैं।

पेटिशनर के पक्ष में न तो कहीं से कोई एक शब्द लिखा या बोला गया है न कोर्ट में ही उनके समर्थन में ही कोई उनके साथ खड़ा है। कोर्ट में उपस्थित लोगों ने जेठमलानी के लाजबाव तर्कों की खुले शब्दों में तारीफ की।

दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद निर्णय की तिथि 13 मई 2005 तय हुई। नियमित समय पर प्रोफेसर भी मुख्य न्यायाधीश श्री आर. सी. लाहोती के कोर्ट में उपस्थित था। फैसला निम्न प्रकार था —

‘We find merit in the submissions made by Attorney General for India and Mr. Ram Jethmalani, the learned senior counsel appearing for the intervenors and agree with the same.

We are satisfied that the petitioner is not entitled to the relief prayed for the petition is wholly devoid of any merit. The petition is not in public interest. It is a petition which should never have been filed. It is more of the publicity interest litigation where in the petitioner seems to have achieved his purpose. To discourage the filing of such like petitions which result only in wasting the valuable time of this court, we direct the petition to be dismissed with costs quantified at Rs. 10,000/-.’

पूरे कोर्ट रूम में हर्ष की लहर दौड़ गई। प्रोफेसर की खुशी, संतोष और राहत का तो कुछ कहना ही नहीं था। वहाँ उपस्थित सभी लोगों से मिल वह बधाईयाँ ले और दे रहा था। चूँकि दिल्ली के सिंधी समाज में प्रोफेसर चर्चित हो चुका था, इसलिए उस समय सारे सिंधीजनों के मन में प्रोफेसर के लिए सम्मान एवं स्नेह का भाव छलक रहा था। प्रोफेसर को अकस्मात् स्मरण आया और उसने अपने कुर्ते की जेब से अबीर की डिब्बी निकाली और वहाँ उपस्थित सभी अपने लोगों को विजय रूपी जीत के प्रतीक स्वरूप टीका लगाया। खुशी के अतिरेक में जब कोर्ट रूम से बाहर निकल उसने अन्य लोगों को भी अबीर लगाने लगा तो वहाँ उपस्थित कन्हैया किशन

लालवाणी ने उन्हें संयत किया और स्मरण दिलाया कि यह सुप्रीम कोर्ट है और हमें यहाँ अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। प्रोफेसर तुरंत सचेत हो गया। कुछ देर बाद सभी कोर्ट परिसर में महात्मा गाँधी की मूर्ति के पास इक्कठे हो सामूहिक फोटो खिंचाया और प्रोफेसर के आग्रह पर सबों ने शपथ ली की सिंध एवं सिंधी काउज के लिए भविष्य में भी सक्रिय रहेंगे।

उसी स्थल पर प्रोफेसर ने सभी व्यक्तियों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि हम लोग एवं अन्य व्यक्ति, जिन्हें इस निर्णय पर हर्ष है, आज शाम 8.30 बजे निकट के ही फिक्की के ऑडीटोरियम हॉल में इक्कठे हों एवं पूरे घटनाक्रम की समीक्षा कर सर्वोच्च न्यायपालिका एवं भारत सरकार के प्रति आभार प्रदर्शन के तौर तरीकों पर विचार विमर्श करें। सबों ने प्रसन्नतापूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार किया।

प्रोफेसर को अकस्मात् अपनी पत्नी, बच्चे और माँ की याद आई और लगा कि अपने परिवार को भी इस शुभ समाचार की जानकारी देनी चाहिए। उसने मोबाइल निकाला और पत्नी का नम्बर दबाया। उधर से जानकी ने प्रसन्तापूर्वक हंसते हुए कहा कि मैं टेलीविजन के पास बैठी हूँ और जान चुकी हूँ कि राष्ट्रगान में सिंध बना रहेगा। उसने कहा कि मैं कहती थी न कि आप झूठ-मूठ में ज्यादा सोचते हैं। चलिए, अब प्रसन्न रहिये और जल्दी पटना आइये। बाप रे! कितने दिनों से आप वहाँ हैं। रोज कहते हैं कि निर्णय सुनकर आयेंगे। तो फिर अब आप आइये। भगवान ने आपकी और आपके जैसे लोगों की सुन ली। दोनों बच्चे भी रोज आपको खोजते हैं। प्रोफेसर जब भी कुछ बोलने का प्रयास करता तो उधर से एक ही बात आती कि अब आप जल्दी आइये! बस! प्रोफेसर ने भी जल्दी से आने का आश्वासन दे अपनी बात समाप्त की।

प्रोफेसर जब लक्ष्मी नगर के मकान पर पहुँचा तो गेट पर ही दुर्गा केवलरामाणी ने उसका स्वागत किया।

टेलीविजन के माध्यम से समाचार आ चुका था और पूरे देश-विदेश के सिंधी परिवारों में खुशियाँ मनाई जा रही थी। दुर्गा बहन उसे खींचते हुए

अपने फ्लैट में ले आई। वहाँ विजय केवलरामाणी, लड़की रूपा, उनका भाँजा सुरेश थरानी, विजय जी की साली मनु वकानी सहित करीब दर्जनों लोग मिठाई का आनन्द ले रहे थे। टेलीविजन खुला था और खबरें विस्तार से दी जा रही थी। प्रोफेसर को उन लोगों ने घेर लिया और एक-एक कर मुँह में मिठाइयाँ देने लगे। प्रोफेसर ने सबों को बधाईयाँ दीं और शाम को आठ बजे फिक्की ऑडीटोरियम चलने की बात बताई। सबों ने एक साथ चलने का निर्णय लिया। अभी 7 बजे थे। प्रोफेसर ने आठ बजे तक घर से निकलने की बात कह अपने फ्लैट आ गया।

फ्लैट का दरवाजा खोल हाथ धोकर प्रोफेसर ने भारत माता की दीवार पर टंगी प्राकृतिक मानचित्र के सम्मुख खड़े होकर दो बार राष्ट्रगान गाया। फिर नीचे कम्बल बिछा पालथी मार दरभंगा हाउस के नीचे बहती गंगा जी और माँ काली को स्मरण करता हुआ भावनाओं और विचारों में गोते भी लगाता जाता था तथा माँ काली के प्रति श्रद्धा सुमन भी अर्पित कर रहा था।

अचानक वह उठा और इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी से प्राप्त सिंध के मानचित्र वाला छोटा सा कार्ड अपने आँख के सामने कर उसे बहुत ध्यान से देखने लगा। 'असांजी प्यारी सिंध' लिखा इस कार्ड पर पाकिस्तानी सिंध का नक्शा था। सिंध की तस्वीर को हाथ में लेकर देखते हुए उसके मन में यह भाव उठ रहे थे कि क्या भारत में या विश्व के किसी भी हिस्से में रहने वाले सिंधीजन कभी इस सिंध में पुनः आ सकते हैं? क्या सिंध में कभी उनका सम्मानजनक स्वागत या जीवन व्यतीत करने का माहौल बन सकेगा? क्या सिंध की ही ऐसी स्थिति नहीं है कि सिंधी मूल के लोगों एवं अन्य लोगों मुहाजिर-पठान-पंजाबी-बलुची के बीच फंसा यह क्षेत्र खुद अशांति और कलह के बीच कैसे कभी भी भारतीय सिंधी को स्वीकार करेगा? क्या कभी भारत-पाकिस्तान एक होंगे तब भारतीय सिंधियों को अपना प्रदेश जाने-देखने-बसने की इच्छा पूरी होगी? लेकिन-लेकिन क्या कभी ऐसी स्थिति बनेगी? और यदि नहीं बनी तो 'असांजी प्यारी सिंध' के इस भाव का भविष्य में कोई फलाफल होगा? क्या यह मृग मारीचिका ही बनी नहीं रहेगी?

बहुत देर तक इन्हीं विचारों-भावों में डूबता-उतराता प्रोफेसर पुनः भारत माता की तस्वीर के सम्मुख खड़ा हो पूर्ण श्रद्धा और सम्मान के साथ कई बार राष्ट्रगान गाया। हर बार राष्ट्रगान गाते हुए सिंध शब्द के उच्चारण के समय स्वर्गिक सुख का अनुभव करता और जोर-जोर से इस शब्द को बोलता हुआ अन्तर्मन में इस की प्रतिध्वनि को अनुभव कर आनंदित होता।

प्रोफेसर आठ बजे गेट पर आ गया। उसने देखा कि विजय केवलरामाणी परिवार सहित गाड़ी में बैठे थे और ड्राइविंग सीट के बगल में उसके लिए स्थान बना बैठने के लिए पुकारा।

नियत स्थान पर सभी 8.30 पर पहुँच गये। हॉल के बाहर गाड़ियों की कतार देखकर ही हॉल के अंदर की उपस्थिति का अनुमान हो गया था। पूरा हॉल सिंधी लोगों से भरा हुआ था। ठीक नौ बजे जब हॉल में तिल रखने की भी जगह नहीं बची तब बैठक की कार्यवाही शुरू हुई।

दिल्ली सिंधी पंचायत के बुजुर्ग श्री जगदीश खट्टर मंच पर आये और उन्होंने वहाँ उपस्थित सिंधी समाज के मूर्धन्य लोगों को एक-एक कर मंच पर बुलाना शुरू किया। सभी सातों सिंधी संस्थाओं के प्रतिनिधि भी वहाँ बुलाये गये, जिन्होंने भटनागर के खिलाफ केस लड़ा था। श्री आनंद सागर वशिष्ट को भी बुलाया गया। श्री मिलन बनर्जी एवं श्री राम जेठमलानी भी सादर आमंत्रित किये गये। 20 लोगों के बाद उन्होंने अंत में प्रोफेसर को मंच पर बुलाया और हॉल में उपस्थित सभी लोगों को विस्तार से प्रोफेसर का परिचय दिया। सबों ने तालियों की ध्वनि से प्रोफेसर का स्वागत किया।

इस बैठक को बुलाने का उद्देश्य ही था कि राष्ट्रगान में सिंध शब्द को बरकरार रखने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं की सहायनीय भूमिका रही है उनके प्रति सार्वजनिक आभार प्रदर्शन किया जाय।

बैठक में उपस्थित सभी लोगों की मान्यता थी कि सर्वोच्च न्यायपालिका ने न केवल सिंध शब्द के पक्ष में निर्णय सुनाया है बल्कि भविष्य में किसी

लगाकर राष्ट्रगान को लेकर उथले विचारों-विवादों की हवा भी निकाल दी है।

दिल्ली सिंधी साहित्य सभा के सचिव श्री मनीष मोटवाणी ने बैठक में भारत सरकार की जम कर सराहना की। भटनागर के खिलाफ जितनी संस्थाओं ने हिस्सा लिया था उनके लिए भी धन्यवाद-आभार-बधाई प्रकट किया गया। दोनों विद्वान् अधिवक्ता की भी जमकर सराहना की गई। यह सब होते-होते रात्रि के ग्यारह बजने को आये।

प्रोफेसर ने मंच पर उपस्थित लोगों की सहमति एवं स्वीकृति से कुछ अपनी बात कहने की इच्छा जताई। जब सभी ओर से बोलिये-बोलिये की आवाज आने लगी तब प्रोफेसर ने बोलना शुरू किया, “प्रिय सिंधी भाई-बहनों! हमारे पूरे राष्ट्रगान को लेकर सन् 1911 से ही उपजा विवाद और 2005 में इसके एक शब्द ‘सिंध’ को लेकर उपजा एक व्यक्ति के व्यक्तिगत फितूर का तथ्यों पर आधारित सत्य का अनन्तकालीन समाधान के लिए आज का दिन (13/5/2005) भारत के राष्ट्रीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। आप लोगों का ज्यादा समय नहीं लेते हुए केवल इतना बता दूँ कि 27 दिसम्बर 1911 को कलकत्ता के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में खुद रवीन्द्रनाथ टैगोर का गाया जन-गण-मन दुर्भाग्य से कलकत्ता में उस समय उपस्थित ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम के सम्मान में गाया गया गीत समझा गया। शुरू में ही गलत आधारों पर तत्कालीन अंग्रेजी अखबारों एवं अंग्रेज भक्त साम्राज्यवादी ताकतों ने इस भ्रम को फैलाया। इस भ्रम को पालने-फैलाने में हम भारतीयों ने भी अपना सक्रिय योगदान किया। तब जबकि टैगोर ने खुद इसे मातृभूमि के लिए ईश्वरीय प्रार्थना कहा था। यदि किसी प्रकार का भ्रम सुभाष चन्द्र बोस के मन में होता तो क्या वो अपनी सेना (आजाद हिन्द फौज) में इसे राष्ट्रगान का स्थान देते। महात्मा गांधी इस गान के प्रति बहुत सम्मान रखते थे। दरअसल हम विरोधियों के बिछाये जाल में फंसते, उलझते और अपने ही सम्मान के प्रतीक चिह्नों पर संदेह कर भ्रमों के भंवर में उलझते रहने को अभिशप्त थे और अभी भी

हैं। पहली बार सर्वोच्च न्यायालय को सिंध के बहाने राष्ट्रीय मानस में अपने राष्ट्रगान के प्रति पूर्ण भावनात्मक सम्मान को स्थापित करने का सराहनीय अवसर मिला है।

जहाँ देश के कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों के मन में टैगोर की मंशा को लेकर भ्रम चला आ रहा था वहीं एक सज्जन सिंध के बहाने हिंद के राष्ट्रगान को ही हिलाने लगे। प्रभु की कृपा से राष्ट्रगान पर छाया संशय ही नहीं हटाया गया बल्कि सिंध शब्द की अक्षुण्णता भी बची रह गई। खैर! राष्ट्रगान की महिमा और सिंध शब्द की महत्ता वाला यह प्रकरण तो पूरा हुआ, लेकिन क्या हम इस उपलब्धि की व्याख्या को इसी हॉल तक सीमित रखेंगे?

हमारा विनम्र सुझाव है कि सर्वोच्च न्यायालय, भारत सरकार एवं संबंधित सभी संस्थाओं एवं व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट करने के लिए दिल्ली की सड़कों पर पथ संचलन करते हुए धन्यवाद प्रदर्शन किया जाय। यह पथ संचलन राष्ट्रपति भवन के मुख्य द्वार से शुरू हो और नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, विजय चौक, संसद भवन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, क्वांट प्लेस होते हुए सर्वोच्च न्यायपालिका के मुख्य द्वार तक जाय। कम-से-कम 10 हजार सिंधी भाई-बहन इस पथ संचलन में हिस्सा लें। सबों के हाथों में आभार प्रदर्शन वाले नारे लिखे बैनर तथा तख्तियाँ हों। इस तरह हम सिंध और सिंधी समाज के प्रति हरेक भारतीय के मानस को संवेदनशील बना सकेंगे। इससे होगा यह कि भविष्य में यदि कभी सिंधी समाज के बारे में कोई उल्लेखनीय बात सरकार या भारतीय समाज को कहनी होगी तो हमारी यह एकजुटता हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी।"

हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने इस सुझाव को तत्काल अमल में लाने के लिए कार्य योजना बनाने हेतु पाँच लोगों की एक कमिटी बना डाली। पाँच लोगों की इस कमिटी में प्रोफेसर को भी लिया गया। तय हुआ कि आज से ठीक सातवें दिन शुक्रवार को ही यानि 20 मई को यह पथ संचलन हो जो दिन के 11 बजे शुरू हो और शाम 7 बजे तक सर्वोच्च न्यायालय के पास एकत्रित हो देश-समाज को अपना संदेश दे विसर्जित हो जाये।

पाँच सदस्यों में से एक श्री राजन राधाकृष्णाणी ने कहा कि इस अवसर पर हमें भारत सरकार के सामने कुछ माँगें रखनी चाहिए; लेकिन बाकी सदस्यों की इस पर भिन्न राय थी। सभी ने कहा कि यह आभार प्रदर्शन का अवसर होगा। इस अवसर पर माँग आभार प्रदर्शन की गरिमा, निर्मलता और पवित्रता को प्रभावित करेगी। जब एक बार एकजुटता की आदत लग जायेगी तो सिंधी समाज देश के सामने अपनी माँग भी सशक्त ढंग से रखने लगेगा। हम पहले इक्कठे होकर इस कार्यक्रम को तो सफल बनायें। आगे के दिनों में हम माँगों पर भी सक्रिय होने लगेंगे।

सारी कार्यवाही होते-होते रात्रि के 12 बजे गये। चाँदनी चौक सिंधी पंचायत की ओर से हर्ष के इस अवसर पर सबों को मिठाई खिलाई गई। बहुत ही हंसी-खुशी के माहौल में सभा समाप्त हुई। सभी अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान किये।

सिंध समर्थकों की जय हो! जये हो!

20 मई को 9 बजे से ही बोट क्लब पर सिंधी भाई-बहनों की भीड़ जुटने लगी। दिल्ली के सभी सुधी सिंधीजनों ने देश भर के सक्रिय सिंधियों को इस कार्यक्रम की जानकारी दे दी थी तथा दिल्ली आने का आग्रह भी किया था। इसके साथ ही प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने भी 20 मई के आभार प्रदर्शन वाले पथ संचलन की अच्छी रिपोर्टिंग भी की थी। हाथों में उठाने वाली तख्तियों और बैनरों को बनवाने का जिम्मा पाँच सदस्यीय समिति में से एक श्री चमनलाल आहूजा के जिम्मे था। उन्होंने इस काम को शानदार ढंग से निबाहा भी था। करीब पाँच हजार तख्तियाँ और एक हजार बैनर बनवाये गये थे। पूरे पथ संचलन के रास्ते में बिजली के खम्भों पर बधाईयों और धन्यवाद वाले बैनर टंगे थे।

पुलिस और प्रशासन की स्वीकृति इस पथ संचलन के लिए ले ली गई थी। पानी, नाश्ते और पैकेट बंद भोजन की व्यवस्था हो गई थी। चूँकि गर्मी का समय था इसलिए पथ संचलन में हिस्सा लेने वालों को हर तरह की सुविधाओं के लिए कार्यकर्ताओं की भी अच्छी व्यवस्था थी। बड़ी संख्या में कार्यकर्ता डस्टबीन लेकर चल रहे थे। किसी भी प्रकार की सामग्री को लोग सड़क पर नहीं फेंककर डस्टबिन में डाल रहे थे। इससे दिल्ली की सड़कें गंदी नहीं हो रही थी। चाहे वे पानी की खाली बोतलें हों, नाश्ते और खाने की खाली पैकटें हों या जो भी चीजें हों।

प्रोफेसर यह देखकर भौंचक्का था कि सिंधीजनों में सिंधियत की भावना उफान पर थी। दस हजार से ज्यादा लोगों का नाम पथ संचलन के लिए पहले ही लिखा जा चुका था। ग्यारह बजे के बाद भी लोग इससे जुड़ रहे थे। बहनों की संख्या आश्चर्यजनक थी। किशोर-किशोरी ही नहीं बच्चों की संख्या भी इस समाज की मानसिक उत्तेजना को व्यक्त कर रही थी। लोग अपना व्यवसाय, नौकरी, दुकान, स्कूल-कॉलेज छोड़कर इस पथ संचलन में हिस्सा ले रहे थे।

सिंध शब्द को हटानेवाली याचिका के कारण महीनों की आहत भावना को मिला हर्ष सभी को इस पथ संचालन के माध्यम से अपनी भावना को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान कर रहा था। तख्तियों और बैनर को लेने की होड़ लगी हुई थी। व्यवस्थापकों को इसके वितरण में काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी।

जब ठीक ग्यारह बजे से पथ संचालन शुरू हुआ तो सबसे आगे में तीन व्हील चेअर पर 85 वर्ष से ऊपर के तीन बुजुर्ग बैठे थे। उन्हें पीछे से तीन युवक उस व्हील चेअर को आगे बढ़ाने के लिए खड़े थे। इन तीनों युवकों के पीछे के बड़े बैनर पर लिखा था —

‘हिंद के राष्ट्रगान में सिंध

है सिंध-हिंद का नाल संबंध’

इस बैनर के पीछे तीन की कतार में लोग चलने लगे थे। थोड़ी-थोड़ी देर पर टोलियों में परिवर्तन हो जाता था। युवकों-युवतियों, किशोरों-किशोरियों, लड़के-लड़कियों की अलग-अलग टोलियाँ तख्तियाँ और बैनर उठाये उमड़ते बादलों की तरह दिल्ली की सड़कों पर अनुशासन के साथ बढ़ते जा रहे थे। तख्तियों एवं बैनरों पर भारत माता की जय, वंदे मातरम्, वन्दे सिंध वन्दे, सर्वोच्च न्यायपालिका की जय, केन्द्रीय सरकार की जय, सिंधियत की जय, भारतीय जनमानस की जय, असांजी प्यारी सिंध की जय आदि तख्तियों एवं बैनरों के साथ ही सातों संगठनों के अपने अलग-अलग बैनर भी थे। इन संगठनों के बैनर के पीछे इन संगठनों से जुड़े लोग भी तीन की कतार में चल रहे थे। सैकड़ों लोग श्री राम जेठमलानी और श्री मिलन मुखर्जी की जय वाले तख्तियों और बैनरों को भी प्रदर्शित करते हुए चल रहे थे।

प्रोफेसर सभी तख्तियों एवं बैनरों को ध्यान से देख रहा था। पर वन्दे सिंध वन्दे पर निगाह पड़ते ही उसका शरीर झंकृत हो उठा! उस झंकार की अनुगूँज उसके शरीर के पोर-पोर में समाती चली गई। सिंध के इस अभिनन्दन के विस्तृत कैनवास में वह खोता जा रहा था। वन्दे सिंध वन्दे में वह सिंध-हिंद के नाल संबंध की गूढ़ता को स्पष्ट उभरता महसूस कर रहा था।

यह पथ संचलन अनुशासन और शालीनता की मिसाल बनती जा रही थी। इस पथ संचलन के माध्यम से देश की आम जनता के सामने यह भी दिखाने का एक प्रयास हो रहा था कि देश के अंदर फैले इस समाज की पीड़ा एवं इसकी आकांक्षा को लोग समझें।

पूरे पथ संचलन में लाउडस्पीकर का प्रयोग नहीं हो रहा था। सारा हर्ष-उल्लास, आभार प्रदर्शन एवं सिंधी एकजुटता बैनर और तख्तियों के माध्यम से ही की जा रही थी। जब विजय चौक से अंतिम टोली पथ संचलन से जुड़ रही थी तो दोपहर के एक बजे पथ संचलन की पहली टोली सर्वोच्च न्यायापालिका पहुँच चुकी थी। योजना थी कि सारे लोग न्यायालय के प्रति सम्मान, आभार और धन्यवाद प्रकट करने के लिए न्यायालय परिसर के चारों ओर दीवार या दीवार से सटे पेड़ के पास बैठ जायें और अपने-अपने बैनर तथा तख्तियों को सड़क की ओर लगा कर रखें। कार्यकर्त्ताओं ने दीवार से सटे-सटे दरियाँ आदि बिछा रखी थी जिससे लोगों को बैठने में दिक्कत महसूस न हो।

न मालूम दिल्ली में कितनी रैलियाँ तथा पथ प्रदर्शन आदि हुए होंगे पर इस आभार पथ संचलन की छटा और विशिष्टता ही निराली थी। कोई शोर-शराबा नहीं। ट्रैफिक कहीं से भी प्रभावित नहीं हो रहा था। आम नागरिकों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार को देखकर प्रेस और मीडिया के लोग बहुत ही प्रभावित थे। आयोजकों ने दस लाख लिफ्लेट्स छपवाये थे जिन्हें आम दिल्लीवासियों को अखबार के माध्यम से सुबह में ही उनके घरों में पहुँचाया जा चुका था। बचा लिफ्लेट्स भी पथ संचलन आदि के दौरान बाँटा जा रहा था। इस लिफ्लेट्स में इस पथ संचलन की पृष्ठभूमि एवं इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया था।

लिफ्लेट्स में सिंध का संक्षिप्त इतिहास, भारत विभाजन में पूरे के पूरे सिंध के पाकिस्तान में चले जाने के बाद बड़ी संख्या में हिन्दू सिंधियों का भारत आगमन, रोजी-रोटी की अपनी संभावनाओं को देखकर क्रमशः भारत सहित विश्व के विभिन्न हिस्सों में उनके फैल जाने की भी चर्चा थी।

भारत की स्वाधीनता के लिए भारतीय सिंधियों द्वारा सबसे बड़े त्याग और बलिदान का उल्लेख बड़े तथ्यपरक एवं मार्मिक ढंग से किया गया था। इसमें इसका भी उल्लेख था कि पंजाब का बड़ा हिस्सा पाकिस्तान चला गया पर अब भी पंजाब नाम का प्रांत भारत में है। उसी प्रकार बंगाल का बड़ा हिस्सा पाकिस्तान और अब बांग्लादेश के रूप में है पर अब भी पश्चिम बंगाल नाम का प्रांत भारत में है। पर सिंध का तो भारत में कुछ भी नहीं बचा है। सिंधियों के लिए भारत में भू-राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर जुड़ाव के लिए न भूमि बची न अभिव्यक्ति के लिए राजनैतिक सहारा। हमें तो अपनी जड़ों से ही उखड़ जाना पड़ा है। क्या भारत को इस पर नहीं सोचना चाहिए? क्या हमारी सिंधियत, जो प्रकारांतर में भारतीयत का प्रारंभिक अंतरंग हिस्सा है, की रक्षा नहीं होनी चाहिए? क्या हमारी कोई राजनैतिक अभिव्यक्ति नहीं होनी चाहिए? क्या भारत की अनेकता में एकता के सूत्र को व्याख्यायित करने के लिए हमारी मौलिकता और संस्कृति को पल्लवित-पुष्पित करने की कोई व्यवस्था नहीं होनी चाहिए?

लिफ्लेट्स के इन सारे तथ्यों तथा प्रश्नों से सिंधियों की मनःस्थिति का पता चल रहा था। लेकिन लिफ्लेट्स में राष्ट्रगान में सिंध शब्द को बचाकर रखने में भारत सरकार, न्यायपालिका और भारतीय मानस की भावना की भूरी-भूरी प्रशंसा भी की गई थी। पथ संचलन के दौरान भी यह लिफ्लेट्स बाँटा जा रहा था और इसे पढ़ने का आग्रह भी किया जा रहा था।

सिंधियों की सड़क पर एकजुटता के इस राष्ट्रीय प्रदर्शन के प्रति दिल्ली की उत्सुकता साफ झलक रही थी। दिल्ली में यह संभवतः पहली रैली थी, जिसके स्वयंसेवक एवं कार्यकर्ता दिल्ली की सड़कों पर चलने वाले आम लोगों की न केवल प्यास बुझा रहे थे बल्कि अपने हिस्से का पानी, फल, जूस तथा नाश्ता आदि भी दूसरों को देने में आनंद अनुभव कर रहे थे। ट्रैफिक पुलिस वाले सिंधी भाई-बहनों की इस दानशीलता को देखकर अन्य रैलियों से इसकी तुलना कर रहे थे। पूरे रास्ते भर में कहीं से भी ट्रैफिक में बिघ्न या पैदल यात्रियों के साथ असहयोग की बात देखने को नहीं आई। जैसे-जैसे पथ संचलक आते गये वो न्यायपालिका की पूरी चाहार दीवारी के किनारे बैठते चले गये। उन्हें कहा गया था कि संध्या 7 बजे तक

खड़े या बैठकर तख्तियों तथा बैनरों को सड़क की ओर कर अपनी भावना का प्रदर्शन करें।

प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लोग आभार प्रदर्शन की इस शैली और कष्ट उठाने की इस अभिनव प्रक्रिया के कायल हो इस कार्यक्रम का मनोयोग से कवरेज कर रहे थे। एक अनूठा दृश्य नजर आ रहा था। पथ संचालकों और उनके बैनर-तख्तियों से सर्वोच्च न्यायपालिका का सम्पूर्ण बाहरी परिसर घिरा था। कहीं कोई आवाज नहीं थी। बिना शोर और ध्वनि के भी सारा संदेश व्यक्त हो रहा था। मीडिया की भारी उपस्थिति थी और सभी अपने वाइट्स और स्टोरी को पूर्णता देने के लिए जानकारियाँ प्राप्त कर रहे थे।

सात बजने पर सभी बगल के प्रगति मैदान में इक्कठे होने लगे। जब सभी आभार प्रदर्शनकारी एक स्थान पर इक्कठे हो गये तो पहली बार लाउडस्पीकर का प्रयोग करते हुए श्री खट्टर ने मात्र इतना कहा कि प्रिय भाईयों एवं बहनों, आभार प्रदर्शन दर्शाता है कि सिंधी समाज भारत का एक वफादार समाज है। राष्ट्रगान में सिंध शब्द को न्यायपालिका द्वारा अक्षुण्ण रखना केवल सिंधियों की नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत की जीत है। यह राष्ट्रगान की भावना की जीत है। यह भारत के मूल्यों की जीत है। भारत की मौलिकता की जीत है। भारत की मौलिकता के निर्माण ही नहीं उसे संकटों में भी बचा कर रखने में सिंधियों की भी उतनी ही भूमिका है जितनी अन्य समाज की। यदि कोई सिंध के इतिहास को पढ़े तो उसे मालूम होगा कि हजारों साल के लम्बे इतिहास में कितने झंझावातों के बावजूद भी यदि सिंधी वजूद बचा रहा तो यह इस समाज की जीवन्तता और जिजीविषा के बूते ही हो सका। भारत के सबसे पुराने समाज में सिंधी समाज आता है। राष्ट्रगान में सिंध शब्द नहीं बचा है बल्कि हिंद की आत्मा बची है। आज के इस अवसर पर हम अपने सभी भाई-बहनों, युवा-युवतियों और बच्चे-बच्चियों से भी कहते हैं कि अपने समाज सहित देश के प्रति सदा वफादार बने रहें और अपने समाज तथा देश को हमेशा सींचते रहें। हम आगे भी सिंधियत के प्रति सजग रहें और इक्कठे हो अपना गम और अपनी

आकांक्षा को अभिव्यक्ति देते रहें। जय हिंद! असांजी प्यारी सिंध की जय!
वन्दे सिंध वन्दे! धन्यवाद।

प्रोफेसर के कानों में श्री खट्टर की 'वन्दे सिंध वन्दे' की ध्वनि पुनः
मिश्री घोलती चली गई।

सभा विसर्जित हो गई। लोग अपने घरों की ओर जाने लगे। प्रोफेसर
भी वहाँ उपस्थित अपने सभी परिचितों से मिल रहा था। प्रोफेसर देर शाम
को अपने आवास पर आया। आवास पर देर रात तक लोगों से मिलने-जुलने
तथा वार्त्तालाप का क्रम चलता रहा। दूसरे दिन उसने पटना लौटने का टिकट
लिया और प्रसन्न चित्त पटना लौट आया।

गंगा तीरे सिंध शरीरे

करीब 40 दिनों के दिल्ली प्रवास के बाद शाम की ट्रेन पकड़ जब सुबह में प्रोफेसर पटना जंक्शन पहुँचा तो उसका मन हल्का और शांत था। जंक्शन के मुख्य द्वार से बाहर आया तो जानकी और उसके दोनों बच्चों ने पाँव छूकर उसका स्वागत किया। सामने महावीर मंदिर से घंटियों की आवाज और मंत्रोच्चार के स्वर गूँज रहे थे।

अपने फ्लैट पहुँच प्रोफेसर ने माँ और पिता के चरण छुए और आशीर्वाद लिया। करीब दो घंटे तक वह अपने परिवार के सदस्यों के बीच दिल्ली के अपने संस्मरणों को सुनाता रहा। शौचादि और ब्रश करने के बाद प्रोफेसर ने पत्नी से कहा, “आज मैं गंगा स्नान और माँ काली की पूजा के बाद ही अन्न-जल ग्रहण करूँगा। इसलिए अभी मैं जा रहा हूँ। ड्राइवर आकर यहाँ से हमारा भोजन ले जायेगा।” जब उसकी कार दरभंगा हाउस पहुँची तो शायद जीवन में पहली बार दरभंगा हाउस के भीतर न जाकर उसने सीधे गंगा घाट का मुँह किया।

आज उसे गंगा बहुत प्यारी लग रही थी। गंगा की धारा में गति थी। वो एक गमछा कमर में लपेट और एक गमछा माथे में लपेट गंगा जी की धारा में प्रवेश करने के पूर्व गंगा जल को माथे से लगाया और तब जल में प्रविष्ट हो गया। पहली डुबकी लगाते ही उसके मुँह से अकस्मात् वन्दे सिंध वन्दे के बोल निकल पड़े। प्रोफेसर खुद अर्चभित हो गया। उसकी आदत थी कि वो स्नान के समय हे प्रभो! हे प्रभो! श्री राम! श्री राम! हे माता! हे माता! आदि बोला करता था। पर आज गंगा स्नान करते हुए अचेतन मानस में समाया वन्दे सिंध वन्दे का उच्चारण उसे भिन्न प्रकार के पुलक से भर दिया। उसने एक सौ एक डुबकी लगाई और हर बार वन्दे सिंध वन्दे का उच्चारण किया। उस दौरान वह सिंध के नक्शे की आकृति और महान सिंधु नदी के स्मरण की आवृत्ति में बंधा रहा।

स्नान के बाद वह सीधे काली मंदिर गया। माँ के आगे माथा टेक

जली ओर मुँह कान्हे पालथी मार कर बैठ गया। आँखें स्वतः बंद हो गई।

प्रोफेसर की आँख खुल गई। उसने माँ की मूर्ति को गौर से देखा। उसे लगा कि जैसे माँ मुस्कुरा रही हो। श्रद्धाभाव की शीतलता से उसका अंग-प्रत्यंग झनझना उठा। गर्मी के इस मौसम में भी उसे ठंड लगने लगी। उसकी आँखें पुनः बंद हो गईं। स्वतः स्फूर्त जिज्ञासा उठी की माँ मैं एक अदना शिक्षक भला सिंध राज्य के निर्माण में कैसे लगूँ। उसके बाद तो लगा कि जैसे वार्तालाप का दौर शुरू हो गया। उत्तर आया कि सिंध निर्माण के लिए अंतःकरण में तुम्हारी क्षमता के अनुरूप जो भी भाव और विचार आते हैं, पग तो बढ़ाओ। फिर न जाने कितने प्रश्न कौंधे और कितने के उत्तर आये। अंत में ऐसा लगा कि माँ की मुखाकृति पर क्रोध की रेखायें खिंचीं और 'चुप रहो! अपना काम करो!' के आदेश के बाद वार्तालाप बंद हो गई। प्रोफेसर की आँखें खुल गईं।

प्रोफेसर बड़ी देर तक भौंचक्का सा शून्य में देखता रहा। फिर उठा। गंगा घाट जा हाथ-मुँह धो अपने चित्त को स्थिर किया। उसके जीवन में इस तरह का यह पहला अनुभव था। अब उसे एक अलग तरह के रोमांच का अनुभव भी हो रहा था। दिशा-निर्देश को लेकर एक धुंध भी छाई हुई थी। उसने माँ के आदेश को सर आँखों पर लिया और उसी दिशा में बढ़ने के संकल्प को दृढ़ कर ड्राइवर से पहनने वाले कपड़े ले उन्हें पहन अपने दरभंगा हाउस के विभागाध्यक्ष के कक्ष में पहुँच गया।

कक्ष में कई प्रोफेसर बैठे थे। सबों ने चौंकते हुए प्रोफेसर रघुनंदन का स्वागत किया। बधाईयाँ मिल रही थीं। प्रोफेसर ने देखा कि प्रोफेसर बिपिन बिहारी भी एक कोने में खड़े हो शर्मिये से नजर आ रहे थे। प्रोफेसर उनके पास पहुँचा और उनके कंधे पर हाथ धरते हुए कहा, “बिपिन बाबु, राष्ट्रगान से गीत श्रद्धा गेरा ही नहीं आपका भी है। आपका ही जयसिंह एडो 2009 भारत

का है। आपने 3 जनवरी को एक तरह से ठीक ही कहा था कि आपकी कागजी सक्रियता बढ़ने वाली है। अंतर केवल यह आया है कि मेरा सिंध से जुड़ाव केवल पेपर वर्क तक ही नहीं बढ़ने वाला है बल्कि सिंध को लेकर हमारी शारीरिक और मानसिक सक्रियता काफी बढ़ने वाली है। और इसमें मैं आपको भी अपना सहयोगी बनाऊंगा। अब हमें यह देखना है कि राष्ट्रगान में सिंध की उपस्थिति जमीनी हकीकत में कैसे बदले।”

सभी लोग प्रोफेसर को गौर से देखने लगे। प्रोफेसर अवध ने पूछा, “सर, यह आप क्या कह रहे हैं? हम समझ नहीं पा रहे हैं। राष्ट्रगान में सिंध बना रहा। अब फिर सिंध को लेकर आपकी सक्रियता का क्या आशय है?”

प्रोफेसर बिपिन बिहारी प्रोफेसर रघुनंदन की सहृदयता से अभिभूत हो अपने को संयत करते हुए कहा कि सर, हमें अपनी भूल का एहसास हो गया है। वास्तव में हमें अपनी निजी स्पर्धा को राष्ट्रीय संदर्भ में रूपांतरित नहीं करना चाहिए। आपने सही कहा, जितना सिंध शब्द आपके लिए महत्व रखता है उतना ही देश के सभी लोगों के लिए। लेकिन उसे लेकर अब और सक्रियता के रहस्य को समझना चाहता हूँ।

प्रोफेसर कुछ बोलने ही वाला था कि अकस्मात् उसे कुछ याद आया। उसने कहा, “बिल्कुल। मैं आपलोगों के सम्मुख अपनी बात रखूँगा। आप थोड़ा इंतजार करें।”

उसने प्रोफेसर अवध को कहा कि अवध जी आप फिफ्थ और सिक्सथ ईयर के क्लास के स्टूडेंट्स को खबर कीजिए कि हम आ गए हैं और दोनों वर्गों के विद्यार्थियों से एक साथ मिलना चाहते हैं। साथ ही प्रोफेसर ने प्रोफेसर बिपिन बिहारी से कहा कि मैं चाहता हूँ कि इतिहास विभाग के सारे शिक्षक एवं अन्य स्टाफ भी वहाँ उपस्थित हों, जिससे सिंध के इतिहास को सुधारते हुए हम आगे अब उसके भविष्य के इतिहास पर भी विचार-विमर्श कर सकें। मैं चाहता हूँ कि आज के सारे क्लास और कार्यकलाप को स्थगित किया जाय तथा पटना विश्व विद्यालय का स्नातकोत्तर विभाग एक साथ इस विषय पर एकजुट हो चिंतन को आगे बढ़ाये।

प्रोफेसर अवध ने इस पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कि और प्रोफेसर रघुनंदन के दिशा निर्देश के अनुरूप काम करने को निकल गए।

जब दरभंगा हाउस के इतिहास विभाग के फर्स्ट फ्लोर के बड़े हाल वाले कमरे में प्रोफेसर रघुनंदन ने कदम रखा तो शिक्षकों और विद्यार्थियों ने जोरदार ढंग से उसका स्वागत किया। शिक्षकों एवं अनेक विद्यार्थियों ने उन्हें नजदीक आकर बधाईयाँ दी। जब हॉल में शांति स्थापित हो गई तो प्रोफेसर ने बोलना शुरू किया, “मेरे प्रिय सहकर्मियों, मित्रों एवं विद्यार्थियों। आपके अपार स्नेह, शुभकामना एवं प्रभु कृपा से सिंध से संबंधित भारतीय इतिहास और शर्मिन्दा होने से बच गया। आप सभी हमारे लम्बे समय से यहाँ की अनुपस्थिति के कारणों से वाकिफ हैं। हम भारतीय इतिहास के शिक्षक और छात्र भारत के एक महत्वपूर्ण हिस्से को खोकर मात्र उसे थोड़ा पढ़कर ही उसकी पूर्णाहुति करने को अभिशप्त हैं। अभिशप्त शब्द मैं इसलिए प्रयोग कर रहा हूँ कि हमें सिंध को थोड़ा नहीं बहुत ज्यादा पढ़ने की बाध्यता होनी चाहिए थी। सिंध से ही हिंद के पतन का दुर्भाग्य शुरू हुआ है। यदि हम सिंध के बारे में विस्तार से पढ़ें तो हमें मालूम पड़े की किस प्रकार आन्तरिक द्वन्द्वों ने हमें विनाश तक पहुँचाया है। किस प्रकार हम अपने ही क्षेत्रों एवं अपने ही लोगों को उनके भाग्य भरोसे छोड़कर भागना सिंध से ही शुरू किया है। और अभी-अभी हमने यह भी देखा की उस सिंध शब्द से भी हाथ छुड़ाने तथा उसकी कपालक्रिया की योजना हमारे लोग ही रचे थे।

कल के दिन कोई यह भी कह सकता है कि जब सिंध भारत में है ही नहीं तो सिंध के इतिहास को थोड़ा ही पढ़ना जरूरी क्यों है? यह तर्क और आगे जाकर यह विस्तार भी पा सकता है कि जब अंग्रेज चले ही गये, भारत अंग्रेजों से आजाद हो ही गया तो हमें भारत के औपनिवेशिक काल खण्ड को पढ़ने की क्या जरूरत है? जब भारत का मध्यकाल बीत ही गया, प्राचीन काल बीत ही गया तो भारतीय इतिहास का मध्यकाल-प्राचीन काल पढ़ने की आवश्यकता ही क्या है? मध्य काल के कई दुखद साम्प्रदायिक घटनाओं-उत्पीड़नों को पढ़ने-पढ़ाने से देश में साम्प्रदायिक भावना के पनपने की सम्भावनाओं को देखते हुए मध्यकाल के इतिहास को तो पढ़ाना ही बंद

कर देना चाहिए। यानि राष्ट्रगान से सिंध शब्द को हटाने के तर्क की परिणति

भारतीय इतिहास के पठन-पाठन पर ही प्रश्न लगाने के समान है। इसलिए मैंने इसे एक भारतीय इतिहास के साथ विश्वासघात के तौर पर लिया और उन क्षणों का गवाह बना जिसमें सिंध शब्द की सत्ता राष्ट्रगान में उसी तरह पुनः स्थापित होते देखी।

दूसरी बात क्या राष्ट्रगान से सिंध शब्द का निष्कासन केवल भारतीय सिंधियों का विषय है? नहीं! बिल्कुल नहीं! सिंध शब्द जितना सिंधियों को प्यारा है उतना ही हमारा भी प्यारा है। हरेक बिहारी को प्यारा होना चाहिए। हर एक भारतीय को प्यारा होना चाहिए। जब सिंध के बगैर भारत अधूरा है तो फिर एक भारतीय के नाते हम पूरे कैसे होंगे? इसी भाव से बंधा में इतने दिनों तक आपसे अलग रहा। इतने दिनों में मैं हजारों सिंधी भाई-बहनों से मिला हूँ। वो देश के कोने-कोने में फैले हैं। विदेशों में भी उनकी विशाल संख्या है। कंगाली-फटेहाली से खुशहाली-मालामाली की उनकी यात्रा प्रेरणादायी है।

यहाँ आपसे मिलकर बात करने के पीछे का उद्देश्य यह है कि क्या हम भारतीय इतिहास के सिंध को यही छोड़ दें या इतिहास के छात्र होने के नाते भारतीय इतिहास के सिंध को जीवंतता देने की संभावनाओं पर विचार कर सकते हैं? क्या पटना विश्व विद्यालय के हम सभी छात्र इतिहास को वर्तमान का चोला पहनाने के बारे में सोच सकते हैं? क्या सर्वोच्च न्यायपालिका में सिंध के भाव जगत-विचार जगत और प्रतीक जगत के इस जीत को कोई साकार रूप देने की योजना बना सकते हैं? क्या राष्ट्रगान के सिंध संबंधी निराकार धारणा को साक्षात् साकार अवधारणा में परिवर्तित कर सकते हैं?"

प्रोफेसर कुछ पल को मौन हो गया। और उन्हीं कुछ क्षणों के मौन में ही कैसे-कैसे के कई प्रश्न अंतःकरण में फूट पड़े।

प्रोफेसर ने तत्काल कहा, "क्या हम पटना विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग के लोग भारतीय संघ में एक पृथक सिंध राज्य के निर्माण की परिकल्पना को साकार करने के लिए संकल्प नहीं लें? जब एक संजीव भटनागर राष्ट्रगान से सिंध शब्द के निष्कासन का प्रयास कर सकता है तो क्या हम लोग देशवासियों और भारत सरकार के सहयोग से देश के संविधान में सिंध को शामिल कर सकते हैं?"

का निर्माण नहीं कर सकते हैं? हमें पूरा विश्वास है कि यदि सकारात्मकता के साथ इस विषय को उठाया जाय तो पूरा भारत इसके पक्ष में अपनी राय देगा और सरकार भी कोई न कोई रास्ता जरूर निकालेगी।

विचार दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। सिंध प्रांत निर्माण का विचार यदि भारतवासियों और भारत सरकार को भा गया तो हम सभी इसे शीघ्रातिशीघ्र होते देख सकेंगे। जब किसी विचार के कार्यान्वयन का काल आ जाता है तो कोई उसे रोक नहीं सकता है। समय आ गया है। बस स्वर देने की आवश्यकता है। बस हाथ उठाने की आवश्यकता है। देशवासियों की सात्विक इच्छा ही प्रभु इच्छा होगी।

हमारे देश में सिक्कम राज्य की आबादी साढ़े छः लाख है। अरुणाचल की आबादी दस लाख है। पुदुचेरी (पांडिचेरी) की आबादी दस लाख है। गोवा की आबादी चौदह लाख है। भारत में सिंधियों की जितनी आबादी है उससे बहुत ही कम आबादी वाले एक दर्जन राज्य भारत में हैं।

क्या इतने बड़े देश में और केवल भारत में ही करीब 60 लाख की आबादी वाले समाज के लिए हमें एक छोटा सिंध राज्य का निर्माण नहीं करना चाहिए? सिंध राज्य का निर्माण होते ही राष्ट्रगान को पूर्णता और भारत सहित विश्व भर के सिंधियों की आकांक्षा भी पूरी हो जायेगी। उनकी शिकायत दूर हो जायेगी। उनकी भू-राजनैतिक स्थिति स्थापित और सुदृढ़ होगी। उनके सांस्कृतिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा। फिर वो भारतीय समाज के प्रति कृतज्ञता के भाव से सराबोर हो जायेंगे। अपने साथ होते न्याय को देखकर उनके घाव भी भरेंगे और राष्ट्रवाद की एक प्रबल लहर भी बहेगी।”

प्रोफेसर जब अपनी रौ में बोलता जा रहा था तो सिक्स्थ ईयर की मेधावी और अध्ययनशील छात्रा शालिनी कुमारी ने अपना हाथ ऊपर कर कुछ बोलने या पूछने की इच्छा जाहिर की। प्रोफेसर प्रसन्न हो गया। उसकी पढ़ाने की शैली ही ऐसी थी कि यदि विद्यार्थियों की ओर से प्रश्न नहीं पूछे जाते थे तो वो आनंदित नहीं होता था। उसने शालिनी को उत्साहित करते हुए पूछा, “हो शालिनी बोलो, तुम क्या कहना चाहती हो?”

शालिनी ने कहा, “सर, हमलोग आपसे पूरी तरह सहमत हैं। मैं क्या यहाँ उपस्थित सारे लोग आपसे सहमत हैं। पर भारत तो राज्यों का एक संघ है। यहाँ या तो राज्य हैं या केन्द्र शासित प्रदेश हैं। हरेक राज्य या केन्द्र शासित राज्य अपने क्षेत्र या क्षेत्रफल को लेकर अति संवेदनशील है। हम सिंधु राज्य आखिर बनायेंगे तो कहाँ बनायेंगे? आखिर किस राज्य के हिस्से में से सिंधु राज्य बनायेंगे? भारत का कोई भी राज्य अपना हिस्सा इसके लिए देगा नहीं। यदि स्थान या स्थल का निर्धारण हो जाय तो फिर बात आगे बढ़ सकती है।”

प्रोफेसर ने शालिनी की ओर प्रशंसा भरी नजरों से देखते हुए कहा, “शालिनी, तुम हमारी प्रिय छात्रा हो और सिंधु राज्य के निर्माण की सबसे बड़ी समस्या या बाधा को बता कर तुमने चिंतन और मंथन को आगे बढ़ाया है।”

प्रोफेसर ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को देखते हुए कहा, "सैकड़ों सिंधियों से मिलने-जुलने तथा सिंध से संबंधित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के चार महीनों के अध्ययन के दौरान हमें व्यापक जानकारी मिली है। आजादी पूर्व और आज भी पाकिस्तानी सिंध की सीमा राजस्थान और गुजरात से मिलती है। सिंधियों का राजस्थान में बाड़मेर और गुजरात के कच्छ से ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं। इन दोनों स्थानों पर संस्कृति और भाषा के स्तर पर कई साम्य हैं। विभाजन के बाद सिंधियों को भारत में बसाने की सबसे बड़ी मुहिम कच्छ के आदीपुर में शुरू हुई थी। कच्छ के महाराज ने महात्मा गाँधी की पहल पर सन् 1948 में 15 हजार एकड़ जमीन का दान सिंधियों को पुनर्वास के लिए दिया था। इसके लिए सिंधी रिसेटलमेंट कॉरपोरेशन बनाया गया। आदीपुर के नजदीक ही गाँधीधाम तथा कांडला बंदरगाह के इलाके में सिंधियों की बड़ी आबादी है। यही दो स्थान हैं जहाँ सिंधी समाज की जड़ें सबसे गहरी हैं। पर राजस्थान और गुजरात की जनता या सरकार अपने क्षेत्र में सिंध राज्य के प्रस्ताव को सुनना भी पसंद करेगी—यही एक बड़ा प्रश्न है।

हाँ, कच्छ में ही एक और स्थान है जहाँ से सिन्धी समाज का अति

पश्चिमी छोर पर कोरी क्रीक के किनारे नारायण सरोवर और कोटेश्वर मंदिर का इलाका। कहा जाता है कि आज का कोरी क्रीक होकर ही कभी सिंधु नदी बहती हुई अरब सागर (सिंधु सागर) में मिलती थी। सिंधी समाज में नारायण सरोवर की बड़ी महिमा है। नारायण सरोवर के नजदीक हम्मन खुडी में सिंधी समाज के इष्टदेव श्री झूलेलाल जी की एक मूर्ति खुदाई में मिलने से इस स्थान के ऐतिहासिक संबंध का पता चलता है। पर प्रश्न यही है कि कच्छ का यह हिस्सा जो लखपत ताल्लुका के अंतर्गत आता है क्या गुजरात की जनता या वहाँ की सरकार देगी? हालाँकि लखपत की आबादी मात्र पचास हजार है और यह इलाका गुजरात के सबसे पश्चिमी छोर पर है। अरब सागर और कोरी क्रीक के किनारे का यह इलाका पाकिस्तानी सिंध के सबसे निकट है। कोरी क्रीक के बाद पश्चिम में सिंध है। पर लाख टके का प्रश्न तो स्थान की उपलब्धता की ही है।

कच्छ यात्रा के दौरान जब मैं नारायण सरोवर में स्नान कर रहा था तो हमारे भक्तिमय मनोदशा को एक व्यक्ति बहुत गौर से देख रहा था। उसने पूछा कि क्या आप सिंधी हैं? मैंने कहा कि जी नहीं मैं सिंधी तो नहीं हूँ पर सिंध के हिंद में नहीं रहने पर बहुत दुखी जरूर हूँ और हिंद को अधूरा मानता हूँ।

वह व्यक्ति हमारे और पास आ गया। उसने कहा कि मैं आपकी श्रद्धा को देखकर अभिभूत हो उठा हूँ। जानते हैं यह जो नारायण सरोवर है इसकी चर्चा पुराण में भी है। उसने फिर पूछा कि आपने कोटेश्वर मंदिर देखा है। मेरे हामी भरने पर उसने कहा कि वहाँ ही कोरी क्रीक अरब सागर में मिलती है। हजारों वर्ष पूर्व पहले सिंधु नदी का जल कोरी क्रीक के माध्यम से ही अरब सागर में मिलता था। पुराण में इसका उल्लेख इस प्रकार है—

तत्र नारायणसरतीर्थं सिंधुसमुद्रयोः

संगमो यत्र सुमहन् मुनिसिद्ध निषेचितम्॥

इसका भावार्थ है— सिंधु और सागर के संगम के पास नारायण सर का पवित्र तीर्थ स्थान है। जहाँ पर पूजा-तपस्या-साधना करने के लिए देश के

यह सब बोलते हुए उस सज्जन का चेहरा चमक रहा था। मैंने पूछा कि आपका नाम क्या है और क्या आप यहीं के रहने वाले हैं? उस व्यक्ति ने अपना नाम मोहन केशवाणी बताया और कहा कि मैं हांगकांग में रहता हूँ और प्रतिवर्ष नारायण सरोवर में आकर स्नान करता हूँ। यहाँ स्नान कर और कोटेश्वर मंदिर से कोरी क्रीक को देखते हुए अपने असांजी प्यारी सिंध को प्रणाम कर अपनी मौन श्रद्धा अर्पित कर पुनः हांगकांग चला जाता हूँ। उन्होंने कहा कि हमारा यह सिलसिला पिछले 40 वर्षों से चल रहा है। अब तो शरीर भी थकने लगा है। अगले साल से मैं अपने बड़े लड़के को अपने साथ लाऊँगा और वही हमारी इस पारिवारिक परम्परा को आगे बढ़ायेगा। मैंने अपने पिता जी कि शुरू की गई इस परम्परा को आगे बढ़ाया है।

मेरे यह पूछने पर कि जब आपके अंदर सिंध को लेकर इतनी श्रद्धा है तो आप सिंध जाकर ही क्यों नहीं और संतुष्टि प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पिता जी हांगकांग में सेटल हो गये तो पहली बार 1957 में सिंध गए। वहाँ से वो दुखी होकर लौटे और उसके बाद फिर नहीं गये।”

इस संस्मरण को सुनाकर प्रोफेसर कुछ देर मौन रहा। उसके बाद प्रोफेसर ने फिर कहना शुरू किया, “बाकी अन्य जिस भी स्थान पर सिंधियों की बड़ी आबादी है वहाँ से कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं है। आजादी के बाद विस्थापित सिंधियों को बसाने के लिए मुम्बई के नजदीक कल्याण के उस कैपों का इस्तेमाल हुआ जिसे द्वितीय विश्व युद्ध में कैदी इटालियन सैनिकों को रखने के लिए बनाया गया था। उन्हीं कल्याण के शरणार्थी कैपों का विस्तार ही आज का उल्हास नगर है। देश में सिंधियों की सबसे बड़ी बस्ती उल्हास नगर घरेलू उद्योग धंधों के कारण आज भारत का जापान कहलाता है। यहाँ सुई से लेकर इलेक्ट्रॉनिक पुर्जे तक निर्मित किये जाते हैं। जब यहाँ सिंध राज्य के निर्माण की कोई संभावना नहीं तो फिर अन्य स्थानों पर बसे सिंधियों के स्थानों के बारे में कुछ भी कहना कठिन है। पर जहाँ चाह वहीं राह.....”

राह शब्द बोलते-बोलते प्रोफेसर के मन में जैसे बिजली कौंधी। मन में स्फूर्ति फूटा। लगा जैसे कोई गूँज उठी कि यदि भारत की धरती पर

में लेकर ही आगे आना होगा। जब तक सिंधी समाज इस प्रोजेक्ट के लिए उत्साहित और कटिबद्ध नहीं होगा तब तक कुछ नहीं होगा। अब सिंधी समाज पूर्णतः वणिक समाज हो चुका है। हानि-लाभ और व्यावसायिक तराजू पर भी इस प्रोजेक्ट को तौले जाने की संभावनाओं को ध्यान में रखना होगा।”

प्रोफेसर बिपिन बिहारी ने कहा, “सर, सिंध पर न्यायपालिका के निर्णय के बाद मैंने आपका थीसिस पढ़ा है। पूरा थीसिस पढ़ने के बाद हमें लगा कि वास्तव में भारत के इतिहास में सिंध की उपेक्षा हुई है। और उस उपेक्षा के दुष्परिणाम को भुगतने के लिए भारत अभिशप्त है। इसलिए यह केवल सिंधियों का विषय न होकर भारत के अपने भूल सुधार के नजरिये से देखने का विषय है। जब देश के एक महत्वपूर्ण समाज की अस्मिता, उसकी पहचान, भारत की पूर्णता और राष्ट्रगान के गौरव की बात हो तो व्यावसायिकता गौण हो जाती है और आदर्श एवं सिद्धांत तथा भाव और भावना प्रधान हो जाती है।

आपके माध्यम से पटना विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग को इसका श्रेय जायेगा कि इतिहास के भूल सुधार पर हम सभी कुछ सोचकर कुछ ठोस करने का प्रस्ताव देश के सम्मुख रखेंगे। हमें तो लगता है कि अब हमारा देश इस लायक हो चुका है कि एक छोटा ही सही पर समुद्र में द्वीप निर्माण कर उस पर सिंध राज्य की कल्पना को साकार रूप दिया जा सकता है।”

फिफ्थ ईयर के विद्यार्थी इकबाल ने पूछा, “सर, जैसा कि बिपिन सर ने कहा कि उन्होंने आपका थीसिस पढ़ा है तो क्या सर आप हमलोगों को अपने थीसिस के बारे में मोटे तौर पर कुछ बतायेंगे।”

सिक्स्थ ईयर के विद्यार्थी आकाश ने पूछा, “सर, जैसा कि आपने कहा कि सिंध का निर्माण समुद्र में एक द्वीप निर्माण कर हो सकता है। बिल्कुल हो सकता है। लेकिन वो द्वीप कहाँ होगा? वो द्वीप कैसा होगा? वो द्वीप कितना बड़ा होगा? भारत का उस द्वीप से कैसा सम्पर्क होगा? क्या सड़क से होगा? क्या रेल लाइन जा सकती है? या हम हवाई मार्ग या स्टीमर से जा सकते हैं।”

उसके बाद कुछ अन्य विद्यार्थियों ने तथा दो प्रोफेसर ने अपनी बात रखी। पर प्रोफेसर दूसरी दुनिया में खोया था। जब सभी प्रश्न पूछने वाले या अपनी बात कहने वाले अपनी-अपनी बात कह चुके और हॉल में शांति छाई तभी प्रोफेसर की तन्द्रा टूटी।

उसने अपने शर्ट की ऊपरी जेब से असांजी प्यारी सिंध वाला कार्ड निकाल कर दिखलाते हुए कहा कि यही सिंध का नक्शा है। पाकिस्तानी सिंध को ही यहाँ के सिंधी असांजी प्यारी सिंध कहते हैं। पाकिस्तानी सिंध में तो अब यहाँ के सिंधी जाकर बसने से रहे। हम क्यों नहीं अपना सिंध भी इसी सिंध के प्रतिरूप में बनायें। हमारा सिंध भी पाकिस्तानी सिंध का फोटो कॉपी बने यानि उसी के रूप का छोटा प्रतिरूप। हमारे सिंध का जमीनी नक्शा भी मौलिक सिंध जैसा ही होगा। ठीक है कि पाकिस्तानी सिंध के क्षेत्रफल का यह मात्र सौवाँ या हजारवाँ हिस्सा ही हो पर देखने में यह सिंध ही लगेगा। और अभी ये बातें न मालूम हमारे मस्तिष्क में कैसे आ रही हैं, पर इतना कह सकता हूँ कि यह विचार सिंधियों को बहुत पसंद आयेगा। इसी सिंध में वो अपनी असांजी प्यारी सिंध की छवि देखेंगे और अपनी कल्पनाओं के अनुरूप इसे भी बनाने-बसाने का प्रयास करेंगे।”

हॉल में चारों ओर से उस कार्ड को देखने की माँग होने लगी। प्रोफेसर ने उसे आगे बढ़ाया। करीब एक घंटे तक लोग उस कार्ड को देखते रहे। उसमें से अधिकांश ने पहली बार सिंध का नक्शा देखा था। जब कार्ड घूमकर प्रोफेसर के हाथ में आया तो उसने सिंध के नक्शे को देखते हुए कहा, “मैं तो एक अदना शिक्षक हूँ। पर सिंध निर्माण का यह जो विचार प्रभु ने हमारे मानस में भरा है, वह उनकी कृपा और देश के सामर्थ्य से जरूर पूरा होगा।”

जब इकबाल ने पुनः प्रोफेसर को अपने थीसिस के बारे में बताने का आग्रह किया तो प्रोफेसर ने कहा कि पहले यह तय हुआ था कि आज क्लास को समाप्त कर दिया जाय पर नहीं। आज भी शिक्षक अपने क्लास को लेंगे और अपना काम करेंगे। कल मैं इसी प्रकार सिंध पर स्पेशल क्लास ले इसी हॉल में अपने थीसिस के बारे में आपको बताऊँगा।

विभागाध्यक्ष के कक्ष में पहुँच प्रोफेसर ने अपने आलमारी से अपना थोसिस निकाला और रूमाल से उसे साफ कर अपने टेबुल पर रखा। पुरानी स्मृतियाँ मानस पटल पर छाने लगी। बी. ए. ऑनर्स (सन् 1973-75) करने के दौरान ही उसका ध्यान सिंध के इतिहास पर गया था।

भारतीय इतिहास का वर्गीकरण तीन चरणों में किया जाता है। प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत और आधुनिक भारत। हमारे देश में इतिहास का काल-विभाजन उल्लेखनीय जातियों या धर्मों के प्रभुत्व से भी जुड़ा है। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना पूर्व के काल को प्राचीन काल कहकर पुकारते हैं।

प्राचीन काल में प्रागैतिहासिक काल (जहाँ से भारतीय इतिहास की प्रारंभिक गतिविधियों के संकेत मिलते हैं।) से लेकर अरबों द्वारा 712 ई. में सिंध विजय के पूर्व का वर्णन है। प्राचीन भारत के इस काल को कुछ विद्वान् हिन्दू काल भी कहते हैं। इसमें हर्षवर्द्धन के काल तक (606-647 ई.) के राज-काज तथा भारत की उस समय की दशा तथा स्थिति की पढ़ाई की जाती है।

भारत का मध्यकाल भारत में सिंध के अरब आधिपत्य से शुरू होता है। मध्यकाल को कुछ विद्वान् इस्लामी काल भी कहते हैं। भारत के मध्यकाल की समाप्ति यूरोपियन जाति, जो मूलतः ईसाई थे, के भारत में पाँव पसारने के साथ समाप्त होती है।

मध्यकाल की समाप्ति के बाद के काल को आधुनिक भारत का काल कहा जाता है।

बी. ए. आनर्स के दौरान भारत के तीनों काल की पढ़ाई के अतिरिक्त यूरोप का इतिहास, ब्रिटेन का इतिहास एवं पश्चिमी तथा पूर्वी एशिया के इतिहास की पढ़ाई करनी पड़ती थी पर प्रोफेसर का मन भारत के मध्यकाल के अध्ययन में ही ज्यादा लगता था।

यह काल भारत में चतुर्दिक पतन की पराकाष्ठा का काल था। और इसकी शुरुआत हुई थी सिंध पतन से। एम. ए. में भी प्रोफेसर ने मध्य काल

के इतिहास का ही विशेष अध्ययन किया था। इसीलिए उसने पी. एच. डी. के लिए सिंध को ही चुना था।

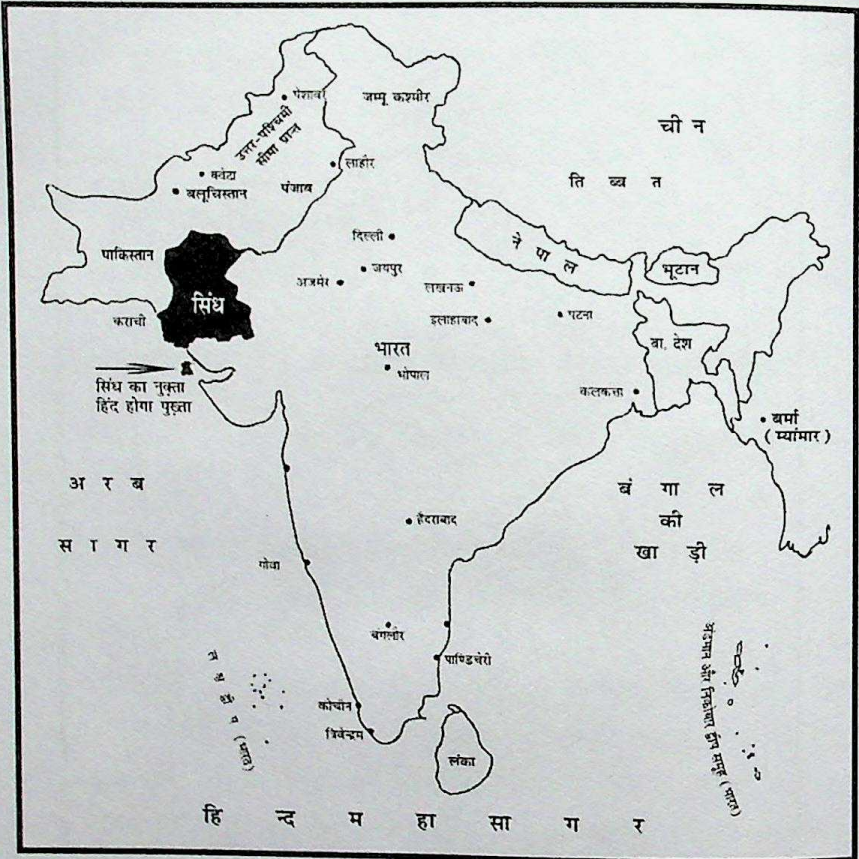
प्रोफेसर के दिमाग में यह बात बैठ गई थी कि सिंध के अनुभव को तत्कालीन भारतीय राजे-महाराजे तथा शासन और नीति निर्माण से संबद्ध समाज जिसमें उन दिनों राजपुरोहित तथा प्रभावशाली ब्राह्मण समाज भी आता था अगर परिस्थितियों का विश्लेषण एवं भविष्य को भांप कर अपनी रणनीति बनाते तथा अपने में सुधार करते तो वे न केवल सिंध को अरब दासता से मुक्ति दिलाते बल्कि शेष भारत को भी विदेशी गुलामी में जाने से रोकते।

विचार मग्न प्रोफेसर को थोड़ी देर तक देखते हुए कक्ष में आये प्रोफेसर बिपिन बिहारी ने हल्के से टोकते हुए कहा, “क्या सोच रहे हैं सर? यदि आप स्वीकृति दें तो हम अपनी एक बात आपसे कहना चाहते हैं।”

प्रोफेसर के विचार की तन्द्रा टूट गई। प्रोफेसर बिपिन को गौर से देखते हुए उन्होंने स्वीकृति स्वरूप अपनी हामी भरी।

प्रोफेसर बिपिन ने बोलना शुरू किया, “सर, सिंध को लेकर आपका विचार और आपकी योजना हम सबों को गरिमा प्रदान करायेगी। हमारा इतिहास विभाग इतिहास की घड़ी को एक बार उल्टी दिशा में ले जाने का प्रयास करने जा रहा है और वह भी देशहित में। पर क्या जितना बड़ा कार्य है उसके लिए उतने बड़े ही प्लेटफार्म का निर्माण नहीं किया जाना चाहिए? क्या इतिहास विभाग के स्थान पर सिंध निर्माण के मुहिम की शुरुआत पटना विश्व विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की सम्मिलित शक्ति के बलबूते क्यों न हो? भारत ही नहीं विश्व में अपने तरह का यह एक उदाहरण होगा। इसे हम सिंध स्थापना के द्वारा राष्ट्र के पुनर्निर्माण में पटना विश्व विद्यालय की भूमिका के तौर पर भी प्रस्तुत कर सकते हैं। सर, विश्व विद्यालय में आपका बहुत सम्मान है। सिंध निर्माण को लेकर आपकी इतनी अच्छी और व्यावहारिक योजना जब विश्व विद्यालय परिवार के सम्मुख रखी जायेगी तो सभी एकमत से तैयार हो जायेंगे। और जब इसकी ध्वनि गूँजेगी तो सारा भारत और सारा सिंधी समाज झंकृत हो जायेगा। इसलिए हमारी इच्छा है कि

पाकिस्तानी सिंध और प्रस्तावित हिन्दुस्तानी सिंध



कल के स्पेशल क्लास में अपनी बात रखने के स्थान पर आप सम्पूर्ण विश्व विद्यालय परिवार के सम्मुख सारी बातों को रखें। पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए थीसिस की भी चर्चा संक्षेप में जरूर करें। इससे सिंध के प्रति आपकी 30 वर्षों की प्रतिबद्धता के साथ ही वर्तमान परिदृश्य में आपकी सक्रियता को अच्छी प्रकार समझा जा सकेगा। फिर इसी के आलोक में सिंध निर्माण की आपकी योजना निश्चित रूप से परवान चढ़ेगी।”

प्रोफेसर आँखें बंद कर उनकी बात को सुन रहा था। उस समय तक तीन प्रोफेसर और आ गये थे। जब प्रोफेसर बिपिन की बात समाप्त हुई तो प्रोफेसर रघुनन्दन ने अपनी आँखें खोली। अकस्मात उठकर खड़ा हुआ और बिपिन बिहारी को उठकर गले लगाया। उन्हें खींचते हुए बाहर लाया और अपनी गाड़ी में बिठाया।

बिपिन बिहारी हक्के-बक्के थे। प्रोफेसर ने ड्राइवर को कुछ कहा। गाड़ी चल दी। गाड़ी विश्व विद्यालय कार्यालय के पास रूकी। कुछ ही पल में दोनों वाइस चांसलर के सामने बैठे थे।

वाइस चांसलर प्रोफेसर रघुनन्दन के प्रति सम्मान का भाव रखते थे। वो भी उनके सिंध समर्पण की कथा से पूर्ण वाकिफ थे। वाइस चांसलर ने उन्हें बधाई दी। सामान्य औपचारिकता के बाद जब वाइस चांसलर ने उनकी लम्बी अनुपस्थिति में प्राप्त उपलब्धि की चर्चा को विस्तार से आगे बढ़ाने में प्रोफेसर बिपिन बिहारी को साथ लेकर चलना शुरू किया तो उनको कुछ देर सुनने के बाद प्रोफेसर बिपिन बिहारी ने बातों का सूत्र अपने हाथों में लेते हुए वाइस चांसलर को विस्तार में प्रोफेसर रघुनन्दन की इच्छा और योजना बताई तथा उसके बाद अपनी मंशा बताई।

वाइस चांसलर की तो मानो बाछें खिल उठी। वी. सी. ने कहा, “अरे रघुनन्दन बाबु, आपकी जय हो! इस विचार पर मैं बलिहारी जाऊँ। पूरा पटना विश्व विद्यालय आपकी योजना पर खड़ा हो जायेगा। हमारा सौभाग्य है कि अभी मैं वी. सी. हूँ। सिंध निर्माण के मुहीम की शुरूआत आप अपने विश्व विद्यालय से कीजिए। सिंध निर्माण ही नहीं, राष्ट्रगान की पूर्णता सहित एक महान समाज की पूर्ण संतुष्टि का शंखनाद आप कीजिए। मैं तन-मन से आपके साथ हूँ। जैसा आप कहेंगे वैसा होगा।”

प्रोफेसर रघुनंदन गंभीर हो गया। उसकी आँखें नम हो गईं। उसने कहा, “सर, आपके इस विश्वास और सहयोग को देखकर हमारा कलेजा भर आया है। सर, इस अभियान का शंखनाद, जैसा आपने कहा है, ही इस प्रकार हो कि पूरे देश में सिंध का विस्फोट हो जाय। पर यह विस्फोट कर्णप्रिय होगा। प्रेरणादायी होगा। राष्ट्रवाद की चासनी में सना होगा और राष्ट्र निर्माण की चपलता से भरा होगा। इस मधुर विस्फोट की अनुगूँज ऐसी हो कि जब तक सिंध निर्माण न हो तब तक इसकी प्रतिध्वनि देशवासियों और विश्व भर के भारतवंशियों के कानों में गूँजती रहे।”

इतना बोलते-बोलते प्रोफेसर का गाम्भीर्य विलीन हो गया और चेहरा आशा और विश्वास से रक्ताभ हो उठा।

वी. सी. उसके चेहरे को देखते रहे। जब वी. सी. देर तक प्रोफेसर को निर्निमेष देखते रहे तो प्रोफेसर ने थोड़ा झेंपते हुए कहा, “आप इस तरह हमें क्यों देख रहे हैं। मैं तो आपकी बातों से आह्लादित हूँ”

वी. सी. बीच में ही उनकी बात को काटते हुए कहा, “रघुनंदन जी, मुझे आपके चेहरे में सिंध का नूर फूटता नजर आ रहा है। अब सिंध के नूर से पूरे भारत को कैसे आलोकित करेंगे यह बताइये। अभी लोहा गर्म है। जल्दी चोट कीजिए। भारत सरकार, सिंधी समाज, मीडिया सभी सिंध को लोक लेंगे। बस। हम लोग राष्ट्रीय पटल पर इस विचार को रखें और निर्माण के व्यावहारिक पहलुओं को उजागर करें।”

कुछ देर की वार्तालाप के बाद यही तय हुआ कि विश्व विद्यालय के सारे कॉलेजों के प्रिंसिपल, सभी स्नातकोत्तर विभागों के विभागाध्यक्ष तथा विश्व विद्यालय के सारे अधिकारी एवं विभिन्न छात्र संगठनों के सभी प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई जाय। एक कोर कमिटी बने तथा आगे की कार्यवाही तय की जाय।

‘सिंध निर्माण में पटना विश्व विद्यालय की पहल’ शीर्षक से एक नोट तैयार किया गया। उसमें सारी बातों को संक्षेप में लिखा गया। पहल को आगे बढ़ाने के लिए प्राथमिक बैठक का समय आगामी रविवार को दिन के

11 बजे रखा गया। जब निवेदक के लिए नाम लिखने की बात आई तो वी. सी. के निर्देश पर प्रोफेसर रघुनन्दन सिंह, इतिहास विभागाध्यक्ष, पटना विश्व विद्यालय लिखा गया। बैठक का स्थान दरभंगा हाउस का गंगा जी के सामने का बरामदा रखा गया। दो सौ से ऊपर लोगों के आने की संभावना को ध्यान में रखकर अन्य व्यवस्था पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

शाम को जब प्रोफेसर घर आया तो अकस्मात् उसकी प्रसन्नता ने अपना संस्करण रोमांटिक अंदाज में पेश किया। फ्लैट की घंटी बजते ही जानकी ने दरवाजा खोला। संयोग से ड्राइंग रूम में कोई नहीं था। प्रोफेसर जानकी के मोहक अधरों को तेजी से चूम लिया। जब तक जानकी सम्भले तब तक उसने उसके दोनों गुलाबी कपोलों को भी चूम लिया। जानकी ने अपने से लिपटे प्रोफेसर को स्नेह से धकेलते हुए कहा, “आज शाम से ही बहुत मस्ती चढ़ी हुई है। कोई देखेगा तो आपकी सारी गंभीरता की पोल खुल जायेगी। ऊपर से सादा पर भीतर से व्याधा। चुपचाप जाईये। हाथ-मुंह धोकर चाय पी लीजिए। बहुत छटपटाने का अभी कोई लाभ नहीं है।”

आज की शाम बालकोनी में पीनेवाली चाय का जायका ही दूसरा था। प्रोफेसर जानकी को दिन भर की गतिविधियों से अवगत करा रहा था कि जानकी ने पटना के सभी परिचित सिंधी जनों से भी मिलने की आवश्यकता जताई।

प्रोफेसर तत्काल पटना के करीब बीस सिंधी लोगों से मोबाइल द्वारा बात की। सबों को सिंध निर्माण से जुड़ी गतिविधियों की सूचना दी और रविवार की बैठक के बाद सबों से मिलने और आगे की रणनीति पर चर्चा करने की बात कही। अधिकांश लोगों ने उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया। सिंधी भोजन का मजा आराम से लेने की रसभरी बातों के बीच ही पटना वि.वि. के चांसलर (राज्य के गवर्नर) का फोन आ गया।

गवर्नर के ए.डी.सी. दीपक संधालिया ने कहा कि गवर्नर साहब आपसे बात करना चाहते हैं। उसके बाद उधर से आवाज आई, “...हेलो। मैं नारायण भारती बोला रहा हूँ। सबसे पहले आप हमारा नमस्कार और अभिनन्दन स्वीकार करें।”

प्रोफेसर ने कहा, “सर, आप भी हमारा नमस्कार स्वीकार करें। हमारा सौभाग्य कि आपने हमें याद किया। कोई आज्ञा है तो कृपया बतायें।”

उधर से आवाज आई, “देखिये, आपके वी.सी. डॉ. दामोदर प्रसाद ने हमें आपके बारे में बताया है। दरअसल मैं हूँ तो मराठी मूल का, पर हमारा जन्म कराँची में हुआ था। हमारे पिताजी भारत विभाजन के समय सिंध में रेलवे के बड़े अधिकारी थे। भारत विभाजन के समय हमारी उम्र 10 वर्ष की थी। पिता जी के साथ मैंने ट्रेन से सिंध के कई स्थानों की यात्रा की थी। विभाजन के समय की कुछ त्रासदी देखी है।

एक बार प्रसंगवस मैंने दामोदर जी को यह सब बताया था। वही उनको याद था। आज सिंध से संबंधित गतिविधियों की आपसे चर्चा के बाद उन्होंने हमें बताया। हमें बड़ी खुशी हुई। बस मैं इतना ही आग्रह करूँगा कि इस मुहिम में पटना विश्व विद्यालय का चांसलर होने के नाते मेरी भी भूमिका होगी। रविवार की बैठक को आप कर लें। जो भी निर्णय हो उससे हमें भी अवगत करायें। जो हमसे बन पड़ेगा मैं भी सिंध निर्माण के पुनीत प्रयास में अपना सहयोग करूँगा। रविवार को रात्रि भोजन पर मैं आपको आमंत्रित करता हूँ। श्रेष्ठतम प्रयास के लिए हमारी ओर से ठेर सारी शुभकामनाओं सहित धन्यवाद।”

प्रोफेसर बालकोनी से अपने अध्ययन कक्ष में आया और कंबल बिछा पालथी मारकर बैठ गया। सबसे पहले उसने अपनी सनसनाती खुशी को संयत करने के लिए देर तक लम्बी-लम्बी सांसें ली। जब चित्त कुछ स्थिर हुआ तब भारत माता के प्राकृतिक रूप को मानस पटल पर लाया। कुछ देर के बाद असांजी प्यारी सिंध को वर्तमान भारत के गुजरात राज्य के कच्छ के समुद्री तट के नजदीक सरका कर ध्यान में उसी दृश्य को देर तक देखता हुआ उसमें खुद को लीन करने का प्रयास करता रहा।

तेजी से बदलते सकारात्मक घटनाओं ने मन में उथल-पुथल मचाने की स्थिति पैदा कर दी थी। जब मन पर संयम बनता दिखा तभी प्रोफेसर कंबल से उठा और अपनी पत्नी के पास जाकर बैठ गया।

जानकी को सब कुछ बताता और इधर-उधर की बातों से अपना मन बहलाता देर तक बैठा रहा। जब लगा कि अब मन स्थिर हो चला है तो रात्रि का भोजन कर पुनः अपने अध्ययन कक्ष में आ अपने थीसिस को निकाल पढ़ने लगा।

रविवार की बैठक तय समय पर शुरू हुई। विश्व विद्यालय के हर वर्ग का नेतृत्व करते लोग आये हुए थे। सामने गंगा की शीतल धारा बही चली जा रही थी। पूरा बरामदा और बरामदा के नीचे का हिस्सा भरा था। इतिहास विभाग के छात्र स्वयंसेवक की भूमिका में मुस्तैद थे। जब कार्यक्रम प्रारंभ ही होने वाला था कि गर्वनर हाउस से ए.डी.सी. दीपक संधालिया आये और उन्होंने प्रोफेसर रघुनंदन को गवर्नर (चांसलर) का भेजा उपहार दिया। यह चार×छः फीट का सिंध का लपेटा हुआ नक्शा था। जब दीवाल के सहारे उसे लटकाया गया तो बैठक की गरिमा और उसका आशय जीवंत हो उठा। प्रोफेसर ने तुरंत टेबुल पर चढ़ नक्शे के ऊपर 'असांजी प्यारी सिंध' और नीचे 'वन्दे सिंध वन्दे' लिख दिया।

था तो यह पाकिस्तानी सिंध का नक्शा पर उसकी आँखों में बसी सिंध की वाह्य आकृति प्रोफेसर के उत्साह को दुगना कर रही थी।

बैठक की अध्यक्षता का जिन्मा डॉ. वी.सी. दामोदर प्रसाद को दिया गया। बैठक की कार्यवाही को शुरू करते हुए दामोदर प्रसाद ने बैठक की शुरूआत सिंध प्रांत के बीचोबीच बहने वाली महान सिंधु और गंगा जी की चर्चा से की। उन्होंने कहा कि बिहार में भी गंगा ठीक बिहार के बीचोंबीच बहती है। उन्होंने दोनों नदियों की महानता पर रोशनी डाली। डॉ. दामोदर ने चांसलर साहब द्वारा इस बैठक के लिए भेजे गये इस उपहार के लिए उन्हें एवं वहाँ उपस्थित ए.डी.सी. को धन्यवाद दिया। उन्होंने कुछ देर बाद प्रोफेसर रघुनन्दन को आमंत्रित किया और कहा कि वो इस बैठक के उद्देश्य को रखें।

प्रोफेसर ने भी अपनी बात की शुरूआत सिंधु नदी और गंगा जी की चर्चा से ही शुरू की। नक्शे में सिंधु नदी का चित्रण मोहक ढंग से किया

कश्मीर, पंजाब और हिमाचल प्रांत में बहने वाली कपिशा, झेलम, चिनाव रावी, सतलज और व्यास के सारे जल को समेटते हुए अरब सागर में मिलती है। ठीक वैसे ही जैसे हमारी गंगा उत्तर, मध्य और पूर्वी भारत की लगभग सारी नदियों के जल को समेटते हुए बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

प्रोफेसर ने विस्तार से सिंध की पृष्ठभूमि से लेकर सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिका की चर्चा की। याचिका के परिणाम को बताया। उसके बाद सिंध निर्माण को लेकर अब तक की गतिविधियों का ब्यौरा बैठक में प्रस्तुत किया। 'सिंध निर्माण में पटना विश्व विद्यालय की पहल' का उल्लेख होते ही देर तक तालियों का दौर चलता रहा। बैठक में उपस्थित एक प्रोफेसर के असांजी प्यारी सिंध बनायेंगे-बनायेंगे बोलते ही सैकड़ों कंठों से यही ध्वनि जोर-जोर से होने लगी। उसके बाद देर तक वन्दे सिंध वन्दे का घोष होता रहा। प्रोफेसर के हाथ जोड़ कर आग्रह के बाद ही नारेबाजी बंद हुई। जब उसने चांसलर की इस विषय में अभिरूचि की चर्चा की तथा उनके द्वारा भेजे नक्शे को सोने में सुहागा जैसा बताया तो पुनः तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गुंजायमान हो उठा।

प्रोफेसर ने उपस्थित महानुभावों से आग्रह किया कि सिंध निर्माण से संबंधित अपना विचार, अपनी भावना और अपने सुझाव को यहाँ रखें और एक मत से जो भी निर्णय हो प्रणप्राण से उसे पूरा करने में हम सभी लग जायें।

करीब चार घंटे तक चली इस बैठक में लगभग सभी विषयों का उल्लेख हुआ। कई वक्ताओं ने अपने विचार और सुझाव रखे। सर्वसम्मति से जो विचार और सुझाव बैठक की कार्यवाही में निर्णय के तौर पर लिये गये, वे इस प्रकार थे—

1. इस मुहीम को चलाने के लिए पटना विश्व विद्यालय के सारे शिक्षक एवं स्टाफ से एक सप्ताह की तनख्वाह को दान में देने का आग्रह किया गया। वाइस चांसलर सहित वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने इस माँग का अनुमोदन किया। पटना विश्व विद्यालय के सभी छात्रों से 11/- रुपये से

लेकर 1000/-रूपये के बीच की कोई भी राशि सिंध निर्माण की पहल को आगे बढ़ाने के लिए देने का प्रस्ताव माना गया। वहाँ उपस्थित सभी विद्यार्थी प्रतिनिधियों ने इसका अनुमोदन किया।

2. पटना विश्व विद्यालय के अर्थशास्त्र और कॉमर्स विभाग के पाँच प्रोफेसर की एक समिति बनाई गई और उन्हें ही सारी आर्थिक गतिविधियों के नियंत्रण का दायित्व दिया गया।

3. निर्णय हुआ कि यदि प्रभु कृपा से सिंध निर्माण का यह आन्दोलन राष्ट्रीय स्तर का हो जायेगा और सिंध निर्माण की प्रक्रिया अपना साकार रूप लेने लगेगी तब राष्ट्रीय सिंध निर्माण समिति का निर्माण किया जायेगा। अभी पहल की बागडोर पटना विश्व विद्यालय के हाथों में उस स्टेज के आने तक बनी रहेगी।

4. पटना विश्व विद्यालय की एक आम सभा आयोजित की जायेगी। इसमें सभी विद्यार्थी, शिक्षक, अन्य कर्मचारी तथा विश्व विद्यालय के पुराने छात्रों से आग्रह किया जायेगा कि वो आयें और उसी सभा में सिंध निर्माण का शंखनाद करें। इस सभा में प्रान्तीय ही नहीं राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सिंधीजनों एवं उनके संगठनों से आग्रह किया जायेगा कि वो आयें और इस मुहीम को अपने सपनों के अनुरूप ढालने में अपनी निर्णायक भूमिका का निर्वहन करें। निर्णय हुआ कि बाहर से आये सारे सिंधी अतिथि को होटल में नहीं ठहराकर उन्हें पटना विश्व विद्यालय के शिक्षक अपना निजी अतिथि बनाकर अपने-अपने निवास स्थान पर रखेंगे।

5. सिंध के बारे में सारे देश में जानकारी एवं जागरूकता के लिए सिंध से संबंधित पेपर पढ़े जायेंगे। ये सारे पेपर विभिन्न सिंधी विद्वानों द्वारा पढ़े जायेंगे। पर सबसे पहले प्रोफेसर अपनी थीसिस, 'भारतीय इतिहास में सिंध उपेक्षा के दुष्परिणाम' को संक्षेप में रखेंगे।

6. शंखनाद के साथ ही सिंध प्रांत की प्राणप्रतिष्ठा भी करने का निर्णय हुआ। सफेद संगमरमर के विशाल पट्ट पर सिंध की आकृति को

उसमें जीवंत करने का प्रयास होगा। यह 'सिंध प्राणप्रतिष्ठा' दरभंगा हाउस से सटे गंगा जी के घाट के किनारे होगा। विश्व विद्यालय प्रशासन से इसके लिए कानूनी स्वीकृति ली जायेगी। प्राण प्रतिष्ठा स्थल सिंध मंदिर या वन्दे सिंध वन्दे मंदिर के सदृश्य होगा जिसे एक बड़े गर्भगृह के रूप में विकसित किया जायेगा।

7. पूरे दिन भर चलने वाले इस सम्मेलन के लिए एक सूचना केन्द्र तथा मीडिया सेंटर बनाने का निर्णय लिया गया। प्रचार सामग्री का निर्माण, लिफ्लेट्स बनाना तथा विज्ञप्ति आदि जारी करने का जिम्मा एक समिति को दिया गया। जिसके नेतृत्व का भार प्रोफेसर रघुनंदन को दिया गया।

8. सभा स्थल के लिए पटना कॉलेज के गंगा किनारे के मैदान को उपयुक्त समझा गया। इस मैदान से दरभंगा हाउस के गंगा किनारे के प्रस्तावित वन्दे सिंध वन्दे मंदिर की दूरी मात्र चार सौ फीट होने के कारण ही ऐसा निर्णय हुआ।

9. सारी तैयारियों के लिए सौ दिन का समय लिया गया और तय हुआ कि सितम्बर माह की 21 ता. को सिंध प्रांत की प्राण प्रतिष्ठा और सिंध निर्माण का शंखनाद किया जाय।

10. पटना जंक्शन और पटना एयरपोर्ट से लेकर सभा स्थल तक तोरण द्वार बनाने, सभा स्थल का निर्माण आदि के लिए अलग समिति का गठन किया गया।

11. चांसलर के नेतृत्व में एक कोर समिति के गठन का निर्णय हुआ, जिसमें वाइस चांसलर सहित ग्यारह सदस्यों को रखा गया। प्रोफेसर रघुनन्दन को कार्यकारी प्रधान बनाने का निर्णय लिया गया।

12. निर्णय हुआ कि जब तक भारत सरकार सिंध निर्माण की प्रक्रिया में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित नहीं करेगी; तब तक किसी भी प्रकार के सरकारी सहयोग को टाला जाय। देश-विदेश के सिंधी समाज को सिंध निर्माण की केन्द्रीय भूमिका में लाने की पृष्ठभूमि तैयार की जाय।

आज के सिंधी समाज की क्षमता, सफलता एवं प्रभाव को पूरा उपयोग

किये जाने का निर्णय लिया गया। सिंधु निर्माण के निर्णायक मंडल में उन्हें उल्लेखनीय भूमिका दिये जाने की पृष्ठभूमि बनाई जाय। यह स्वाभाविक और व्यावहारिक होगा।

अभी तत्काल पटना विश्व विद्यालय के अतिरिक्त सामान्य जनता के दान के पैसे से ही पहल की गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाय।

13. यदि बिहार सरकार सिंधु निर्माण को अपना खुला समर्थन देगी तो बिहार सरकार से विनम्र आग्रह किया जायेगा कि बिहार सरकार अन्य राज्यों तथा केन्द्र सरकार से भी ऐसा करने का आग्रह करे।

14. देश की जनता से इस अभिमान हेतु आगे बढ़ने के आग्रह के पूर्व आम बिहारी को इस महान राष्ट्रीय अभियान से जुड़ने के आग्रह का निर्णय लिया गया।

15. सफेद संगमरमर के शिलापट्ट पर उत्कीर्ण सिंधु के नक्शे को प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व स्नान कराने के लिए पाकिस्तानी सिंधु के सिंधु नदी की प्रवाहमान धारा से एक सौ ग्यारह कलश सिंधु जल मंगाने का निर्णय लिया गया। उस जल में गंगा जल मिलाकर सिंधु के नक्शे का महामस्तकाभिषेक का निर्णय लिया गया।

16. निर्णय लिया गया कि सिंधु निर्माण का संकल्प लेने वालों से आग्रह किया जायेगा कि वो यदि गले में कुछ पहनते हैं तो उसमें सिंधु का लॉकेट लगा सकते हैं। यदि टैटू बनवाते हैं तो सिंधु का टैटू अपने हाथ, छाती, पीठ आदि में बनवा सकते हैं। असांजी प्यारी सिंधु की आकृति वाले टी शर्ट पहनने का फैशन चला सकते हैं।

17. निर्णय हुआ कि चांसलर साहब द्वारा भिजवाये गये नक्शे जैसा ही छोटा-बड़ा एक हजार नक्शा बनवाया जाय और उससे पटना की सड़कों और सभा स्थल को पाट दिया जाय।

18. सिंधु, सिंधीजन एवं सिंधी साहित्य-संस्कृति आदि के लिए अपनी उल्लेखनीय सेवा देने वाले कुछ सिंधी सज्जनों को भी सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। सिंधु निर्माण के लिए एक सोविनियर निकालने का निर्णय लिया गया।

इसके अतिरिक्त अन्य बातों की भी चर्चा हुई। निर्णय हुआ कि वाइस चांसलर के कार्यालय में साप्ताहिक बैठक होती रहेगी, जिससे गतिविधियों की समीक्षा होते रहने से तैयारी में कोई कमी नहीं रहेगी।

बहुत ही हर्ष और हंसी-खुशी के माहौल में बैठक सम्पन्न हुई। चांसलर द्वारा भिजवाये सिंध के नक्शे को श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रोफेसर रघुनंदन के कक्ष में दीवाल को साफ-सूथरा कर लटकाया गया। इतना सब होते-होते शाम के चार बज गये। प्रोफेसर अपने घर आया। चांसलर के यहाँ जाने के बारे में निर्णय यह हुआ कि वी.सी. डॉ. दामोदर प्रसाद, प्रोफेसर रघुनंदन, पटना कॉलेज के प्रिंसिपल, वीमेन्स कॉलेज की प्रिंसिपल तथा प्रोफेसर बिपिन बिहारी 8 बजे राज्य भवन पहुँचेंगे और बैठक के निर्णयों से उन्हें अवगत करायेंगे।

चांसलर नियत समय पर प्रतीक्षा कर रहे थे। चूँकि वे दामोदर प्रसाद से परिचित थे इसलिए दामोदर प्रसाद ने सबों का परिचय कराया। प्रोफेसर रघुनंदन से परिचय कराते समय उन्होंने प्रोफेसर रघुनंदन को गले लगा लिया।

जब सभी बैठ गये तो चांसलर ने प्रोफेसर रघुनंदन की ओर मुखातिब होते हुए पूछा कि आज की बैठक में क्या निर्णय हुआ? प्रोफेसर ने विस्तार में सारी बातों को बताया और कोर कमिटी के गठन में उनके नेतृत्व की बात कही।

चांसलर ने आगे की तैयारियों के बारे में कई सुझाव दिये। साप्ताहिक बैठक में नियमित आने की बात कही। जब वी.सी. ने उनकी सुविधा के लिए कोर कमिटी की बैठक राजभवन में ही करने की बात कही तो चांसलर ने अभियान की गरिमा को बचा और बना कर रखने के लिए विश्व विद्यालय प्रांगण में ही आने को श्रेयकर माना।

जब वी.सी. दामोदर प्रसाद ने चांसलर से तैयारियों के बारे में कुछ और बात करनी चाही तो चांसलर ने कहा कि अब तैयारियों की चर्चा आपके कार्यालय में ही कोर कमिटी की बैठक में होने से पारदर्शिता दिखेगी।

परिवार तथा जीवन के अन्य पहलुओं पर बातें करते रहे। चांसलर ने सिंध में बिताये अपने बाल्यकाल के अनुभवों की भी चर्चा की। जब प्रोफेसर रघुनंदन ने उनसे सिंधु नदी को देखने और उसमें स्नान करने के बारे में पूछा तो चांसलर नारायण भारती कुछ सोचने की मनःस्थिति में आ गये। एक दो मिनट की चुप्पी के बाद उन्होंने कहा, “रघुनंदन जी, एक बार पिता जी परिवार के साथ लाहौर से कराँची आ रहे थे। सिंध में रोहड़ी महान सिंधु नदी के किनारे एक बड़ा और प्राचीन नगर है। वहाँ रेलवे का एक बड़ा ब्रिज है। सिंधु के उस पार सक्कर नाम का प्रसिद्ध नगर है। यह ब्रिज दोनों नगरों को जोड़ती है। वहीं सिंधु नदी में साधुबेला नाम का एक टापू है जो हिन्दुओं के लिए बड़ा धार्मिक स्थल है।

माँ ने पिता जी से साधुबेला देखने की इच्छा जताई। इसीलिए पिता जी रोहड़ी में ही उतर गये। हम लोगों ने दोनों शहरों को देखा। लेकिन जो बात सबसे महत्वपूर्ण है वह है साधुबेला को देखने के पूर्व सिंधु नदी में स्नान का अनुभव। स्नान के क्रम में मैं डूबते-डूबते बचा था। अभी भी याद है कि एक साधु ने हमारी जान बचाई थी। चूँकि माँ के सामने यह सब हुआ था इसलिए माँ उस दिन न केवल श्रद्धापूर्वक पूजा-पाठ की बल्कि रात्रि प्रवास कर दूसरे दिन पूजा-पाठ कर ही कराँची के लिए हमलोग निकले।”

अकस्मात् नारायण भारती को समय का भान हुआ और उन्होंने सबों से भोजन के लिए आग्रह किया। भोजनादि से निवृत्त होते-होते रात्रि के 10.30 हो गये।

दो दिन बाद ही रविवार था। बैठक के लिए वी.सी. के चेम्बर में कुर्सियों की नये ढंग से व्यवस्था की गई।

कोर कमिटी की पहली बैठक के पूर्व प्रोफेसर ने बुजुर्ग श्री पोलन दास भवनानी के यहाँ पटना के अपने सभी परिचित सिंधी सज्जनों की एक बैठक आयोजित कराई। उनके सभी परिचित सिंधी भाई-बहन तो आये ही थे, इसके अतिरिक्त करीब पचास अन्य भाई-बहन भी आये थे। सभी नये चेहरों से परिचय हुआ। प्रोफेसर ने इतने दिनों के अपने संस्मरण सुनाये तथा चांसलर (गर्वनर) तक के मुलाकात की बातों से उन्हें अवगत कराया।

तलरेजा जी ने कहा, “प्रोफेसर साहब, क्या भारत में सिंध बनेगा ? सच कहता हूँ कि यकीन नहीं होता है कि सिंध नाम का राज्य भी भारत में बनेगा। यदि ऐसा होता है तो आप भारत के इतिहास में अमर हो जायेंगे।”

प्रोफेसर ने उन्हें रोकते हुए कहा, “अरे तलरेजा साहब, मैं तो भारतीय इतिहास का मात्र एक विद्यार्थी हूँ। बस ऐतिहासिक भूल सुधार की बात की है और सारे लोग खड़े हो गए हैं। यह राष्ट्रगान के गरिमा की ताकत है और यह देशवासियों की अपनी ऐतिहासिक भूल सुधार की प्रतिबद्धता होगी कि सिंध राज्य के बनने की संभावना दिखने लगी है। क्या पोलन साहब?”

पोलन साहब ने अपनी धीमी आवाज में कहा, “देखिये, आप तो इतिहास के विद्वान् हैं। पर आपने सुना ही होगा कि इतिहास अपने को दुहराता है। लगता है यह कथन सत्य होने वाला है। यदि ऐसा होता है तो सिंधियों को इस बार ऐतिहासिक ही नहीं भविष्य की भी परीक्षा देनी होगी। सिंध के निर्माण में उनकी कैसी भूमिका होती है, कैसा सिंध वो बनाते हैं, केवल यहूदियों से अपनी तुलना ही करते हैं या उन जैसी कर्मठता, दृढ़ता और वीरता भी प्रदर्शित करते हैं- इन सारी चीजों की परीक्षा होगी। अब सिंधी अपनी ऐतिहासिक भूलों को दुहराने से खुद बचें और अपने प्यारे देश भारतवर्ष को भी बचायें- यह भी देखना होगा। वैसे सिंध निर्माण के इस यज्ञ में मैं अपनी बैंक में जमा पूँजी का आधा हिस्सा आहुति के तौर पर भेंट करता हूँ जो नौ लाख रुपये का है। इतना कहते हुए उन्होंने नौ लाख रुपये का चेक, जो प्रोफेसर रघुनंदन सिंह के नाम था, उसको थमा दिया। प्रोफेसर सहित वहाँ सारे उपस्थित लोग भौंच्चके थे।”

प्रोफेसर की आँखें आँसुओं से भरी थी। प्रोफेसर ने पहली मुलाकात के समान ही इस बार भी भावना के उद्रेक को महसूस किया और चेक को कुर्सी पर रख उनके दोनों पाँव को पकड़ अपना सर उस पर रख दिया। पोलन साहब की अंगुलियाँ प्रोफेसर के बालों को सहला रही थी। देर तक सभी उस भावमय दृश्य को देखते रहे। पोलन साहब ने पानी मंगवाया और प्रोफेसर को अपने हाथों से पानी पिलाया।

थोड़ी देर बाद 21 सितम्बर की तैयारियों की चर्चा होने लगी। प्रोफेसर ने अपनी इच्छा जताई, “हम चाहते हैं कि पूरी दुनिया के सिंधी 21 सितम्बर की सभा में हिस्सा लें। उनकी संख्या दिल्ली वाले पथ संचलन से कम न हो। हम यह भी चाहते हैं कि सम्मेलन इतना प्रभावशाली हो कि भारत सरकार तत्काल सिंध निर्माण की प्रक्रिया को अमली जामा पहनाने के लिए कार्यवाही शुरू कर दे। देश-विदेश का पूरा सिंधी समाज खड़ा हो जाये और इसकी कमान थामे।”

प्रोफेसर कुछ देर रुककर बोला, “कोर समिति की पहली बैठक में हमारा एक प्रस्ताव होगा कि पटना के सिंधी समाज के तीन व्यक्ति अतिथि सदस्य के तौर पर हर बैठक में हिस्सा लें और 21 सितम्बर की तैयारियों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभायें।” वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने तालियाँ बजाकर इस प्रस्ताव का स्वागत किया।

पहली बैठक में कोर कमिटी के सभी ग्यारह सदस्य उपस्थित थे। इसी बैठक में प्रोफेसर ने तीन सिंधी अतिथि सदस्यों डॉ. अशोक भवनानी, श्री पी.सी. दास एवं श्री सुरेशचन्द्र तलरेजा के नामों का प्रस्ताव रखा, जिसे सबों ने सहर्ष स्वीकार किया। इन्हें नियमित आना था एवं ये तीनों भी अब कोर कमिटी के स्थाई सदस्य हो गये थे।

आगे नियमित बैठकें होती रहीं और तैयारियों की रूपरेखा स्पष्ट होती गई। उसी के अनुरूप कार्यक्रम के निष्पादन की कड़ियाँ जुटती गईं।

सबसे पहले पूरे भारतवासियों के लिए सिंध निर्माण हेतु एक अपील जारी करने के निर्णय का कार्यान्वयन होना तय हुआ। उसके बाद देश-विदेश में बसे सिंधी भाई-बहनों के लिए सिंध निर्माण में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने की अपील जारी करने की बात तय हुई। दोनों अपीलों को तैयार कर बुकलेट्स, लिफ्लेट्स, मीडिया, फेसबुक, ट्यूटर, इंटरनेट आदि पर शीघ्रातिशीघ्र प्रसारित करने का दायित्व प्रोफेसर रघुनंदन को दिया गया।

जब सिंध के शिलापट्ट वाले नक्शे के महामस्तकाभिषेक के लिए सिंधु नदी के जल को लाने के बारे में सोचा जाने लगा तो प्रश्न उठा कि

कहाँ से जल को लाया जाय। एक प्रस्ताव था कि भारत में लद्दाख के लेह में बहने वाली सिंधु नदी से ही जल लाया जाय। दूसरा प्रस्ताव जो प्रोफेसर रघुनंदन का था कि साधुबेला (पाकिस्तानी सिंध) से जल लाया जाय। तीसरा प्रस्ताव सिंधी अतिथि सदस्य श्री दास का था कि सिंधु नदी जहाँ अरब सागर से मिलती है, थोड़ा उससे ऊपर के सिंधु जल को लाया जाय। श्री दास का कहना था कि चूँकि यह जल अपनी सम्पूर्ण यात्रा कर सिंध प्रांत को सींचते हुए अब अरब सागर में मिलने वाली है इसलिए यह सम्पूर्ण सिंधु नदी का जल हुआ। प्रोफेसर रघुनंदन ने उनकी बात का समर्थन किया। जब यह समाचार पाकिस्तान और पाकिस्तानी सिंध में प्रसारित हुआ तो मीडिया ने खुशी जाहिर की। सिंधी जनता भी इससे बहुत खुश हुई और इसे सिंध और सिंधु नदी का सम्मान माना। बाद में पाकिस्तानी सरकार के निर्देश पर सिंध प्रशासन ने बहुत ही पवित्रता के साथ एक सौ ग्यारह कलश जल को लाने में मदद की।

पूरी देश-दुनिया में फैले सिंधीजनों से सम्पर्क का जिम्मा तीनों अतिथि सिंधी सदस्यों को दिया गया। उन्होंने इसे बखूबी निभाया और बड़ी संख्या में उनके आने की पुष्टि होती गई।

और भिन्न-भिन्न कार्यों और तैयारियों के लिए अलग-अलग समितियाँ बनाई गई। दायित्व दिये जाने लगे। मीडिया सिंध निर्माण के अपीलों, विज्ञप्तियों, गतिविधियों और खबरों से पटा रहता था। आयोजकों को प्रशासन का हर स्तर पर सहयोग मिल रहा था जिससे उत्साह दुगुना हो रहा था। पूरे दरभंगा हाउस, हाउस से सटे गंगा का किनारा और पूरे पटना कॉलेज के प्रांगण की छटा ही बदलने लगी थी।

आखिरकार 21 सितम्बर की तारीख नजदीक आ गई और तैयारियाँ अपने अंतिम रूप में दृष्टिगोचर होने लगी।

अनुमान था कि देश-विदेश से करीब 15 हजार सिंधी भाई-बहन इस सम्मेलन में हिस्सा लेने आ रहे हैं। आयोजन समिति मीडिया के सम्मुख इस उल्लेखनीय तथ्य को बार-बार रख रहे थे। पटना विश्व विद्यालय से जुड़ा हर व्यक्ति न केवल अपना अंशदान दे चुका था बल्कि अपने विश्व विद्यालय की गरिमा के बढ़ते दायरे को देखकर प्रसन्न था। न मालूम कैसे

यह धारणा फैलती और प्रबल होती जा रही थी कि यदि सिंध निर्माण की कल्पना साकार हो गई तो निश्चित रूप से पटना विश्व विद्यालय को केन्द्रीय विश्व विद्यालय की मान्यता मिल ही जायेगी।

दान में इतना पैसा आ रहा था कि किसी भी काम में आनेवाला खर्च कुछ लगता ही नहीं था। 21 सितम्बर कि लिए 25 हजार लोगों के नाश्ते एवं भोजन की व्यवस्था की जा रही थी।

21 सितम्बर 2005 का दिन। करीब 18 हजार से ऊपर सिंधी समाज के लोग पटना पहुँच चुके हैं। उनके लिए पटना विश्व विद्यालय से जुड़े हर व्यक्ति ने अपने दरवाजे खोल रखे हैं। पटना विश्व विद्यालय के हजारों छात्र-छात्रायेँ स्वयंसेवक की भूमिका में लगे हैं। पटना जंक्शन एवं पटना एअरपोर्ट से लेकर अतिथियों के ठहराव स्थल एवं आयोजन स्थल तक की व्यवस्था उनके नियंत्रण में है।

तय कार्यक्रम के अनुसार दिन के नौ बजे दरभंगा हाउस के पास संगमरमर की शिला पर उत्कीर्ण सिंध के नक्शे की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। सिंधु और गंगा के सम्मिलित जल से सिंध का महामस्तकाभिषेक किया जाता है।

पूरे बिहार से आये 101 श्रेष्ठ शंख ध्वनि वादन करने वाले लोगों की शंख ध्वनि के साथ प्राणप्रतिष्ठा पूर्ण होती है।

हजारों-हजार लोगों की उपस्थिति में वन्दे सिंध वन्दे की उद्घोषणा होती है। उसके बाद पुष्पांजलि की शुरुआत हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा से होती है। लोग पंक्तियों में लग कर नजदीक से पुष्प अर्पित करते हैं। नदी किनारे से लेकर पूरे दरभंगा हाउस परिसर में लोगों का हूजूम उमड़ा पड़ा जाता है। आयोजन समिति की अपील पहले ही आ चुकी है कि बाहर से आने वाले सिंधी भाई-बहनों को सबसे पहले पुष्पांजलि अर्पित करने दिया जाय।

पटना कॉलेज के गंगा किनारे वाले मैदान में बने मंच से ही आज के दिन भर के कार्यक्रम संचालित होने हैं। मंच के पीछे असांजी प्यारी

सिंध - हमारी प्यारी सिंध की बहुत बड़ी रेखाकृति वाला नक्शा टंगा है। मंच पर की व्यवस्था अतिभव्य है। पूरे मैदान में पंडाल बना है और पूरे मैदान में कुर्सियाँ 12 बजे के पूर्व ही भर गई हैं।

मंच पर चांसलर सहित कोर समिति के सभी सदस्य, देश-विदेश से आये विशिष्ट सिंधी प्रतिनिधि तथा अन्य विशिष्ट अतिथि मंच पर आ चुके हैं। ठीक 1.30 बजे प्रोफेसर रघुनंदन माइक पर आते हैं। मंच की अध्यक्षता के लिए चांसलर श्री नारायण भारती के नाम का प्रस्ताव रखते हैं। मंच तथा सभा की पूरी उपस्थिति द्वारा अनुमोदन की हर्षध्वनि द्वारा समर्थन होता है। प्रोफेसर रघुनंदन अध्यक्ष के पास जाते हैं और कुछ देर की गुफ्तगु के बाद पुनः माइक के पास आते हैं। प्रोफेसर ने कहा कि अध्यक्ष के निर्देशानुसार सभा की कार्यवाही शुरू की जाती है। वन्दे सिंध वन्दे का जयकारा पाँच बार लगाया जाता है। फिर राष्ट्रगान का गायन होता है। सभी श्रद्धा के साथ सम्मान सहित खड़े होकर राष्ट्रगान का गायन करते हैं। प्रोफेसर राष्ट्रगान में सिंध शब्द का सम्मान यथास्थिति में बने रहने के लिए सिंधी संगठनों, उल्लेखनीय व्यक्तियों, भारत सरकार तथा सर्वोच्च न्यायपालिका के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

अभी प्रोफेसर आगे कुछ बोलने की मनःस्थिति बना ही रहे थे कि चांसलर खुद माइक के पास आते हैं और प्रोफेसर के कान में कुछ कहते हैं। प्रोफेसर चहक उठता है। प्रोफेसर कहता है, “यहाँ सारे देश-विदेश से आये उपस्थित हमारे प्यारे सिंधी भाई-बहनों, पटना विश्व विद्यालय परिवार से जुड़े हमारे हर परिवार वालों, अन्य सम्मानित अतिथियों एवं मीडिया के भाइयों। आगाज तो अच्छा है अंजाम खुदा जाने। सिंध प्रांत की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। अब भारत के गर्भ से सिंध की काया निकलनी है। यह भी होना तय है। आज की इस सभा से उस काया के निर्माण की प्रक्रिया तीव्र होगी। यहाँ उपस्थित सभी लोगों का इसमें पूर्ण विश्वास है। अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार अभी सभा की कार्यवाही बढ़ती ही कि उन्हें एक सूचना दी गई है। यह सूचना हम सबों के लिए स्फूर्तिदायक है। मैं अनुरोध करूँगा कि अध्यक्ष महोदय खुद इसकी जानकारी सभा को दें।”

माइक के ठीक सामने चांसलर आ गये और गले को हल्का साफ कर उन्होंने बोलना शुरू किया, “सिंधु निर्माण के प्रति संकल्पित यहाँ आये सभी आगत भाई-बहनों का मैं स्वागत करता हूँ। आपका यह स्वागत मैं पटना विश्व विद्यालय के चांसलर की हैसियत से कर रहा हूँ। यह कहते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि सिंधु निर्माण के अभियान के प्राथमिक चरण में ही बिहार सरकार के माननीय मुख्यमंत्री महोदय खुद सभा स्थल पर आ रहे हैं। यहाँ से वो खुद सिंधु निर्माण को बिहार सरकार और बिहार की जनता की ओर से पूर्ण समर्थन की घोषणा करेंगे। इस घोषणा के बाद मुझे लगता है कि इसी साल पूरा देश और भारत सरकार सिंधु निर्माण का निर्णय ले लेगी और 2006 से सिंधु निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। यह एक महान राष्ट्रीय और मानवीय कार्य हो रहा है। जब भारत में रहने वाले लाखों सिंधी भाई-बहनों को उनके नाम का राज्य मिलेगा तो हर्ष के आँसू मिश्रित दुआओं एवं आभारों का सैलाब उमड़ेगा। इससे राष्ट्रवाद को अद्भुत एवं विलक्षण सिंचन प्राप्त होगा, जिससे अभी तक देश अछूता था। इस महान अवसर पर पटना विश्व विद्यालय का चांसलर रहना मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूँ। मुझे अपने जीवन के बाल्यकाल की सारी स्मृतियाँ और साफ-साफ उभरती नजर आ रही हैं। जन्म सिंधु (कराँची) में हुआ और भारत विभाजन के समय पर सिंधु में ही था। भारत कैसे आया और वहाँ के क्या अनुभव थे— आदि बातें मानस पटल पर छा रही हैं। खैर! अब सिंधु बने और सिंधी सभ्यता, संस्कृति, जीवन-शैली, भाषा, राजनीतिक व्यवहार आदि सब जीवंत हों और भारत को समृद्ध करें यही शुभकामना है। मैं प्रोफेसर रघुनंदन की अनूठी सोच और उसके लिए उद्दाम जिजीविषा को नमन करता हूँ। वन्दे सिन्धु वन्दे। धन्यवाद।”

चांसलर ने प्रोफेसर का कंधा थपथपाया, गले लगाया और मंच संचालन का निर्देश देते हुए अपने स्थान पर बैठ गये।

प्रोफेसर ने माइक संभाला और बोलना शुरू किया, “तो जैसा मैं कह रहा था कि आगाज़ तो अच्छा है अंजाम खुदा जाने। इसी साल 3 जनवरी से शुरू हुआ दुखांत घटनाक्रम इतना फलदायी स्वरूप ग्रहण करेगा—कोई नहीं जानता था। आज बिहार की महान धरती और पाटलीपुत्र के गंगा तट पर

पटना विश्व विद्यालय के प्रांगण में हम सभी एक ऐसी घटनाक्रम के गवाह बन रहे हैं जो भारतीय इतिहास के आलोक में भारत के भविष्य को दूर तक प्रभावित करेगा। हम केवल भारत में सिंध निर्माण ही नहीं करने जा रहे हैं बल्कि इतिहास के भूल सुधार को समझते हुए भविष्य निर्माण की ओर ठोस कदम बढ़ाने जा रहे हैं। देश-विदेश से आये हजारों सिंधी भाई-बहनों की गरिमामय उपस्थिति में सामूहिक रूप से सिंध निर्माण का संकल्प लेंगे। उसके निर्माण के प्रति आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय व्यक्त करेंगे। और उस संघर्ष को 101 शंखध्वनि द्वारा महिमा-मंडित करेंगे.....”

करेंगे बोलते-बोलते प्रोफेसर रघुनंदन ने देखा कि दूर में कुछ हड़बड़ाहट का दृश्य उभरा। प्रोफेसर चुप हो गया। पल दो पल में ही तस्वीर साफ हो गई। माननीय मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, विधान सभा के अध्यक्ष, विधान परिषद के सभापति तथा शिक्षा मंत्री सभा मंच की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। मंच पर उपस्थित सभी लोगों ने सभी आगत अतिथियों का स्वागत किया। प्रोफेसर ने वन्दे सिंध वंदे का उद्घोष किया। इसके प्रतिउत्तर में वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने भी वंदे सिंध वंदे का जयकारा लगाया। सभा स्थल पर उत्साह और उमंग बढ़ता जा रहा था। देर तक भारत माता की जय और वन्दे सिंध वन्दे का नारा गूँजता रहा। जब सभा में शांति स्थापित हुई तो प्रोफेसर ने फिर से बोलना शुरू किया, “भारत में भाग्योदय की लालिमा फैल रही है। आप पक्का मानें, यदि भारत में आपने सिंध बना लिया तो मान लें कि भारत का पुनर्जागरण शुरू हो गया। चूँकि मुहूर्त के मुताबिक सिंध निर्माण के संघर्ष की घोषणा दिन के 12 बजे के बाद ही करनी है इसलिए हम इसके लिए पटना विश्व विद्यालय के चांसलर श्री नारायण भारती को आमंत्रित करते हैं कि वो डायस पर आयें।”

श्री भारती आये और सबों से सिंध निर्माण के संघर्ष संकल्प को दुहराने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, “हम संकल्प लेते हैं कि भारत की सीमा के अंदर अपना प्यारा सिंध बनायेंगे। अपने राष्ट्रगान को परिपूर्ण करेंगे। लाखों-लाख सिंधी भाई-बहनों के साथ हुए ऐतिहासिक भूल को सुधारेंगे। भारत माता के भाल को उन्नत करेंगे। वन्दे सिंध वन्दे। भारत माता की जय।”

वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने खड़े होकर संकल्प लिया। मंच के बगल में बने 'शंखनाद ध्वनि स्थल' से तीन बार एक सौ एक शंख से शंखध्वनि की गई।

पूरे सभा स्थल पर एक भावपूर्ण माहौल की तरंगें व्याप्त हो गईं। कितनों की आँखों में आँसू थे तो कितने उल्लास मिश्रित भंगिमाओं से वशीभूत हो उन्मादकारी व्यवहार कर रहे थे। प्रोफेसर मंच पर उपस्थित हरेक व्यक्ति से गले मिल रहा था। उसकी आँखें डबडबाई थीं। इतनी शीघ्र ऐसी सफलता मिलेगी—सब स्वप्नवत् लग रहा था। वहाँ उपस्थित प्रोफेसर बिपिन बिहारी को जोर से गले लगाते हुए उन्हें धन्यवाद दिये जा रहा था।

उस कोलाहल भरे माहौल को शांत होने में कुछ वक्त लगा। प्रोफेसर ने मुख्यमंत्री को अपना खुला समर्थन देने के लिए आमंत्रित किया।

मुख्यमंत्री डायस पर आये। उन्होंने उत्साहपूर्वक बोलना शुरू किया, "आज का दिन हम सभी भारतवासियों के लिए स्मरणीय रहेगा। भारत ही नहीं विश्व की सबसे उन्नत प्राचीन सभ्यता-संस्कृति की स्थली सिंध के नाम पर हमने भारत संघ में सिंध राज्य के निर्माण के संघर्ष की सार्वजनिक घोषणा की है। हम चांसलर साहब से सिंध निर्माण की योजना, जो प्रोफेसर रघुनंदन साहब की है, सुन चुके हैं। भला देश में कौन सिंध बनते नहीं देखना चाहेगा। पर कोई भी राज्य इसके लिए अपनी जमीन देने के नाम पर मौन हो जायेगा। इसमें कलह, असंतोष तथा विवाद खड़ा होना तय है। इससे केन्द्र सरकार के सामने भी समस्या खड़ी हो जाती है। पवित्र तथा राष्ट्रीय उद्देश्य जितनी शांति, उत्साह और शीघ्रता से पूरा हो उसी का नाम है। प्रोफेसर रघुनंदन जी कि भारत की समुद्री सीमा के अर्न्तगत सिंध राज्य निर्माण की बात इतनी अच्छी, विवादरहित, सकारात्मक, रचनात्मक और इनोवेटिव है कि मैं तो सुनकर ही मुग्ध हो गया।

मैं इंजीनियरिंग का छात्र रहा हूँ। इस प्रस्तावित राज्य में इतनी संभावना, विकास, नूतनता, उद्यम, श्रम, निवेश, बहुआयामी लाभ, साहस, पराक्रम, व्यवसाय और राष्ट्रवाद का विस्फोट छिपा है कि मैं कह नहीं सकता हूँ यह भारत की आर्थिक एवं तकनीकी क्षमता का विश्वस्तरीय प्रदर्शन होगा। पूरी

दुनिया में धूम मच जायेगी। सिंधी समाज के लिए बहुत कुछ कर गुजरने का यह सुनहरा अवसर है। उनकी व्यावसायिक प्रतिभा और क्षमता को परवान चढ़ाने का यह अनुपम अवसर है। भारत का एक-एक व्यक्ति इससे प्रभावित होगा। संभवतः भारत में यह अब तक का सबसे बड़ा मेगा प्रोजेक्ट होगा। चूँकि बिहार की आँखों में भारत बसता है और सिंध निर्माण का यह स्वप्न भी एक बिहारी की आँखों ने ही इस रूप में पहले देखा है इसलिए हरेक बिहारी देखना चाहेगा कि यह स्वप्न जल्द से जल्द साकार हो। मैं भी अपने को इसी श्रेणी में मानता हूँ। यदि सिंध निर्माण का दायित्व ग्रहण करने वाली संस्था ने हमें अवसर दिया तो हम भी इस प्रोजेक्ट को नजदीक से देखने और अपनी बुद्धि के अनुरूप अपनी सेवा देना अपना सौभाग्य मानूँगा।

मैं इस मंच से पूरे बिहार की जनता और सरकार की ओर से अपना समर्थन देता हूँ। यहाँ की सरकार और जनता तन-मन-धन से इस महान यज्ञ में अपनी आहुति देने को तत्पर है। मैं भी इसी विश्व विद्यालय का छात्र रहा हूँ। हमें भी गर्व है कि हमारा विश्व विद्यालय इस मुहीम का अगुवा बना है। बिहार की विधान सभा और विधान परिषद भी अपने अगले सत्र में इस मुहीम को समर्थन देने वाला प्रस्ताव पास करेगी। हमारे अध्यक्ष एवं सभापति ने अपनी मंशा हमें बताई है।

गंगा तट पर स्थापित 'सिंध मंदिर' एक ऐसा प्रेरणास्थल बनेगा कि पूरे विश्व के सिंधी समाज के लिए यह एक पर्यटक स्थल के तौर पर स्थापित हो जायेगा। यह गंगा तीरे सिंध शरीरे का जीवंत स्वरूप अद्भुत पर्यटन स्थल बनेगा।

जैसा कि हमें ज्ञात हुआ है कि इसी मंच से आज कई पेपर पढ़े जायेंगे। जिसमें सिंध और सिंधी समाज की विस्तृत जानकारी दी जायेगी। हम सबों ने यह निर्णय लिया है कि विभिन्न विषयों पर आधारित सारे पेपर को यहीं रहकर सुनेंगे। बस, हमारा यही आग्रह होगा कि उस प्रक्रिया को जल्द शुरू किया जाय। प्रोफेसर साहब को धन्यवाद। चांसलर साहब को धन्यवाद। इस मुहीम से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद। पटना विश्व विद्यालय परिवार को धन्यवाद। बिहार के सभी सिंधी भाई-बहनों को

धन्यवाद एवं बधाई। देश-विदेश से यहाँ उपस्थित तथा देश-विदेश में रहने वाले सभी सिंधी भाई-बहनों को धन्यवाद, बधाई एवं ढेर सारी शुभकामनायें।”

मुख्यमंत्री अपनी बात समाप्त कर इत्मीनान से अपने स्थान पर आकर बैठ गये। मंच पर हलचल बढ़ गई। सारे पेपर पढ़ने वाले सक्रिय हो गये और तैयारियाँ शुरू हो गई।

आइये जानें अपने सिंध और सिंधी समाज को

मुख्यमंत्री के उद्गार के बाद मंच के एक किनारे एक बड़ा बैनर टांगा गया जिस पर लिखा था - आइये जानें अपने सिंध और सिंधी समाज को।

बैनर लगते ही वहाँ का माहौल एकेडमिक होने की दिशा में बढ़ने लगा। माइक पर चांसलर नारायण भारती आये और कहा, “आज यहाँ से पूरे भारत ही नहीं विश्व को भी सिंध एवं सिंधी समाज के बारे में जानकारी दी जायेगी। इन जानकारियों के आधार पर हर कोई भारत में सिंध निर्माण की आवश्यकता और सार्थकता का कायल हो जायेगा। सबसे पहले वक्ता होंगे प्रोफेसर रघुनंदन। अब इनको परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है। ये न केवल सिंध राज्य निर्माण के विचारक हैं अपितु विचार को जीवंत बनाने की सारी संभावनाओं के साथ राष्ट्र को खड़ा करने को तत्पर हैं। ये इतिहास के छात्र रहे हैं और इनका पी. एच. डी. का विषय ही ‘भारतीय इतिहास में सिंध की उपेक्षा के दुष्परिणाम’ था। इनके शोध में सिंध के इतिहास की गौरवपूर्ण गाथा के साथ ही त्रासद झलक भी मिलेगी जो भारत विभाजन तक जाती है।

मैं प्रोफेसर रघुनंदन से आग्रह करूँगा कि वो गागर में सागर समेटते हुए सिंध के इतिहास पर प्रकाश डालें। उसके बाद पटना विश्व विद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मनोरंजन कुमार चौधरी बिहार के महान हिन्दी रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु जी की सिंध पर लिखी उनकी रचना को सुनायेंगे। इसे सुनना आजादी पूर्व के सिंध को देखने के बराबर होगा। उसके बाद सात सिंधी विद्वान विभिन्न विषयों पर अपना पेपर प्रस्तुत करेंगे। उनके नाम हैं - मुम्बई विश्व विद्यालय के श्री भावदेव मतलानी, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (NSPSL) के श्री मनन भाटिया, सिंधी अकादमी दिल्ली की श्रीमति साधना तोलानी, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिन्थोलॉजी के श्री विष्णु चंद खिलानी, सिंधी कॉन्सिल ऑफ इंडिया के श्री नरेश केसवानी, कलकत्ता के विख्यात सिंधी समाजसेवी एवं विद्वान श्री दीलेश भवनानी और 1947 में स्थापित बिहार सिंधी एसोसिएशन के श्री पी. पी. दास।

आप यकीन मानें इन नौ लोगों को सुनते-सुनते यहाँ उपस्थित आप सभी सिंधमय-सिंधीमय हो जायेंगे।

मैं प्रोफेसर रघुनंदन से आग्रह करता हूँ कि वो आयें और अपनी बात रखें।”

प्रोफेसर रघुनंदन आये। गले को साफ किया। अपने थीसिस ‘भारतीय इतिहास में सिंध की उपेक्षा के दुष्परिणाम’ को संक्षेप में रखने की बात की और बोलना शुरू किया, “अपने देश भारत के दोनों नाम हिंद (हिन्दुस्तान) और इंडिया सिंधु नदी और सिंध क्षेत्र के नाम पर ही पड़े हैं। फारस (ईरान) के लोग स को ह बोलते थे। इसलिए सिंधु को हिंदू कहने लगे। और उसी का नकल करते हुए ग्रीक लोग सिंधु या हिंदू को इंडस कहने लगे। इंडस से ही इंडिया हुआ।

सिंध कभी अपने भारत का सबसे पुराना प्रांत था। भारत में उन्नत शहरी सभ्यता और संस्कृति की पहली किरण सिंध में ही फूटी थी। सिंधु घाटी की सभ्यता और संस्कृति से ही भारतीय इतिहास के प्रामाणिक दौर का आगाज होता है। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व वर्तमान सिंध के लरकाना जिले के मोहनजोदाड़ो में सिंधु घाटी की सभ्यता का उत्स मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता की जानकारी मिलने के बाद पूरे विश्व में भारतीय इतिहास को सम्मान मिला।

ऐसा प्रमाणित हो गया कि हिन्दुस्तान के लोगों ने 5 हजार वर्ष पूर्व ही सुव्यवस्थित ढंग से जीना सीख लिया था। हमारी पुख्ता जड़ों की धाक जम गई। विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारी विरासत और हमारे इतिहास के प्रति जो उपेक्षा और हिकारत का नजरिया बना रखा था, उन्हें सिंधु नदी के किनारे स्थित इस सभ्यता के खंडहरों ने धूल धुसरित कर दिया। हम गुलाम थे। गुलामों के आत्मसम्मान को कुचलने का प्रयास होता ही है। उन्हें हीन समझा ही जाता है। सिंध की सिंधु नदी के किनारे की सभ्यता ने हमें सर ऊँचा करना सिखाया।

इस सभ्यता की जानकारी सन् 1918 से मिलनी शुरू हुई। महान

उत्खनन का कार्य प्रारंभ हुआ। मोहनजोदड़ो के 13 एकड़ की खुदाई ने भारत के बारे में दुनिया की धारणा ही बदल दी।

इस सभ्यता के बाद भारतीय इतिहास में सिंध के इतिहास को लेकर शून्यता की स्थिति दिखाई देती है। कारण स्पष्ट नहीं होता है।

भारतीय आख्यानो में त्रेता और द्वापर युग के पहले ही आज के कराँची से 80 मील पश्चिम हिंगलाज नामक स्थान पर सती का ब्रह्मरंध्र गिरा था। यह 51 शक्तिपीठों में से एक है।

वैसे रामायण काल में कैकेई सिंध प्रांत की थी। यानि भरत जी का ननिहाल सिंध था। श्री राम के शासन काल में सिंध पर भरत का राज था। राजकुमार भरत को दो पुत्र थे। तक्ष्य और पुष्कर नामक दोनों राजकुमारों ने सिंध की सीमा को कंदहार तक बढ़ाया था।

फिर महाभारत काल में धृतराष्ट्र की पुत्री और दुर्योधन की बहन दुशाला की शादी सिंध के राजा जयद्रथ से हुई थी।

इन्हीं तथ्यों से समझा जा सकता है कि सिंध से हिंद के पौराणिक एवं ऐतिहासिक संबंध कितने प्राचीन हैं। वेदों का रचना स्थल सिंधु नदी ही है। जहाँ वेदों में गंगा का उल्लेख केवल दो बार है वहीं सिंधु नदी का उल्लेख तीस बार हुआ है।

भारत में सिंध की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार है कि गुजरात और राजस्थान की सीमा के पश्चिम रहने के कारण प्राकृतिक रूप से गुजरात में कच्छ का रण एवं राजस्थान में मरूस्थल होने से जनसम्पर्क जटिल था। पंजाब सिंध के उत्तर में है और वहीं से सिंध का सम्पर्क मार्ग था।

अलैक्जेंडर (सिकन्दर) ने ईसा पूर्व 325 में सिंध को जीता और उसे इन्डौस नाम दिया। यह सिंधु नदी पर ही आधारित नाम था। मेगास्थनिज ने भी भारत संबंधी जानकारीयों वाली अपनी पुस्तक का नाम इण्डिका रखा था। आज का इंडिया उसी नामों का सुधरा संस्करण है।

राजनैतिक रूप से प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य निर्माता चन्द्रगुप्त ने भी पहले सिंध और पंजाब को अपने अधीन कर ही उसी की शक्ति के बल पर मगध के नंद को परास्त किया था। उसी के बाद उसने मौर्य साम्राज्य की

स्थापना की थी। यहाँ एक बार फिर भारत निर्माण में सिंध की शक्ति अखिल भारतीय साम्राज्य में नींव के तौर पर काम आई।

भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों को सिंध के इतिहास में सिंधु घाटी की सभ्यता के बाद सीधे भारत में प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी, जो अरब थे, से ही पढ़ाई होती है।

पहले हम देख लें कि अरब आक्रमण के समय सिंध की क्या स्थिति थी। अरब आक्रमण के समय सिंध एक विस्तृत राज्य था। उसकी सीमायें उत्तर में मुल्तान से आगे, पश्चिम में मकरान तक और दक्षिण में समुद्र से मिलती थी। उस समय वहाँ का राजा दाहिर सेन था। जाति से वह एक ब्राह्मण था। उसके पिता चच ने सिंध के राजा राय साहासी के निःसंतान ही मर जाने पर उसकी पत्नी सुहान्दी से प्रेम विवाह कर सिंध का राज्य हस्तगत किया था। चच के बाद उसका भाई चन्द्र गद्दी पर बैठा। चन्द्र की मृत्यु के पश्चात दाहिर सेन को चन्द्र के पुत्र एवं अपने चचेरे भाई दुराज से गद्दी के कारण संघर्ष करना पड़ा था। सिंध में उन दिनों बौद्धों की बहुत बड़ी संख्या थी। सिंध पर पहले बौद्धों का शासन था।

जहाँ सत्ता को लेकर बौद्धों और ब्राह्मणों में तनातनी थी, वहीं वहाँ की दो महत्वपूर्ण जातियों जाटों और मेदों के साथ भी राजा के संबंध कटु ही थे। यानि सिंध की उस समय चार महत्वपूर्ण जातियों ब्राह्मणों, बौद्धों, जाटों और मेदों में कटुता भरी हुई थी।

एक अन्य कारक ने दाहिर सेन की स्थिति को आम जनता की निगाहों में कमजोर किया था। एक भविष्यवाणी के कारण राज्य बंटवारे के भय से दाहिर का अपनी एक अन्य विमाता की पुत्री बाई से उसकी सांकेतिक शादी की खबर। अपनी सौतेली बहन से शादी की खबर ने उसकी छवि को धूमिल कर दिया था। यानि पिता-पुत्र के व्यवहार से राज परिवार के लिए आम जनों में सम्मान का भाव निश्चित रूप से उस समय गिरा हुआ ही होगा।

शेष भारत की स्थिति यह थी कि सम्राट हर्ष के मृत्योपरांत उत्तर भारत के राजे एवं राजवंश के लोग विदेशी परिस्थितियों से पूर्ण अनभिज्ञ और

विदेशी आक्रमणकारियों के प्रति उदासीन थे। ये सभी राजवंश साम्राज्य विस्तार के लिए आपस में युद्ध करते रहते थे। भारत की राजनीतिक दुर्बलता बनी हुई थी। उस समय अफगानिस्तान में हिन्दू राज्य था। वहाँ बौद्ध और हिंदू धर्म प्रचलित था। राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से यह भारत का अंग था। बाद में यह काबुल और जाबुल नाम के दो राज्यों में विभक्त हो गया। जाबुल का राज्य काबुल के दक्षिण में था। 9वीं सदी के अंतिम वर्षों तक वहाँ हिन्दू राज्य रहे।

कश्मीर में हिंदू राज था। उसका शासक चन्द्रपीड था। पूरे देश में कई शक्तिशाली राजे थे। उनमें प्रतिहार, गुर्जर, राष्ट्रकूट और चालुक्य राजवंश प्रमुख थे।

लेकिन आप सभी उपस्थित लोगों के अंदर एक जिज्ञासा जग सकती है कि ठीक है हमारे यहाँ जाति और राजवंशों की वैमनश्यता थी। यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी रही है। यह आज भी है। हम कमजोर थे। पर अरब से लोग उछल कर सिंध कैसे आ गए? तो यह समझ लें कि अरबों द्वारा सिंध विजय के ठीक 100 वर्ष पूर्व ही अरब में एक ऐसी घटना हो चुकी थी जो दुनिया को प्रभावित करने वाली थी। और वह घटना थी अरब में इस्लाम का उदय।

भारत में मध्यकालीन से लेकर अब तक के इतिहास और वर्तमान को समझने के लिए प्रत्येक देशवासी को इस्लाम की जानकारी होनी चाहिए। जब तक आप इस्लाम, इस्लामी मानस और विचार धारा तथा उनके व्यवहार और उद्देश्य को नहीं समझेंगे- तब तक आप भारत को जानने का ककहरा भी सीखने से वंचित रहेंगे।

तो आइये, संक्षेप में इस्लाम (ईश आज्ञापालन) को जानें। अरब के मक्का में 570 ई. में मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। चालीस साल की आयु (लगभग 610 ई.) में उन्हें आत्मज्ञान यानि इल्हाम हुआ कि वह अल्लाह के पैगम्बर हैं। उन्होंने अपने को नबी (पैगम्बर) और रसूल (ईश यानि ईश्वर का दूत) घोषित किया। उन्होंने यह भी कहा कि वह अल्लाह के अंतिम पैगम्बर हैं।

उस समय अरब निवासी मूर्ति पूजक थे। उनका मुख्य तीर्थ स्थान मक्का का काबा था। यह एक घेराबंद स्थान था। इस स्थान पर कोई छत नहीं था। इसी में अरबों के देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तथा उनके प्रतीक रखे हुए थे। अरब उस समय विभिन्न फिरकों में बंटे हुए थे, जिनमें आपसी युद्ध होते रहते थे।

मुहम्मद साहब ने मूर्ति पूजा का विरोध किया। केवल अल्लाह को मानने की बातें कही। उन्होंने कहा कि अल्लाह एक है और मुहम्मद यानि मैं उसका दूत हूँ। अरबी में इसे 'ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदे रसूलिल्लाह' कहा जाता है। इसे ही कलमा भी कहा जाता है।

मक्का के निवासी उनके विचारों से असहमत थे। उनका विरोध हुआ। मुहम्मद साहब 622 ई. में मक्का छोड़कर अपने ननिहाल मदीना चले गये। इस्लामी संवत् (हिजरी संवत्) की शुरूआत यहीं से होती है। 612 ई. में मक्का में रहते हुए ही इस्लामी आसमानी किताब (कुरआन) का संकलन हो रहा था जो उनकी मृत्यु (632 ई.) तक जारी रहा।

मुहम्मद साहब ने अरबों को नये सम्प्रदाय इस्लाम की छत्रछाया तले एक किया। इस्लाम को मानने वाले मुस्लिम (आज्ञाकारी) कहलाये। इस्लाम ने अरबों में एक राष्ट्र के समान एकता की भावना और तीव्र सैनिक प्रवृत्ति तथा उत्साह प्रदान किया।

मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद के चार खलीफों का कार्यकाल इस्लाम की जड़ों को बहुत ही मजबूत किया। पहले खलीफा थे अबुबक्र (632-634 ई.)। इनकी मृत्यु बीमारी से हुई। उसके बाद उमर (634-644 ई.) खलीफा बने। इनकी हत्या एक ईरानी गुलाम ने कर दी। फिर उस्मान (644-656 ई.) खलीफा बने। उनकी भी हत्या कुरआन पढ़ते हुए कर दी गई। फिर अली (656-661 ई.) चौथा खलीफा बने। ये मुहम्मद साहब के दामाद थे। उनका भी कत्ल कर दिया गया। इस प्रकार चार में से तीन खलीफा की हत्या कर दी गई। जब पाँचवें खलीफा के चयन का प्रश्न उठा तो अली के बड़े पुत्र हसन और एक अन्य व्यक्ति मुअव्विया के बीच खलीफा चुनना था। हसन ने मुअव्विया के पक्ष में अपनी दावेदारी हटा ली।

पर उसी मुअव्विया के बाद उसका पुत्र याजिद ने अपने कार्यकाल में अली के पुत्र इमाम हुसैन को उनके परिवार सहित कर्बला के मैदान में मरवा डाला। आज कर्बला इराक में है। और यहीं से इस्लाम दो हिस्सों में बंट गया। याजिद के पक्षधर सुन्नी कहलाये और हसन-हुसैन के पक्षधर शिया कहलाये।

लेकिन इस्लाम में आन्तरिक उथल-पुथल के बावजूद इस्लाम की सेना अपना साम्राज्य विस्तार और इस्लाम का प्रचार-प्रसार भी करती जा रही थी। 643 ई. में अरबों ने ईरान को जीत लिया था। अब उनकी सीमायें अफगानिस्तान के हिंदू राज्यों से मिलने लगी थीं। 711 ई. तक वो स्पेन को भी जीत चुके थे।

सिंध विजय के पूर्व अरबों ने सिंध के पश्चिमी समुद्र तटीय क्षेत्र मकरान को अपने अधिकार में ले लिया था। यदि सिंध के राजा मकरान पर अरबों का आधिपत्य नहीं होने देते तो शायद अरब भारत में सफल नहीं होते। इस्लाम प्रचार, साम्राज्य विस्तार और धन प्राप्ति हेतु उनके अभियान चल ही रहे थे। पर दो घटनाओं ने अरबों को सिंध विजय के लिए दृढ़ निश्चयी बना दिया।

पहला कारण था इराक के सूबेदार हज्जाज के डर से अलाफी नाम के एक अरब नेता को उसके 500 आदमियों सहित दाहिर सेन ने सिंध में शरण दे दी थी। हज्जाज इससे क्रुध था। दूसरा कारण था सिंध के समुद्री डाकुओं द्वारा कुछ अरब जहाजों को लूटा जाना। यही दो तत्कालिक कारण अरबों द्वारा सिंध आक्रमण के बने।

जब खलीफा के पूर्वी प्रान्त ईराक के सूबेदार हज्जाज ने सिंध के राजा से इसके लिए हर्जाना माँगा तो राजा ने इसे समुद्री लुटेरों की कार्यवाही बताया और हर्जाना देने से इंकार कर दिया। हज्जाज इससे बहुत क्रोधित हुआ और उसने खलीफा वाहिद से सिंध पर आक्रमण करने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

ऐसा भी हो सकता है कि यह अरबों का षडयंत्र हो। हो सकता है कि शरणार्थी बने उन्हीं अरबों ने जहाजों को लूटा हो। ऐसा उल्लेख आता है कि

मुहम्मद बिन कासिम के साथ हुए युद्ध में उन शरण पाये अरबों ने दाहिर के साथ गद्दारी की थी।

हज्जाज ने अपने योग्य सेनापतियों के नेतृत्व में दो बार सिंध पर आक्रमण करवाया। पर दोनों बार सेना पराजित हुई और सेनापति भी मारा गया।

तब 711 ई. में हज्जाज ने एक शक्तिशाली सेना अपने भतीजे और दामाद मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध विजय को भेजी।

मुहम्मद बिन कासिम को मकरान में बड़ी सहायता और ठहराव मिला। सिंध के बारे में सारी जानकारी पाई। वहीं से उसने युद्ध की रणनीति बनाई। पहले उसने सिंध के बंदरगाह देवल को जीता। उसके बाद निरून के किले को जीता। बाद में ब्राह्मणावाद का पतन हो गया। रावर में राजा दाहिर सेन और मुहम्मद बिन कासिम की लड़ाई हुई। दाहिर सेन हार गया। यह गुरुवार 16 जून 712 ई. के दिन की शाम थी। फिर अरबों ने दाहिर की राजधानी अरोड़ पर कब्जा कर लिया। मुहम्मद बिन कासिम ने 713 ई. में मुल्तान को भी जीत लिया।

इस बार की इतनी विजयों और जीतों में मिली अकूत सम्पदा और सुन्दर स्त्रियों का भी बंटवारा किया गया। राजा दाहिर सेन की दो कुंवारी पुत्रियों सूर्य देवी तथा परमाल देवी को खलीफा की सेवा के लिए भेजा गया। वहाँ पहुँच सूर्यदेवी और परमाल देवी ने खलीफा के पास यह शिकायत की कि मुहम्मद बिन कासिम ने तीन दिन तक उनको अपने हरम (जनानखाने) में रखकर और उनका शीलभंग करके उन्हें खलीफा की सेवा में भेजा है। खलीफा जो दोनों की सुन्दरता पर मुग्ध हो गया था, बहुत क्रोधित हुआ और उसने आदेश दिया कि मुहम्मद बिन कासिम को बैल की कच्ची खाल में बंद करके उसके पास भेजा जाय।

ऐसा ही हुआ। इस प्रकार इस अरबी विजेता की जीवन लीला समाप्त हो गई। हालाँकि मुहम्मद बिन कासिम की मौत के बाद दोनों बहनों ने खलीफा को कह दिया कि उन्होंने अपने पिता की मौत का बदला लेने के

लिए यह झूठी कहानी गढ़ी थी। खलीफा ने दोनों बहनों को घोड़े की पूँछ से बँधवा कर घसीटवाते हुए उनकी भी हत्या करवा दी।

मुहम्मद बिन कासिम के बाद याजिद नामक व्यक्ति को सिंध का सूबेदार बनाया गया। सदा के लिए सिंध का भारतीय भविष्य सो गया था। अरबों ने 300 वर्षों तक सिंध पर राज्य किया। इन 300 वर्षों तक अरब सिंध में ही सिमटे रहे।

अब इतिहास के छात्र के नाते जो हमें कहना है वह यही है कि यदि भारतीय इतिहास में सिंध को तीन ओर से घेरे राजे-महाराजे थोड़ी सक्रियता दिखाते, उनमें कुछ भी दूर दृष्टि होती या वे अपने हिंदू भाई-बहनों के प्रति तनिक भी संवेदनशील होते या उनमें अपने धर्म या धर्मावलंबियों के प्रति तनिक भी गरिमा का भाव होता तो सिंध से अरबों को हटाने का कोई प्रयास जरूर करते। या उनके अंदर राष्ट्रवाद की भावना, भारत बोध की भावना एवं बाहरी शक्तियों और उनकी ताकत का ज्ञान होता तो क्या अरबों को खदेड़ा नहीं जा सकता था। निश्चित रूप से उस समय के सभी राजे कूपमंडुक और निश्चित सोच एवं दायरे में ही तलवार भाँजते रहते थे।

कन्नौज का प्रतिहार राज्य और उत्तर-पश्चिम तथा पश्चिमी पंजाब का हिन्दुशाही राज्य एवं पूरब में गुजरात तथा राजस्थान के राजे अरबों की तुलना में बहुत शक्तिशाली थे और वे सरलता से अरबों को सिंध से बाहर निकाल सकते थे। परन्तु इन हिंदू राजाओं ने अरबों को देश से न निकालकर अपनी सीमाओं की सुरक्षा नहीं की। यही आश्चर्य की बात है। यह भारतीय इतिहास में सिंध उपेक्षा का ज्वलंत उदाहरण था और इस उपेक्षा की बड़ी सजा बाद में उन्हीं राजवंशों और शेष भारत को भी भुगतनी पड़ी। बाद के दिनों में यही प्रवृत्ति आगे के मुस्लिम एवं ईसाई साम्राज्य विस्तार में भी देखने को मिली। यह हमारा राष्ट्रीय चरित्र हो गया।

सिंध में बौद्धों एवं ब्राह्मणों का झगड़ा चरम पर था। जाटों और मेदों का भी सहयोग राजा को प्राप्त नहीं था। परस्पर की कटुता, ईर्ष्या, गद्दारी एवं विश्वासघात ने भी सिंध पराजय में कई बार महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

सिंध का भारत के एक कोने में होना भी एक कारण था। देश के अन्य शासक सिंध के प्रति उदासीन रहे।

भारत का तत्कालीन ब्राह्मण समाज भी दाहिर सेन की हार को अपनी जाति की हार मान बैठा और विधर्मियों को देश से बाहर निकालने के मामले में केवल मौन ही नहीं हुआ अपितु उस तरफ ध्यान देना भी निषिद्ध माना। यदि उस समय का ब्राह्मण वर्ग पड़ोसी राजवंशों को उद्वेलित करते, अपने धर्म एवं धर्मावलंबियों की रक्षा का शंखनाद करते, भारत बोध जगा भारत की एकता एवं सभी भारतीयों को भारत हित में एक होने की मुहीम चलाते तो कोई बात नहीं थी कि सिंध को बचाने का कोई प्रयास नहीं होता। सिंध को बचाने का एक भी प्रयास नहीं होना भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी कही जायेगी। वहीं से भारतीय इतिहास में भारतीय समाज का बौद्धिक एवं मानसिक घोंचूपना और शूतुरमुर्गी व्यवहार शुरू हुआ जो आज भी प्रकारान्तर से बढ़ता-घटता रहता है।

यदि सिकन्दर के बाद चाणक्य-चन्द्रगुप्त जैसा प्रयास उसी समय सिंध में होता तो आज सिंध सहित भारत का इतिहास और वर्तमान दूसरा होता।

लेकिन हमारी कहानी ही केवल खोने, सिकुड़ने और भूलने की रही है। अरबों के शासक बनने के बाद सिंध में वही सब हुआ जो इस्लामी राज्य विस्तार की चाहना, आदर्श और व्यवहार के तहत होता है।

सर्वत्र जुल्म, अपमान और इस्लाम स्वीकारने का डंका बजने लगा। उसी पृष्ठभूमि में 950 ई. में थट्टा नगर का नबाव मिर्ख शाह ने सभी हिन्दुओं को मुसलमान बनने का आदेश पारित किया।

सभी हिंदू सिंध नदी के किनारे एकत्र होकर जल के देवता वरूण देव से अपनी सुरक्षा की प्रार्थना की। वे सब सामूहिक रूप से तीन दिन-तीन रात तक उपवास रखकर आराधना करते रहे। आखिर चौथे दिन श्री झूलेलाल जल से प्रकट होकर उन्हें घर लौटने का आश्वासन दिया। आकाशवाणी हुई कि एक दिव्य ज्योति शीघ्र अवतरित होगी। सब लोग आश्वस्त होकर लौटे।

कुछ दिनों के बाद चैत्रमास की शुक्ल को द्वितीया शुक्रवार के दिन थट्टा के नजदीक नसरपुर के एक वीर राजपूत की पत्नी देवकी ने एक दिव्य बालक को जन्म दिया। वीर राजपूत रतन राय लुहाणा के पुत्र का नाम रखा गया उदयचंद। यही बालक वरूण देव जी के अवतार थे। चूँकि उन्हें चाँदी के झूला पर झुलाया जाता था इसीलिए उन्हें झूलेलाल भी कहा जाने लगा। धीरे-धीरे उनके कारणामों के कारण उनके कई नाम पड़े।

झूलेलालजी के साथ कई कहानियाँ, किम्वदंतियाँ एवं मिथक प्रचलित हैं। मिर्ख शाह के मंत्री याहिया एवं खुद नबाव ने उनके कई चमत्कारों को देखकर पूरी तरह उनके सामने आत्मसमर्पण कर दिया। तब से मुसलमानों में भी उनकी उपासना चलने लगी और वे उन्हें जिन्दहपीर के नाम से सिजदा करने लगे।

झूलेलाल जी ने तब से लेकर अब तक सिंधी हिन्दुओं में साहस का संचार किया है। उसी समय से पूरे सिंध में उनकी पूजा होने लगी। वे उनके इष्टदेव हो गये। बांग्लादेश की गायिका रूना लैला ने अपने एक गीत में झूलेलाल की महिमा और महानता का बखान किया है।

अरबों के बाद भारतीय मूल के मुसलमानों का शासन आया। उसके बाद तुर्क-अफगान काल में सत्ता का हस्तान्तरण होता रहा पर सत्ता कभी भी हिन्दुओं के हाथ नहीं आई। तब जब कि लाख प्रयत्न के बावजूद भी अधिसंख्य आबादी हिन्दुओं की ही रही।

मुगल शासक हुमायूँ को शेरशाह के हाथों परास्त होकर सिंध में शरण लेनी पड़ी। वहीं 33 वर्षीय हुमायूँ 14 वर्षीया हमीदा बानू के प्यार में गिरफ्तार हो गया। 1541 ई. में सिंध के पत्त नामक गाँव में उसकी शादी हुई। सिंध की एक रियासत अमरकोट के राजा राणा वीरसाल ने अपने किले में उसे शरण दी। वहीं हमीदा बानू के गर्भ से 15 अक्टूबर 1542 को अकबर का जन्म हुआ।

अपने साम्राज्य विस्तार के क्रम में अकबर ने सिंध को अपने राज्य में मिला लिया। जब मुगल साम्राज्य कमजोर हुआ तो कालहारों का शासन आया। उस समय सिंध की स्थिति अच्छी हुई। कालहारों के राजकाल में

सिंध में दो बड़े शहरों का निर्माण हुआ। ये दो नगर थे हैदराबाद और शिकारपुर।

कालहारों ने ही अपने उत्थान काल में बलूचियों को मुगलों, पर्सियनों और अफगानों से लड़ने के लिए अपने राज्य में बुलाया था। बाद के दिनों में वही बलूची तालपुर कहलाये और उन्होंने 1782 ई. में हालानी के युद्ध में कालहारों को बुरी तरह पराजित कर सिंध पर विजय प्राप्त की।

तालपुर (मीर) का शासन सिंध के हिन्दुओं के लिए सबसे भयावह रहा। इनके आने तक हर दस में से नौ सिंधी हिंदू था। पर इनके मात्र 60-65 वर्षों के शासन के बाद ही सिंध की आबादी में हिंदू मात्र एक चौथाई रह गये। हिंदू हत्या या इस्लाम स्वीकार ही उनका एक मात्र उद्देश्य था।

ईस्ट इंडिया कम्पनी की ब्रिटिश और बंगाल प्रेसिडेंसी सेनाओं ने जब चार्ल्स जेम्स नैपियर के नेतृत्व में 1843 ई. में सिंध पर विजय हासिल की तब जाकर हिन्दुओं को राहत मिली। अंग्रेजों द्वारा जीता गया यह भारत का अंतिम राज्य था। बाद में सिंध को बम्बई प्रेसिडेन्सी से जोड़ दिया गया। सिंध के एक वर्ग में बड़ा प्रतिरोध हुआ तो एक वर्ग में बड़ा हर्ष मनाया गया। पर बाद में सिंध को 1936 में एक राज्य बनाया गया। कराँची वहाँ की राजधानी बनी।

सन् 1941 की जनगणना में सिंध की आबादी 45 लाख थी; जिसमें हिन्दू आबादी 11 लाख थी। वे ज्यादा शहरों में थे और प्रांत की इकॉनोमी और बिजनेस पर उनका ही कब्जा था।

इतिहास के विद्यार्थी के नाते हमारी समझ है कि आजादी के समय दूसरी बार सिंध के साथ शेष भारत का व्यवहार अनुचित था। हमें तो यह राष्ट्रघात जैसा लगता है।

भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था। जहाँ-जहाँ इस्लाम धर्मावलंबियों की ज्यादा संख्या थी वहाँ तक का क्षेत्र पाकिस्तान में आया था। असम के सिल्हट जिला में मात्र एक प्रतिशत ज्यादा मुसलमान होने के आधार पर वह पूर्वी पाकिस्तान को मिला था। सिंध का एक जिला

थारपारकर, जो राजस्थान से सटा था, हिंदू बहुल था। अमरकोट आदि शहर उसी में आते थे।

यदि हमारे तत्कालीन राजनेता चाहे वे सिंध के थे या राष्ट्रीय स्तर के थे, अड़ जाते और सिलहट जैसा व्यवहार सिंध के थारपारकर के साथ भी करने की जिद पकड़ लेते तो आज कम-से-कम थारपारकर ही भारत में सिंध राज्य के रूप में रहता। आज के विश्व भर में फैले सिंधी समाज उसी थारपारकर रूपी सिंध को एक अनूठा राज्य बना देते। वैसे भी थारपारकर के अमरकोट को अंग्रेजों ने जोधपुर राज्य से लिया था। यह सुरक्षा के लिए कुछ समय के लिए लिया गया था। वैसे भी अमरकोट माड़वाड़ क्षेत्र में ही आता था। पर सबसे बड़ी बात यही थी कि जिन्ना के उन्माद में हमारे तत्कालीन शासकों की बुद्धि कुंठित हो चुकी थी। जिन्ना ने भारतीय नेताओं को ठंडी धरा दी थी। उसके आक्रामक तथा डायरेक्ट एक्शन जैसे व्यवहार ने भारतीय नेताओं में भय का संचार कर दिया था।

उसी समय एक और रणनीतिक भूल हमारे नेताओं से यह हुई कि सिंध की एक मात्र देशी रियासत खैरपुर भारत में मिलने को इच्छुक था। खैरपुर की सीमा भारत के राजस्थान से सिंध के सिन्धु नदी के नजदीक रोहड़ी के पास तक फैली थी। खैरपुर के नबाव (मीर) किसी कारण से उस समय पुणे में रह रहे थे। उनके एक विश्वसनीय अधिकारी मेघाराम वाधवाणी ने नबाव को अपनी रियासत को भारत के साथ रखने पर सहमत कर लिया था। मेघाराम ने माउंटबेटन और पटेल से भी इस मोतल्लिक मुलाकात कर ली थी। पर पंडित नेहरू ने इस ऑफर को ठुकरा दिया।

हमारा कहना है कि यदि उस समय खैरपुर की रियासत का विलय भारत में हो जाता तो बाद में हमें थारपारकर जिला का सौदा करने में बनता या यदि किसी प्रकार दोनों ही जिद करके पा गये होते तो खैरपुर में थोड़ी अशांति तो रहती पर हम भारतीयों को सिंध और सिन्धु नदी के दर्शन होते रहते। क्या कश्मीर में हम अशांति नहीं झेल रहे हैं। क्या होता सिंध में हम अशांति झेलते-पर राष्ट्रवाद तो पुष्ट होता। अधूरे राष्ट्रगान को तो वर्षों गाना नहीं पड़ता। एक समाज तो अपने को ठगा हुआ महसूस नहीं करता। खैर!

जो इतिहास में घट गया वो घट गया।

तीसरी और अंतिम उपेक्षा-गलती-भूल जो सिंध से सम्बन्धित हमने अपने इतिहास में की वह यह है कि 1956 में जब राज्यों का पुर्णगठन हो रहा था, उस समय अनुकूल अवसर था कि हम कहीं भी एक छोटा सा सिंध राज्य बना देते। उस समय देश की ऐसी स्थिति थी कि केन्द्र शासित कौन कहे एक छोटा ही सही पर पूर्ण राज्य बनाना संभव था। लेकिन तीन-तीन उपेक्षाओं के बावजूद एक अच्छी बात यही हुई कि सन् 1967 में संविधान की आठवीं अनुसूची में हमने सिंधी भाषा को मान्यता दी।”

अपने थीसिस को निचोड़ में रख प्रोफेसर कुछ पल को चुप हो गया। थोड़ा जल पीकर अपनी प्यास बुझाई और पुनः बोला, “यह सिंध का बहुत ही ऊपरी-ऊपरी राजनैतिक इतिहास है। मैंने सिंध रूपी सागर को गागर में भरने का प्रयास किया है। हमारे अगले वक्ता सिंधी सभ्यता, भाषा, लोक साहित्य, लोक कथायें आदि विभिन्न विषयों पर पेपर पढ़ेंगे। लेकिन निचोड़ यही है कि भारत अब चौथी भूल नहीं करने जा रहा है। तीन भूल तक भगवान भी माफ कर देते हैं। चौथी भूल वो भी माफ नहीं करते हैं। अब हम सिंध की उपेक्षा नहीं होने देंगे। सिंध के अनुभवों से हिंद सीखेगा और सिंध से हिंद निर्माण की सुनहरी किरणें फूटेंगी। अब सिंध बनेगा और पूरी सिंधी सभ्यता, संस्कृति, भाषा, परम्परायें, लोक कथायें, सिंधी सम्पन्नता, साहस, व्यापारकला अपने चरमोत्कर्ष को छूयेगा। यह चरमोत्कर्ष भारत को ऊर्जा प्रदान करेगा।”

अपनी बात समाप्त कर प्रोफेसर जब माइक से हटा तो करतल ध्वनि से उसके प्रति हजारों लोगों ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

चांसलर माइक पर आये। सिंधीमय हो रहे माहौल को और घना करते हुए उन्होंने पटना विश्व विद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मनोरंजन कुमार चौधरी को सिंध पर प्रकाश डालती फणीश्वरनाथ रेणु की रचना को सुनाने का आग्रह किया। डॉ. चौधरी माइक पर आये। उन्होंने सरसरी निगाह से उतनी बड़ी सभा को देखा। उनके जीवन का यह पहला अनुभव था कि वो इतनी बड़ी सभा को सम्बोधित कर रहे थे। श्रोताओं में राज्य के गवर्नर, मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री से लेकर पटना विश्व विद्यालय परिवार और देश-विदेश से आये सिंधी समाज के लोग थे।

उन्होंने कहा, “मेरा सौभाग्य है कि भारत में सिंध निर्माण के इस महायज्ञ में मैं भी इतनी बड़ी सभा में हिन्दी के महान रचनाकार की एक कृति को पढ़ने जा रहा हूँ। यह कृति मुझे एक सिंधी विद्वान् से प्राप्त हुई है। उनसे हमारी मुलाकात अहमदाबाद में हुई थी। श्री विष्णुचंद खिलानी यहाँ उपस्थित हैं। उन्होंने मुझे कहा था कि इसे हिन्दी की किसी अच्छी पत्रिका में छपवा दीजिये। जब सिंध निर्माण को लेकर हमारे विश्व विद्यालय ने अपनी अग्रणी भूमिका निभानी शुरू की तो हमने प्रोफेसर रघुनंदन को यह कृति दिखाई। उन्होंने आज के दिन इसे सभा में सुनाने का निर्णय किया। मैं आपके सम्मुख इस कृति को सुनाने के लिए खड़ा हूँ। यह कृति सिंध को लेकर फणीश्वरनाथ रेणु जी का एक संस्मरण है।

सिंध में सत्रह महीने नामक यह संस्मरण हुंकार नामक पत्र में दिसम्बर 1945 में छपा था। रचना इस प्रकार है—

“सिंध में सत्रह महीने

गर्मी बेहद थी। ट्रेन में रेत उड़-उड़ कर इतनी आ रही थी कि सभी आँख-मुँह ढके हुए थे। स्टेशनों पर पानी का मिलना असम्भव था। कई जगह देखा, देहाती लोग पानी के लिए मिट्टी का बर्तन लेकर इंजन की प्रतीक्षा में खड़े थे। पंजाब-सिंध सरहद के इस इलाके में पानी की इतनी कमी है कि लोगों को या तो शहर से पानी लाना होता है या रेलगाड़ी के ड्राइवरों की कृपा पर वे निर्भर रहते हैं। दो-तीन प्रकार के मरूउभिदों के क्षितिज चुंबी जंगलों में सैकड़ों ऊँट चर रहे थे। बस ऊँट ही ऊँट और जानवरों का नाम तक नहीं। पथ और पगडंडियाँ जन शून्य थी। सहयात्री एक मुसलमान फकीर था। पूछने पर जबाब मिला कि इलाके में हूरों की अशांति के कारण छोटे-छोटे स्टेशन बंद हो गये हैं। हूर पीर पगारो के समर्थक थे जो डकैतों जैसा व्यवहार करते थे। ये अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध गतिविधियों में संलग्न रहते थे। रेलवे अंग्रेजों की व्यवस्था थी, इसलिए स्टेशन इनके निशाने पर थे।

सुबह हम मुल्तान में गाड़ी पर चढ़े थे। समोराहा जंक्शन तक तो पंजाबी वातावरण रहा, उसके बाद हिन्दुओं के परिधान में धोती के दर्शन होने लगे। तहमद और पाजामा पंजाब के साथ-साथ पीछे छूट गया। ट्रेन ज्यों-ज्यों

सिन्धु नद के कछार में आती गई, त्यों-त्यों जंगल घना होता गया। यह जंगल विराटकाय वनस्पतियों के नहीं थे, तो भी काफी घने थे। रोहड़ी के पास उस महान सिन्धु नदी की झाँकी मिली जिसकी धारा में डूब लगाकर सिकन्दर ने अपने देश-देवता जुपीटर को अर्घ्य दिये थे।

रोहड़ी सिन्धु के किनारे अवस्थित एक प्राचीन नगर है। आज कल नार्थ-वेस्टर्न रेलवे का जंक्शन होने के कारण उसकी प्रसिद्धि है। पर, पहले बड़े-बड़े सूफियों की लीला भूमि के रूप में ही यह स्थान विख्यात था। अभी भी सूफियों के दो-चार अखाड़े वहाँ मौजूद हैं। सिन्धु के उस पार सक्कर जैसा प्रसिद्ध नगर है। बीच में साधुबेला जैसा प्रसिद्ध टापू पड़ता है। पास में इंजीनियरिंग का महान चमत्कार वह महासेतु है। पंजाब से आने वाली गाड़ियाँ यहाँ काफी देर ठहरती हैं, फिर क्वेटा या कराँची की ओर जाती हैं।

रोहड़ी स्टेशन पर उतरते ही 'पल्ला' मछली के तले हुए बड़े-बड़े टुकड़ों ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया। जन्मजात मत्स्य-लोलुपता पानी बनकर जीभ पर उतर आई और मैंने अन्दर-ही-अन्दर अपने मैथिल पूर्वजों की स्वादवृत्ति को प्रणाम किया। तो क्या प्रणाम ही करके रह गया? नहीं, स्टेशन से बाहर निकल सराय में ठहरा और गुरूनानक होटल में बैठकर इत्मीनान से भगवान के मत्स्यावतार की पूजा की।

दूसरे दिन पुल पार करके सक्कर देखने गया। बाजारों में हिन्दुओं को धोती ही पहने पाया। नौजवानों और बच्चों की बात छोड़ दीजिए। अभी कल सुबह तक मैं पंजाब में था, जहाँ धोती का पहनावा हिकारत की निगाह से देखा जाता था। पाधा-पुरोहित, पूजा-पाठ, भोजन-भंडारा के समय धोती पहन लें, तो पहन लें; वरना वे भी पंजाब का भद्र परिधान ही पहनते हैं - चुस्त पाजामा, अचकन या कोट और सिर पर साफा, चादर हुई तो हुई। इस प्रकार पंजाब के दैनिक जीवन से धोती को हिन्दुओं ने हटा दिया है। पंजाब ही क्यों, लखनऊ से हम यही हाल देखते आ रहे थे। सिंधु के किनारे-किनारे मीलों तक चली गई है सक्कर बस्ती। जरा दूर हटकर नया सक्कर भी बस रहा है। उस दिन शायद पूर्णिमा थी। हजारों नागरिक सिंधु नद के दर्शन करने आये थे। दोने में कुंकम और अक्षत डालकर दीप जलाकर उसे प्रवाह में छोड़ रहे थे। शत-सहस्र दीपिकाओं का वह समूह अरब सागर की ओर बहा

जा रहा था। और, मैं सिंधी जनता के श्रद्धा-निवेदन का वह मधुर प्रतीक देख-देखकर चित्र-लिखित-सा खड़ा था। एक वृद्ध सज्जन ने भावावेश में पाकर मुझे छेड़ दिया-कहाँ से आये महाराज?

मैंने संक्षेप में बता दिया और पूछा-नदी के किनारे इस प्रकार श्रद्धापूर्वक दीप बहाते तो मैंने कहीं नहीं देखा है, आपके देश में यह कौन-सी रीति है?

वृद्ध सज्जन ने कहा-हम सिंधी वरूण के उपासक हैं। जहाँ जाएँगे आप इस देश में यही रीति पाएँगे।

उसी प्रसंग में उक्त सज्जन ने एक अनुष्टुप सुनाया-

केचिदत्र निराकाराः साकाराश्च तथाऽपरे।

वयं संसार संतप्ता नीराकारमुपास्महे॥

अर्थात्-कुछ आदमी तो इस दुनिया में निराकार की उपासना करते हैं, कुछ साकार की; परन्तु भव-ताप से संतप्त हम प्राणी नीराकार यानी जलमय भगवान् की उपासना करते हैं।

मैं यह सुनकर दंग रह गया। आगे कई बार, कई जगह सिंध में इस प्रकार के दृश्य देखने को मिले। उन पर पृथक् ही एक लेख लिखा जा सकता है। प्रकारान्तर वरूण की उपासना में यहाँ के मुसलमान भी भाग लेते हैं। सिंधु नद को 'दरियाशाह' जैसे महामान्य नाम से वे सम्बोधित करते हैं।

उस दिन घूमघाम कर साधुबेला भी देख लिया। उदासी साधुओं का एक बहुत बड़ा अखाड़ा है। पाँच सौ बीघे का रकबा होगा। साधुओं का बगीचा ठहरा, हिन्दुस्तान भर से तरह-तरह के फलों की गुठलियाँ ला-लाकर यहाँ वे लगाते हैं। एक ही जगह आम, अमरूद, जामुन, कटहल, केला, लीची, संतरा, अंगूर, नासपाती, सेव, बेर आदि मैंने यहीं देखे।

सत्रह महीने तक सिंध से मेरा सम्पर्क रहा-हैदराबाद की सारस्वत ब्राह्मण पाठशाला में प्रधानाध्यापक पद पर कुछ दिन और कुछ दिन सिंध की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मुख्य पत्र 'कौमी बोली' के सम्पादक रूप में।

1941 की मर्दुमशुमारी (जनगणना) के अनुसार सिंध प्रान्त की जनसंख्या 45 लाख है, जिसमें 11 लाख हिन्दू हैं। जनता की धार्मिक मनोवृत्ति सूफी और नानकपंथी है। आठवीं सदी के शाहनमाह के अरबी लेख से पता चलता है कि उस समय वहाँ बौद्ध और ब्राह्मण दोनों ही संस्कृति के लोग रहते थे। सिंध पर अरबी आक्रमण मुहम्मद-बिन कासिम के बाद से इस भूमि में इस्लामी भावनाओं का प्राधान्य चला आ रहा है। मीरों, कलहारों और नबाबों की सामंतशाही से उबकर स्थानीय जनता राजपूताना, कच्छ, गुजरात और पंजाब में जा बसी और सिंधु नद के उपजाऊ इलाकों को आगंतुकों के लिए खाली कर गई। उन्हें तलवार छोड़कर तराजू का सहारा लेना पड़ा। इसी से सिंध का नागरिक जीवन आज इस्लाम प्रधान हो गया।

गुरु नानक की संतवाणी यहाँ के हिंदुओं और दूसरे लोगों में काफी लोकप्रिय है। सूफी संतों की परम्परा यहाँ ऐसी प्रबल रही है कि सभी सिंधी सूफी धारणाओं से ओत-प्रोत हैं। किसी सिंधी हिंदू से आप मिलिए और पूछिये कि तुम क्या मानते हो, वह अवश्य गुरु नानक और शाह अब्दुल लतीफ के दो-चार पद सुना देगा। शाह अब्दुल लतीफ बहुत बड़े सूफी कवि थे। सिंध में वह इतने लोकप्रिय हैं कि उन्हें वहाँ का तुलसीदास कहा जाता है। सिंधी मुसलमानों को बहुधा मैंने हिन्दू मंदिर, वरूण चैत्य और गुरुद्वारों के सामने सिर झुकाते देखा है। हिन्दुओं को पीरों की दरगाह के समक्ष नतमस्तक पाया है। हिन्दू हो या मुसलमान, सिंधी का हृदय प्रेम-मार्गी है। अठारवीं सदी के मस्त फकीर सचल सरमस्त का यह दोहा कितना बढ़िया है—

‘आहि रूहु मंहिजो अरब जो ऐं खाकी हिंदू जी अहमद मिल्यो हुते त
हिंति श्याम मिल्यो आहि’ (मेरी आत्मा अरब की है, तो शरीर हिंदू की; वहाँ
अगर मुहम्मद मिले तो यहाँ श्याम मिले हैं।)

साम्प्रदायिक दंगे सिंध में उतना उग्र रूप नहीं धारण करते, जैसा अन्य प्रांतों में। एकतारा पर पीरों के गुणगान करने वाले हिंदू भगतों को झूमते देखा है।

मुल्तान कभी सिंध के अन्तर्गत था। वर्तमान प्रान्त विभाजन के अनुसार मुल्तान कमिश्नरी पंजाब के अन्दर है, परन्तु औरतों की नाकों में पुखराज वाली नथ देखकर सहसा उनकी तुलना आप सिंधी महिलाओं से कर बैठेंगे। जल-पूजा मुल्तान में भी प्रचलित है। सिंध के महात्मा उडरो लाल वरूण के अवतार माने गये हैं और वरूण असुर सभ्यता का उतना ही पूज्य देवता है, जितना कि इन्द्र वैदिक सभ्यता का। असुर सभ्यता के अवशेष सिंध के मोहनजोदाड़ो और पंजाब के हड़प्पा में समान रूप से पाये गये हैं। तत्कालीन सभ्यता का चिह्न (जल पूजन) भी मुल्तान के निकटवर्ती स्थानों तक प्रचलित है-और सिंध में तो जल पूजकों का एक सम्प्रदाय ही बन गया है, जिसे दरियापंथी कहते हैं।

सिंध का जन जीवन दूसरे प्रांतों की अपेक्षा सुखी है। कारण यह है कि वहाँ आबादी कम है। सिंधु नद से नहरें निकाल-निकाल कर गैर आबाद और ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाने की योजना अमल में बहुत कम लाई गई है। फिर भी प्रान्तीय सरकार की ओर से खेती करने के लिए बराबर लोगों का आह्वान होता रहता है। बाहर के लोग भी वहाँ जाकर खेती करने लगे हैं। पक्के कृषिकार तो वहाँ के मुसलमान ही हैं। सिंध के हिंदू व्यापारोन्मुखी जाति है। सिंधी सौदागर दुनिया के कोने-कोने में फैले हुए हैं। जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, जापान, फारमूसा, चीन, मंचूरिया, कोरिया, मंगोलिया, अफ्रीका के निर्जन प्राय इलाकों में, अरब, ईरान, अफगानिस्तान, साम, सीरिया, मिस्र, यूरोप के छोटे-बड़े देशों में, अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी भागों में और कहाँ नहीं ये सिंधी सौदागर फैले हुए हैं।

इस महासमर के युग में हजारों सिंधी धुरी राष्ट्रों द्वारा विजित देशों में अटके रहे। सिंधी व्यापारियों की यह जाति भाई-बंद (भाई बंधु) कहलाती है। एक दिन किसी मित्र ने कहा-मेरा भाई मंगोलिया की सरहद पर चार महीने रह आया है। सैकड़ों फोटो साथ लाया है। देखना हो तो साथ चलिए।

मैंने देखा तो सोवियत मंगोलिया के उद्युद्ध जीवन के प्रतीक कई चित्र थे। उस युवक से बातें हुई, राजनीतिक मामले में काफी जागरूक निकला

वह। दूर-दूर तक फैले हुए ये सिंधी सौदागर अपने देश लौटकर दान-पुण्य के खाते में काफी रकम खर्च करते हैं। ऐसे ही एक सौदागर ने मुझे हंसकर कहा-हम अपने देशवासियों को थोड़े लूटते हैं? बाहर वालों को मूड़ते हैं, अपनों को खिलाते-पिलाते हैं। और ठीक ही कहा था उसने। व्यापार-क्षेत्र में सिंधियों की जो प्रसिद्धि है, वह बाहरी दुनिया को लेकर ही।

भारत के दूसरे प्रान्तों में सिंधी व्यापारी बहुत कम हैं; परन्तु भारत के बाहर व्यापारी बनकर रहने वाले भारतीयों में सबसे बड़ी संख्या सिंधियों की ही है। मारवाड़ी तो अभी वर्मा तक ही पहुँचे हैं। आगे बढ़ने में धर्म का बाह्य आडंबर उन्हें रोकते हुए है। सिंधियों की स्थिति इस संबंध में प्रगतिशील है। छूत-छात का भूत उनसे हार मानता है। नानक पंथी और सूफी भावना के कारण उनमें हद दर्जे की सर्व-धर्म सहिष्णुता होती है। बाहरी दुनिया से निरन्तर संपर्क के कारण उनका स्वभाव युगधर्मा बन गया है। यही कारण है कि दुनियाँ के कोने-कोने में ये पहुँच गये हैं। मिलनसार ये इतने कि दुनिया के बर्बर से बर्बर जातियों के बीच अपनी दुकानदारी चला ले जाते हैं। आर्थिक उदारता के लिए तो सिंध के ये भाई बन्द मशहूर हैं ही, पर धार्मिकता और सामाजिकता भी इनमें पर्याप्त होती है। वे जहाँ-कहीं भी रहेंगे, गुरु ग्रंथ और गीता साथ रहेगी; साधु-ब्राह्मण और अतिथि-अभ्यागत इनके यहाँ बहुत ही सम्मान पाता है-चाहे स्वदेश में, चाहे विदेश में। व्यापार ये अधिकतर मोती, जवाहरात, सिल्क-रेशम, सोना-चाँदी का ही करते हैं। कीमती कपड़ों की बड़ी-बड़ी फर्में देश-देशान्तर में सिंधी व्यापारियों के नाम से जुड़ी हुई है। इन भाईबन्दों का शायद ही कोई परिवार होगा, जिसका कोई न कोई सदस्य समुद्रलंघन न कर आया हो। अपने साथ वे ब्राह्मणों को भी खींच ले जाते हैं। मेरे सिंधी विद्यार्थियों में से एक आजकल कोलम्बो में है, दूसरा गाइना में, तीसरा है अरब में और चौथा चीन में। यह सब मैं अपनी प्रतिष्ठा-वृद्धि के लिए नहीं लिख रहा हूँ, क्योंकि आषाढ़ी-पूर्णिमा में उन लोगों ने कभी गुरु-दक्षिणा नहीं भेजी। सोचा होगा, दो-चार महीने ही पढ़ा है- गुरु-शिष्य का गठबन्धन जिन्दगी भर का तो होता नहीं! पर मैं तो नहीं छोड़ूँगा, एक आस्थावान आचार्य के शब्दों में कहूँगा-

एकाक्षर प्रदातारं

यो गुरुं नाभिमन्यते।

इस श्लोक का उत्तरार्द्ध नहीं लिखूँगा, क्योंकि उसमें शाप दिया गया है।
बेचारे कहीं रहें, मस्त रहें!

एक दिन अपने यजमान की ओर से एक मित्र निमंत्रण दे गये। आपत्ति का कोई कारण नहीं था, आत्माराम वहाँ पहुँच गए। जीमते वक्त पूछा-तो पता चला, मित्र के यजमान का भतीजा शंघाई में मर गया था। तीसरे साल की बात है-उन दिनों उक्त नगर जापान के अधिकार में आ गया था। मरने की खबर तीस मास पर कराँची पहुँची थी। उसी तरूण का श्राद्ध था। गुरुग्रंथ और गीता के अखण्ड सप्ताह के बाद पाँच ब्राह्मणों और पाँच संन्यासियों को भोजन कराया गया। यह सब बात भाई चेलाराम ढोलनमल ने मुझे स्वयं बताया। वही परिवार के मुखिया थे। जापान का आक्रमण होने से पहले तक खुद भी शंघाई और तोकियो में रह आए थे। रेशमी कपड़ों का व्यापार था। अमेरिकन ढंग की अंग्रेजी बोल रहे थे। अभी भी परिवार के चार सदस्य प्रशान्त महासागर के विभिन्न टापुओं में अवरूद्ध थे।

कहाँ तक गिनाऊँ, सिंधियों के साथ बात करने पर जब दुनिया के छोटे-बड़े शहरों के नाम निकल आते हैं और ऐसा बहुधा होता है, तो मेरा घुमक्कड़ मन उछलने लगता है और अंत में उसी लोमड़ी की भाँति बैठ जाता, जिसने निराश होकर कहा था-अंगूर खट्टे हैं।

सिंध के सबसे अधिक प्रतिष्ठित, सुसंस्कृत और सुशिक्षित लोग आमिल हैं। हिन्दुओं में प्रमुख ये ही दो जातियाँ हैं, आमिल और भाई बन्द। एक बुद्धिजीवी है तो दूसरा वाणिज्यजीवी। ब्राह्मण थोड़े ही हैं, दाल में नमक के बराबर 'तोयस्थं लवणं यथा'। अमल से आमिल शब्द की व्युत्पत्ति है। ये लोग दीवान कहलाते हैं, मुस्लिम शासन-काल में बड़े-बड़े ओहदे पर रहने के कारण इस जाति का नाम ही आमिल पड़ गया। यह अपने नाम के साथ द्विवेदी, त्रिपाठी, चतुर्वेदी, उपाध्याय, मिश्र आदि की भाँति कृपलाणी, गिदवाणी, वासवाणी, गुलराजणी, मीरचन्दाणी आदि वंशगत उपाधियाँ जोड़ते हैं। भेद इतना ही है कि द्विवेदी, त्रिपाठी आदि उपनाम बहुत प्राचीन हैं और

ज्वलंत ब्राह्मणत्व की याद दिलाते हैं; परन्तु कृपालाणी और गिदवाणी आदि उपाधियाँ दस-पाँच पुस्त पहले के अपने-अपने प्रख्यात वंशधरों की अमिधा को सूचित करते हैं-कृपाल से कृपालाणी, गिदू का गिदवाणी, वासू का वासवाणी आदि। बहुत दिमाग लड़ाया कि यह आणी क्या है। एकाएक ख्याल आया गार्ग्यायाणि, दांडायनि आदि। अपत्य अर्थ को बतलाने वाला गोत्र-सूचक यह 'आयनि' और आमिल लोगों के उपनाम की यह 'आणि' यदि दोनों मिलाये जायें तो भाषा-विज्ञान के प्रेमियों को इस संबंध में निराश नहीं होना पड़ेगा। हमारे आचार्य कृपालानी (कृपालाणी कहिये) इसी आमिल जाति के कुल दीपक हैं। आचार्य गिडवाणी (सिंधी उच्चारण गिदवाणी) भी इसी जाति के रत्न थे और साधु टी. एल. वासवाणी का नाम कौन नहीं जानता है? इस प्रकार हम देख सकते हैं कि शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में भी सिंधियों का नाम जिन्होंने उज्ज्वल किया है, वह सबके सब आमिल हैं।

बुद्धिजीवी होने के कारण आमिलों को भी उसी प्रकार बेकारी से लड़ना पड़ता है जैसे बंगालियों को। शादी-व्याह में कन्या-पक्ष वालों को भी बंगाल की तरह ही यहाँ भी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। हर एक सपूत का बाप कन्यावालों को निचोड़कर सीढ़ी बना डालता है। नतीजा यह हो रहा है कि हजारों आमिल लड़कियाँ वयः प्राप्त होने पर भी बाध्यतामूलक अविवाहित जीवन बिता रही हैं, लड़कियों के विवाह की यह समस्या भाई-बन्धों में नहीं है। उनके यहाँ न तो अति उच्च शिक्षा प्राप्त लड़कियाँ हैं कि जिनके लिए अति उच्च शिक्षित लड़कों की अनिवार्यता हो, न वैसे लड़के हैं जिनकी कीमत पचीस-पचास हजार कूती जाय। मिडिल या मैट्रिक तक की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाएँ दिलवाकर ये अपने बच्चों को धन्धे में लगा देते हैं; लड़कियाँ उनके यहाँ अविवाहित कदाचित् ही रहती हैं।

जनता का तीसरा वर्ग है कृषकों का। उनमें पंचानवे प्रतिशत मुसलमान हैं। बड़े-बड़े जागीरदारों और गद्दीनशीन पीरों की हुकूमत के अन्दर सिंध के देहाती मुसलमान बहुत ही पिछड़ी हालत में पड़े हैं। उनमें पंजाबी मुसलमानों को मैंने अधिक जागरूक पाया। अपने पीरों के प्रति उनके हृदय में गम्भीर श्रद्धा है। ऐसे बीसों पीर होंगे, जिनके मुरीदों की संख्या लाखों तक पहुँचती है। ये धर्माचार्य भला कब चाहने लगे कि अनुयायियों में शिक्षा-प्रसार हो,

उनकी निरक्षरता हटे? कल-कारखाने सिंध में उतने नहीं है कि लाखों खेतिहर सर्वहारा की लम्बी कतार में खड़े होकर 'इनकलाब जिन्दाबाद' का नारा लगायें। कांग्रेस का शंखनाद वहाँ देहातों में पहुँचते-पहुँचते इतना धीमा पड़ जाता है कि ग्रामीणों को सुनाई नहीं पड़ता। नव-जागरण का सन्देश वहाँ नागरिकों तक सीमित है। साधारण जनता अभी भी पीरों और गुरुओं के मुँह से जो दो-चार पद सुनती है, उन्हीं तक उसकी अभिज्ञता की इतिश्री समझिए।

भौगोलिक व्यतिक्रम के कारण सिंध प्रान्त शेष भारत से कट-सा गया है। तिस पर अरबी लिपि ने तो और भी हद कर दी है। वह एक दीवार जैसी खड़ी है सिंध और भारत के दरम्यान।

सिंध के पश्चिमोत्तर भाग में बिलोचिस्तान की नग्न पहाड़ियाँ पड़ती हैं, उत्तर-पूर्व में बहाबलपुर रियासत के विरल बस्तियों वाले पंजाबी इलाके पड़ते हैं, पूर्व में राजपूताने का विशाल रेगिस्तान पड़ता है। पूर्व-दक्षिण कोने में कच्छ की छोटी-छोटी झाड़ी वाले भुरभुरी-मरूभूमि और कच्छ की खाड़ी पड़ती है, दक्षिण-पश्चिम में पड़ता है अरब महासागर। खानपुर से लेकर कराँची तक सवा चार सौ मील से ऊपर सिंध नद के दोनों किनारे लंगोटी की तरह फैला पड़ा है सिंधियों का छोटा-सा यह प्रान्त। आबादी घनी नहीं है। सारा प्रान्त आठ जिलों में विभक्त है-सक्कर, शिकारपुर जैकोवाबाद, लारकाना, दादू नवावशाह, मीरपुर खास, हैदराबाद, कराँची। इसमें मीरपुर पड़ता है जोधपुर लाइन में और जैकोबाबाद क्वेटा लाइन में। अवशिष्ट जिले (कराँची को छोड़कर) दरिया सिंध के कछारों में बसे हैं। जलवायु शुष्क है, वर्षा कम होती है। गर्मी भी खूब पड़ती है और जाड़ा भी खूब। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में भी वहाँ की रात्रि असह्य नहीं प्रतीत होती है। अरब सागर की पश्चिमी हवा सारे सिंध को प्राणवंत बनाए रहती है। गेहूँ और धान उपजते दोनों हैं, इतना उपजते हैं कि सिंधवासी उन्हें बाहर भी भेजते हैं। सिंध का शुमार हिन्दुस्तान के उन चन्द सूबों में की जाती है, जहाँ अन्न आवश्यकता से अधिक पैदा होता है। चारागाहों की बहुतायत है, इसलिए दूध-घी की भी कमी नहीं है। अभी तक सिंध की बहुत कम जमीन आबाद हो पाई है।

सोवियत रूस की पंचवार्षिक योजनाओं की तरह जब कभी कोई विराट औद्योगिक योजना हमारे इस महादेश में लागू होगी तो अकेला सिंध अनेक प्रान्तों का भरण-पोषण कर लेगा। भारतीय शासन विधान (1935) के मुताबिक जो मंत्रिमंडल वहाँ कायम है, उसने इन बातों की ओर बहुत ही कम ध्यान दिया है। पिछले दो-तीन वर्षों के अन्दर मुनाफा खोरी और अन्न चोरी का जो चक्र अन्य प्रान्तों में चला है, सिंध की स्वदेशी सरकार उन्हीं धूर्तों को प्रोत्साहित करती रही है जिन्होंने जनहित का गला घोटकर करोड़ों का लाभ-शुभ प्राप्त किया है।

सिंध का शासन अंग्रेजों ने सिक्खों से छीना था। 1847 ई. में सर नेपियर ने इसे बम्बई प्रांत में मिला दिया। अभी नौ साल पहले फिर इस प्रांत को बम्बई से अलग कर दिया गया है। शिक्षा और व्यापार में सिंध अभी भी बम्बई से जुड़ा हुआ है। धार्मिक और सामाजिक संबंध उसका पंजाब से हैं।

सिंधी भाषा आजकल अरबी लिपि में लिखी जाती है। पुराने पंडित दो-तीन मुझे वहाँ मिले, जो अरबी से अपरिचित और नागरी मात्र से परिचित हैं। अभी चालीस साल पहले तक सिंधी नागरी में लिखी जाती थी। बनियों ने तो अभी तक नागरी के अन्यतम रूप (मुडा लिपि से मिलता-जुलता हुआ) पकड़ रखा है। वास्तव में सिंधी भाषा के सूक्ष्म उच्चारण भेदों को प्रकट करने के लिए अरबी लिपि असमर्थ है। इस भाषा में पाली-प्राकृत-संस्कृत-अपभ्रंश से आने वाले शब्दों की तादाद इतनी अधिक है कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। क्या मुसलमान क्या हिंदू सभी उसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। किसी बहुत बड़े मौलवी या पण्डित की बात छोड़िए, साधारण सिंधी जनता जिस ठेठ सिंधी को व्यवहार में लाती है, उसमें 80% तद्भव शब्द ही रहते हैं। अठारहवीं सदी के एक मुसलमान सन्त की वाणी देखिए, कैसी है—

‘पूरब पन्धि न वजिणां, गिरिनारी गुमनाम
विभिचारी थी बाटते, करनि कीन बिसराम
सीने में संग्राम, सचा सना सुनिजे।

अपने में ही लीन मग्न गिरिनारी योगी कर्म-काण्डों में नहीं फंस्ते, और न अपना मार्ग त्यागकर आराम ही करते हैं-इनके हृदय में हमेशा युद्ध छिड़ा रहता है।

पाठक देखें कि इसमें कितने तद्भव शब्द हैं। अब आधुनिक सिंधी का एक नमूना देखें-

‘जदहि मात भारत जे चरिनन में तो
दिनो दानु भेटा में जेकी वि हो
छछुइ जानि ते भी न हिकिड़ो वगो
लंगोटी टुकरू, व्यो उघाड़ो सजो
तदहिं तोते आसीस माता कई
बधाई वदी तुहिं जी पदिवी वर्ई।’

विख्यात सिंधी कवि वेकस ने गाँधी को लक्ष्य करके कहा है-तुम्हारे पास जो कुछ भी था, सभी जब भारत माता के चरणों में भेट चढ़ा बैठे, एक छदाम भी बनीं बचा, सिवाय लंगोटी के और क्या रहा? सारा अंग उघाड़ था, तब तुम पर माता की आशीष हुई; उसने तुम्हारी पदवी बढ़ा दी!

दुर्भाग्य की बात है कि साहित्य सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा जैसी प्रतिनिधि संस्थायें सिंधी के प्रति उदासीन क्या, विमुख हैं। सिंधी के उन हजारों शब्दों की व्युत्पत्ति के आलोक में हम हिन्दी के तद्भव शब्दों की जड़ तक जा सकते हैं।

इधर चार-पाँच वर्षों में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति (वर्धा) के सदुद्योग से सिंध में हिन्दी प्रचार का काम होने लगा है। हिन्दुस्तानी की आड़ लेकर निखालिस ऊर्दू का प्रचार प्रांतीय सरकार की ओर से हो रहा है। सिंधी हिंदू अपनी सरकार से इस बात की माँग कर रहे हैं कि उनके लड़के को नागरी लिपि में हिन्दुस्तानी लिखने-पढ़ने की छूट दी जाए। लीगी शिक्षा मंत्री इस माँग से बिदकता है। हैदराबाद सिंध के दयाराम गिदूमल नेशनल कालेज के प्रोफेसर नारायण दास बथेजा को उस प्रांत की माध्यमिक शिक्षा में संस्कृत-प्रवेश का श्रेय प्राप्त है।

वहाँ के सारस्वत ब्राह्मण प्रतिभाशाली होते हुए भी अपने सम्पन्न यजमानों के मूयसी-दक्षिणा पाकर इतने अलस, इतने तन्द्रालु बन बैठे हैं कि अध्ययन अनुशीलन की अधिक आवश्यकता भला उन्हें क्यों होने लगी? संस्कृत शिक्षा की दशा सिंध में वही है जो पिंजरापोल कीलू ली-लंगड़ी गायों की होती है।

कराँची के एक मित्र ने अपने प्रांत की विशेषता बताते हुए बड़े अभिमान से कहा- सिंधी भिखमंगे नहीं होते, मजदूर, मोची, तेली-तमोली, सुनार-दर्जी सिंधी नहीं होते; वेश्याएँ भी सिंधी नहीं होतीं।

तो आखिर ये आये कहाँ से? मैंने उलटकर पूछा तो जवाब मिला- कच्छ, राजपूताना, पंजाब से; और घरेलू नौकर हमें आपके युक्त प्रान्त से बहुत सस्ते मिलते हैं।

सिंधी मित्र की उस मुस्कान ने मुझे चिढ़ाया नहीं, गम्भीर बना दिया। गोरखपुर, बस्ती, फैजाबाद, गोंडा आदि के हजारों ग्रामीण सिंध में भरे पड़े हैं। इन्हें यहाँ वाले भैया कहकर पुकारते हैं। भर, बोन, अहीर, राजपूत, कुर्मी, ब्राह्मण सभी जाति के हैं और सब काम करते हैं। निरक्षरता और सफाई का अभाव इन्हें स्थानीय लोगों से छाँटकर अलग कर देता है।

फिर शिक्षित से शिक्षित बिहारी और युक्त प्रान्तीय बर्मा में जैसे 'दरबान' कहकर पुकारा जाता है, उसी प्रकार वह सिंध में 'भैया' कहकर बुलाया जाता है। इससे मैं स्वयं कई बार तिलमिला उठा हूँ और बाद में ठन्ड़े दिमाग से कई बार सोचा है। दोष उनका नहीं हमारा ही है। हजारों और लाखों की तादाद में होते हुए भी गुजरात, महाराष्ट्र और सिंध में 'भैया' अपमान का-बुद्ध का प्रतीक बना हुआ है। जाहिल, चपाट और उजड़्ड! कम-से-कम पैसा लेकर अधिक-से-अधिक काम कर देना, निरक्षर भट्टाचार्य होने के नाते जीवन भर अंगूठा निशान करते रहना, परिवार को साथ नहीं रखना फिर भी आजन्म प्रवास में हमें औरों की निगाह में हल्के बनाये रखता है। धोती पहनकर, कन्धे पर चादर डालकर आचार्य कृपलाणी कराँची में एक बार भाषण कर रहे थे। श्रोताओं में सिंधियों की ही तादाद ज्यादा थी। सभा जब

विसर्जित हुई तो कइयों में मुँह से सुना गया-असाँ जो कृपलाणी भैया थी व्यो आहे (हमारा कृपलाणी भैया बन गया)।

बच्चों की देखभाल, रसोई-पानी, घर-बाग की रखवाली, पूजा-पाठ आदि कई दृष्टियों से सिंधी हिंदू भैया को ही पसन्द करते हैं। परिवारों में बिखरे होने के कारण यों भी इनका संगठन मेढ़कों को तराजू में तौलने की तरह मुश्किल है। तिस पर शिक्षा की कमी, झूठ-मूठ का आत्म-सन्तोष इनको पिछड़ी हुई स्थिति में रखे हुए है। अब छोटी-मोटी दुकान भी ये लोग करने लगे हैं। फेरी लगाकर दहीवाड़ा और पकौड़ा भी बेचना शुरू किया है। इक्के-दुक्के अपने लड़कों को पढ़ाने भी लगे हैं।

सिंध के अधिवासी शांतिप्रिय, आतिथ्य पारायण, सहिष्णु होते हैं। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से गए हुए लोगों की संख्या सिंध को सार्वदेशिक बना रही है। पंजाबी, बलोची, मारवाड़ी, गुजराती, कच्छी, काठियावाड़ी, राजपूताना और भैया सब मिलाकर इतना हो गये हैं कि सिंधी इनकी तुलना में थोड़े लगते हैं।

भोजन में भात और रोटी दोनों ही लोकप्रिय हैं। मांस-मछली न खाते हों, ऐसे सिंधी बहुत कम मिलेंगे। पापड़ खाने का काफी रिवाज है। खटाई और मिर्चे का इस्तेमाल खूब करते हैं।

कलामूलक वस्तुओं में कपड़ों की छपाई बहुत पसन्द आई। इस्लामी तूलिका से विचित्र बेल-बूटों, मेहराब की तरह छपी हुई किनारी वाले कपड़े आपको बहुत ही आकर्षक लगेंगे। मिट्टी और सिमेंट के योग से तैयार किये गये खपड़े और ईंटें भी सिंध के स्थापत्य कला-प्रेमियों की निगाह में विशेष स्थान दिलाती हैं। लकड़ी की वस्तुओं पर सिंधी कारीगर इतना बढ़िया बार्निश करते हैं कि देखते ही बनता है। जवाहरात के लिए तो सिंधी जौहरी मशहूर हैं ही।

सिंधु नद सिंध पहुँचते-पहुँचते 'सप्तसिंधु' कहलाने लगती है, क्योंकि वह अपने साथ कपिशा नदी और पंजाब की पाँचों नदियों को साथ लिए इस भूमि में प्रवेश करती है। यहाँ और कई बातों की चर्चा आवश्यक थी, परन्तु

लेख बहुत लम्बा हो गया है, अब मैं इसे यहीं समाप्त करता हूँ। सिंध के इतिहास और पुरातत्त्व का, प्राकृतिक दृश्यों का अधिक वर्णन करने के लिए हिन्दी में एक पुस्तक की आवश्यकता है।”

इतना लम्बा संस्मरण सुनाकर डॉ. चौधरी कुछ पल को रूके। सभा ने तालियाँ बजाकर उनका आभार व्यक्त किया। जिस समय डॉ. चौधरी रेणु का सिंध संस्मरण पढ़कर सुना रहे थे सिंधी समाज के सभी विद्वान, जिन्हें अपने-अपने विषय में पेपर पढ़ना था, विचार-विमर्श में लीन थे। विचार-विमर्श के बाद सभी सभापति चांसलर के पास गये और उनसे गुप्तगु की।

चांसलर डायस पर आये और डॉ. मनोरंजन चौधरी को धन्यवाद देने के बाद कहा कि सभी सात विद्वानों द्वारा मंच पर सिंध एवं सिंधी समाज के विभिन्न विषयों पर पेपर पढ़ना है। पर इन विद्वानों ने अपनी नई योजना हमारे सामने रखी है। उनका कहना है कि वो अब आलेख के स्थान पर सामूहिक रूप से क्रमशः महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए अपनी बात यहाँ उपस्थित श्रोताओं तथा देश तक पहुँचाना चाहते हैं। इनका कहना है कि यह पेपर पढ़ने से ज्यादा सरल और रुचिकर शैली होगी और इनका उद्देश्य भी पूरा होगा। हम चाहते हैं कि इन विद्वानों में कोई एक डायस पर आयें और अपनी प्रस्तुति के बारे में सभा को अवगत करायें।

लेकिन सभी विद्वान डायस के पास आ गये। सभी विद्वानों ने तत्काल विमर्श किया। इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी के विद्वान श्री विष्णुचंद खिलाणी आगे आये। माइक थामा और बोले, “पाटलीपुत्र की महान धरती को सर्वप्रथम नमन। बिहारवासियों को प्रणाम। बिहार सरकार को कोटिशः धन्यवाद। पटना विश्व विद्यालय के प्रति हार्दिक आभार और देश-विदेश से आये सिंधी भाई-बहनों को असांजी प्यारी सिंध की ओर से स्नेहिल आशीर्वाद।

प्रोफेसर रघुनंदन ने सिंध के इतिहास को जिस प्रकार समेटा है, मैं मुग्ध हूँ। मैं क्या मंच पर के हमारे पेपर पढ़ने वाले सारे मित्र मुग्ध हैं। हमें जो कहना है उसका बहुत बड़ा हिस्सा उनके थीसिस का है।

सिंध की त्रासदी, त्रासदी के कारण एवं समाधान की सक्रिय चेष्टा का अभाव ही आज हमें नये सिंध निर्माण को विवश कर रहा है।

बिहार के यशस्वी कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु के 'सिंध में सत्रह महीने' के संस्मरण में भी सिंध से संबंधित इतनी सारी जानकारीयाँ यहाँ दे दी गई हैं कि हम सबों को पेपर सुनाने की रणनीति में परिवर्तन करना पड़ रहा है। हमने डॉ. चौधरी को यह संस्मरण किसी पत्रिका में छपवाने दिया था। उस समय यह कल्पना भी नहीं थी कि पटना से सिंध निर्माण की प्रक्रिया शुरू होगी। बहुत ही अच्छा हुआ कि किसी भी पत्रिका के स्थान पर इसका यहाँ पढ़ना लाख गुणा ज्यादा फलदायी रहा।

अभी हम लोग एक रोचक शैली को अपनाने जा रहे हैं। हम सभी एक साथ एक-एक कर सिंध एवं सिंधी समाज की तथ्यपरक जानकारीयों को आपके सामने रखेंगे। इस शैली में हम ज्यादा से ज्यादा विषयों को कवर कर सकेंगे और अपने उद्देश्य को पूरा कर पायेंगे।

सर्वप्रथम, मैं अपने साथियों का परिचय आपसे करा दूँ। आप हैं सिंधी कॉन्सिल ऑफ इंडिया के श्री नरेश केसवानी जी। आपको बता दूँ कि यह संस्था विश्व भर के सिंधियों का संगठन है। आप हैं राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद के श्री मनन भाटिया जी। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत यह संस्था सिंधी भाषा के विकास हेतु कार्य करती है। आप हैं मुम्बई विश्व विद्यालय के सिंधी भाषा के विद्वान डॉ. भावदेव मतलानी। आप हैं सिंधी अकादमी दिल्ली की श्रीमति साधना तोलानी। आप हैं कोलकता के विद्वान श्री दीलेश भवनानी और आप हैं आपके शहर पटना के श्री पी. सी. दास। ये सन् 1947 में स्थापित बिहार सिंधी एसोशियेशन से जुड़े हैं। जहाँ तक कच्छ के आदीपुर स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी की बात है तो यह संस्था सिंध की स्मृतियों को भारत के सिंधियों के बीच जीवंत बनाये रखने के प्रति प्रतिबद्ध है। सिंधी भाषा, संस्कृति और जीवन शैली को लेकर विभिन्न विधाओं के माध्यम से यह संस्था काम कर रही है।

हम सभी इसी डायस से क्रमशः एक-एक तथ्य को आपके सम्मुख रखेंगे। हम वही बातें यहाँ रखेंगे जो पहले के दोनों वक्ताओं के पेपर में नहीं थी। और सबसे बड़ी, हम उसी बात को यहाँ रखेंगे जो सिंध निर्माण के इस आन्दोलन में अब सम्पूर्ण भारत को जानना चाहिए। चूँकि अब सिंध एक सच्चाई बनकर उभर रहा है और भारतवासी ही इस आन्दोलन को लेकर आगे बढ़े हैं, तो उन्हें सिंध की सामान्य जानकारी तो होनी ही चाहिए। मैं चाहूँगा कि भारत के सामान्य ज्ञान की विभिन्न परीक्षाओं में जैसे इंडोलॉजी से जुड़े प्रश्न रहते हैं वैसे ही सिंधोलॉजी से जुड़े प्रश्न रहें। सिंध और हिंद के नाल संबंध में इन जानकारीयों का सार्वजनिक ज्ञान राष्ट्र को मजबूत करेगा।”

सारे विद्वान् डायस को तीन ओर से घेरकर खड़े हो गये। सम्बोधन की नई शैली का सहारा ले अपनी बात रखने लगे –

- “राजा दाहिर सेन के चाचा राजा चच के पूर्व सिंध पर राय राजवंश का शासन था।
- पाणिनि ने अपनी पुस्तक में सिंध को सिंधु सौवीर लिखा है।
- अरबों के साथ युद्ध में राजा दाहिर के मृत्योपरांत उनकी पत्नी रानी लाडी ने अरबों से युद्ध किया।
- अकबर के दरबार में उसके नौ रत्नों में से दो सिंध के थे। ये थे अबुल फजल और फैजी।
- सिंध के ऐतिहासिक नगरों में ब्राह्मणावाद, अमरकोट, सेहवान और अरोड़ प्रमुख हैं
- सिंध के महत्त्वपूर्ण शहर थट्टा का नाम तट के नाम पर पड़ा है। यह सिंधु नदी के किनारे का शहर है।
- आज के सिंध के हैदराबाद शहर का पुराना नाम निरन कोट है।
- कराँची शहर का नाम कालाची नामक मछुआरा समाज की एक जाति के नाम से निकला है।

- सिंध के इतिहास का वर्णन अरबी में लिखी तीन पुस्तकों से ज्ञात होता है-जिन्हें बाद में सिंधी में अनुवाद किया गया-चचनामा, तारीख-ए-मौसूमी और तुफ्त अल करम।
- कालहारों राजवंश का कार्यकाल ई. 1700 से 1783 के बीच रहा।
- सिंध में मात्र एक ही देशी रियासत खैरपुर रियासत थी। यह बड़ी रियासत थी। इसकी पश्चिमी सीमा सिंधु नदी थी और पूर्वी सीमा आज के राजस्थान से सटी थी।
- राजघाट के अतिरिक्त महात्मा गाँधी की दूसरी समाधि आदीपुर-गाँधीधाम में है।
- गाँधी धाम की नींव 12 फरवरी 1948 को रखी गई।
- गाँधी धाम की भूमि को कच्छ के महाराजा (महाराव) ने 15000 एकड़ के रूप में दी थी। उस भूमि पर भाई प्रताप दयाल दास ने सिंधियों को बसाने के लिए अपनी अमूल्य सेवाएँ दी।
- सिंध शब्द की उत्पत्ति आर्यों के विशाल नदी को सिंधु यानि समुद्र कहने से हुई और उस नदी के आसपास के क्षेत्र को सिंध कहा जाने लगा।
- सिंधु नदी अखंड भारत की सबसे बड़ी नदी थी। यह 2735 कि. मी. लम्बी है। उसके बाद ब्रह्मपुत्र है जो 2703 कि. मी. लम्बी है। तीसरे स्थान पर गंगा है जो 2427 कि. मी. है।
- सिंधु नदी कैलाश पर्वत के नजदीक मानसरोवर झील से निकलते हुए तिब्बत, कश्मीर, पंजाब और सिंध होते हुए कराँची के पास केटी बंदर के पास अरब सागर में मिलती है।
- सिंधु नदी अपनी धारा बदलते रही है। यह अपनी धारा पूरब से बदलते हुए पश्चिम की ओर गई है। प्रारंभ में यह वर्तमान भारत के लखपत और नारायण सरोवर के पास से बहती हुई सिंधु सागर (अरब सागर) में मिलती थी।

- विश्व की तीन प्राचीन विकसित सभ्यताओं में सिंधु घाटी की सभ्यता एक रही है। मिश्र (इजिप्ट) की नील नदी की भी अपनी प्राचीन सभ्यता थी। उसी प्रकार ईराक की दजला और फरात नदियों की भी अपनी प्राचीन सभ्यता रही है। इसे ही मेसोपोटामिया की सभ्यता भी कहते हैं।
- सक्कर के पास तीन द्वीप हैं साधुबेला, बाखर और जीन्दपीर। साधुबेला हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थल था।
- आजादी पूर्व सिंध में सिंधु नदी पर सक्कर में लैंसडाउनब्रिज और लॉयड बराज नामक दो ब्रिज थे। ये दोनों इंजीनियरिंग के नायाब नमूने थे।
- सिंध का जैकोबाबाद शहर सबसे गर्म शहर है। गर्मी में यहाँ का तापमान सबसे ज्यादा होता है।
- अरबों द्वारा अरोड़ को ध्वस्त करने के बाद बाखर शहर को बसाया गया।
- विश्व का सबसे बड़ा किला सिंध के रानी कोट में है।
- साधुबेला धार्मिक स्थल का निर्माण 1823 ई. में वनखण्डी महाराज ने की थी।
- वेदों के श्लोकों का सर्वप्रथम गायन सिंधु नदी के किनारों पर ही हुआ था।
- सिंध में सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन स्थल हैं-मोहनजोदाड़ो, चनहुन-ए-जोदाड़ो, काहू-ए-जोदाड़ो, सतकजान-ए-दाड़ो, अमरी आदि।
- मोहनजोदाड़ो के तेरह एकड़ में ही खुदाई हो पाई है। पाकिस्तानी सरकार ने 1947 से ही खुदाई बंद करवा दी है।
- इन तेरह एकड़ में 17 सेटेलमेंट के विभिन्न स्तर पाये गये हैं।

- इस सभ्यता की सबसे बड़ी विशिष्टता है अंडर ग्राउंड ड्रेनेज प्रणाली। यह विश्व की किसी भी पुरानी सभ्यता में नहीं मिलती है। आज भी भारत के अधिकांश शहरों में यह व्यवस्था नहीं है।
- सिंध के महान सूफी संत सखी शाहवाज कलंदर को राजा भरथरी का अवतार माना जाता है।
- सिंधी समाज में जल को देवता मानकर पूजने के पीछे का कारण रहा है कि सिंधी समाज में व्यापारी होते थे। यह जहाजों पर देश-विदेश में जाकर व्यापार करते थे। उनकी महिलायें जल को देवता की तरह पूजकर अपने परिवार के पुरुष वर्ग के सकुशल वापसी की प्रार्थना करती थीं। धीरे-धीरे यही पूजन सिंधी समाज की संस्कृति का अंग हो गया।
- जल देवता को पूजने को लेकर ही सिंधियों में बेहराणा प्रथा का चलन हुआ।
- चैत्र माह के प्रथम दिन को ही सिंधी में चेत्रीचंड कहा जाता है। सिंधियों का यही नये वर्ष का प्रथम दिन है। यह दिन सिंधी समाज सिंधियत दिवस के तौर पर भी मानता है। यह दिवस भाषा, संस्कृति और समाज में एकता के तौर पर मनाया जाता है। इसी दिन भगवान झूलेलाल का भी जन्म हुआ था।
- सिंधी लोक कथाओं की संगीत, नृत्य और नाटकीय माध्यम द्वारा प्रस्तुति को 'भगत' कहा जाता है।
- सिंध के महत्वपूर्ण भगतों में भगत सतराम दास, भगत कंवर राम, भगत जाड़ो, नारू भगत, भगत कानिया राम और भगत घनश्याम प्रमुख रहे हैं।
- इन भगतों में सबसे लोकप्रिय भगत कंवर राम थे। इनका जन्म सन् 1885 को हुआ था। इनकी हत्या सिंध के रूका स्टेशन पर सन् 1939 में कर दी गई।

- सिंधियों के सांस्कृतिक राजदूत की उपाधि प्रोफेसर राम पंजवाणी (1911-1987) को दी गई है। प्रोफेसर पंजवाणी मिट्टी के घड़े को सिंधी वाद्ययंत्र के रूप में विकसित किया। इसे सिंधी भाषा में दिलो कहा जाता है।
- शादी के समय सिंधी महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत को लाडा कहा जाता है।
- सिंधी भोजन में साई भाजी, सिंधी कड़ही, दाल पकवान, कोकी और पापड़ प्रमुख हैं।
- सिंधी त्योहारों में लाल लोई, तिरमुरी, चेत्रीचंड, बेहराणा, तिजरी और थाडरी प्रमुख हैं।
- सिंधी लोककथाओं में ससुई-पुन्हूँ, लीला-चनेसर, उमर-मारवी, मूमल-राणो, सुहणी-मेहार, बीजल-रायडियाच, नूरी-तमाची, सूरवीर दोदो-अबड़ो, कोयल-दीपचंद और मोरिड़ो-मीरबहर प्रमुख हैं। ये सभी मानवीय कोमल भावनाओं को जीवंत खड़ी करने वाली लोक कथायें हैं।
- आजादी के बाद जिन महान सिंधी संतों ने भारत में सिंधियों के बीच शांति और ज्ञान की वर्षा की है उनके नाम हैं— साधु वासवानी, दादा जशन वासवानी, माँ हरि वासवानी, रेव. रोचलदास, संत लीला शाह, स्वामी शांति प्रकाश, हलानी दरवार के बाबा गोविन्द दास और भीलवाड़ा के बाबा शेवाराम।
- स्वामी लीला शाह की समाधि आदीपुर, कच्छ, में है।
- सिंधियों में अपने सरनेम के अंत में अनी लगाने का सीधा अर्थ है पारिवारिक वंश परम्परा से अपने को जोड़ना। अपने दादा, परदादा या उनसे भी पहले के अपने पूर्वजों के नाम से अपने को जोड़ना। जैसे रामचंदाणी का मतलब हुआ अपने रामचंद नाम के अपने पूर्वज से अपने को जोड़ते हुए वंश परम्परा को आगे बढ़ाना।

- सिंधी लेखक श्री लालचंद अमर दीनोमल जगतियानी ने इच्छा व्यक्त की थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी अत्येष्टि सिंधु नदी के तट पर ही की जाय।
- आज की सिंधी भाषा दसवीं शताब्दी में विकसित हुई थी। यह ब्राचड अपभ्रंश से निकलकर विकसित हुई।
- महान रचना 'सिंधी भाषा का इतिहास' के लेखक हैं - भेरूमल माहिरचंद आडवाणी।
- सिंधी भाषा के तीन महान कवि हुए हैं - शाह अब्दुल लतीफ, अब्दुल बहाव सचल और भाई चैनराय बाचोमल दातारमानी। इन्हें ही शाह, सचल और सामी के नाम से जाना जाता है।
- शाह अब्दुल लतीफ की पुस्तक 'शाह जो रिसालो' में सिंध की सात लोक कथाओं का अद्भुत वर्णन है। ये सात लोक कथायें हैं - लीला-चनेसर, मूमल-राणो, सुहणी-मेहार, ससुई-पुन्हूँ, नूरी-जाम तमाची, बीजल-रायडियाच और उमर-मारवी।
- भारत में हिन्दुस्तान किताब घर ने 1958 में शाह जो रिसालो को छापा था।
- अब्दुल बहाव सचल को विद्रोही सूफी कवि कहा जाता है। इन्हें सरमस्त के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने सिंधी, हिन्दी, पर्सियन, पंजाबी, अरबी, ऊर्दू और सिराईकी में अपनी रचना की थी।
- सामी की (सन् 1743-1850) रचनाओं में वेदांत का प्रभाव है। इनके बारे में विख्यात है कि ये अपनी रचनाओं को कागज पर लिखकर मिट्टी के घड़े में डाल देते थे। इनकी रचनायें श्लोक के रूप में हैं।
- भारत में सबसे पहले सिंधी भाषा में ही कुरआन का अनुवाद हुआ। कुरआन अरबी भाषा की पुस्तक है।

- सिंधी गद्य के पितामह हैं दीवान कैरोमल चन्दनमल खिलनानी। उन्होंने कवि सामी के कृतियों को बहुत ही मिहनत से प्रकाशित कराया।
- सिंधी साहित्य में सबसे ज्यादा रचना करने वाले हैं मिर्जा कुलीच बेग। उन्होंने 475 पुस्तकों की रचना की। उन्होंने ही सन् 1888 में सिंधी के पहले उपन्यास को लिखा। इस उपन्यास का नाम है दिलारम। उन्होंने ही पहले सिंधी नाटक को लिखा। नाटक का नाम है लैला मजनू।
- दया राम गिदूमल को सिंध का राजऋषि कहा जाता है।
- सिंध के हिंदुओं के बारे में विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी देने वाली पुस्तक 'सिंधी हिंदुओं का इतिहास' के लेखक है भेरूमल माहिरचंद आडवाणी। इस पुस्तक का रचना काल सन् 1946-47 है।
- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तक गीतांजली का सिंधी अनुवाद करने वाले थे प्रोफेसर मेघाराम मलकानी। इन्होंने गीतांजली का अनुवाद सन् 1942 में किया था।
- भारत के राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और दिल्ली में सिंधी साहित्य अकादमी की स्थापना हो चुकी है।
- गोविन्द माल्ही सिंधी भाषा के सबसे बड़े उपन्यासकार हैं। उनकी बहुत सी पुस्तकें काफी चर्चित हैं। सिंधी के ही दो और लेखक श्री उत्तम और श्री कीरत की रचनायें भी बहुत पढ़ी जाती हैं।
- महात्मा गाँधी की ऑटोबायोग्राफी का सिंधी अनुवाद नारायण दास रतनमल मलकाणी ने किया था।
- पंडित नेहरू के ऑटोबायोग्राफी का अनुवाद तीरथ बसंत और नारायण दास रतनमल मलकाणी ने किया था।
- सिंधी का पहला अखबार सिंध-सुधार था। इसे सन् 1866 में शुरू किया गया था। इसके पहले सम्पादक नारायण जगन्नाथ वैद्य थे।

- हिन्दुस्तान नाम का अखबार सिंधी भाषा का भारत में सबसे पुराना अखबार है। इसका पुराना नाम हिंदू था।
- भारत में छपने वाली सिंधी विषयों से संबंधित अंग्रेजी पत्रिकायें हैं - सहयोग टाइम्स, सिंधी इंटरनेशनल, असीन सिंधी, कोलकता सिंधीज, दि सिंधियन आदि।
- लंदन के दो पुस्तकालयों में सिंधी पुस्तकों का विशाल संग्रह है। ये हैं ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी और इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी।
- सिंधी में भारतीय संविधान को प्रकाशित करने का गौरव इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी को जाता है। भारत सरकार के कानून एवं न्याय मंत्रालय की ओर से इसका प्रकाशन हुआ था। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद भवन में ही इसका विमोचन किया था।
- महात्मा गाँधी के साथ चम्पारण सत्याग्रह में आचार्य जे. वी. कृपलानी साथ थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दो अधिवेशन सिंध में सन् 1913 एवं 1931 में कराँची में हुआ था।
- डॉ. चोइथराम गिदवाणी (1889-1957) को सिंध का दहाड़ता हुआ शेर कहा जाता था।
- सिंध में आजादी की दीवानगी का एक उदाहरण यह है कि साहित्य के थावाणी परिवार के चार वंशजों के सात लोग स्वतंत्रता आन्दोलन में जेल गए थे। इसमें औरतें भी शामिल रही हैं।
- सन् 1930 के दांडी मार्च में महात्मा गाँधी ने खुद आनंद हिंगोरानी को एक सत्याग्रही के नाते चुना था और अपने साथ रखा था।
- महात्मा गाँधी सात बार सिंध गए थे। पहली बार सन् 1916 में और अंतिम बार 1934 में।
- सिंध के 19 वर्षीय शहीद हेमू कलानी को शहीद भगत सिंह के समान माना जाता है। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान सक्कर के पास अस्त्र-शस्त्र से भरी ट्रेन को, जो क्वेटा जा रही थी, तबाह करने

के आरोप में उन्हें फाँसी दे दी गई थी। वो रेल पटरी के फिश प्लेट को खोलकर ट्रेन एवं उसमें लदे अस्त्र-शस्त्र को तबाह करना चाहते थे।

- शहीद हेमू कलानी की माँ श्रीमति जेठी बाई पेसूमल कलानी को सिंधु माता की पदवी दी गई थी।
- आचार्य जे. वी. कृपलाणी को 1946 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मेरठ अधिवेशन में अध्यक्ष बनाया गया था। उनकी पत्नी का नाम श्रीमति सुचेता कृपलाणी था। वो उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनी थीं।
- आचार्य भगवान देव ने सर्वप्रथम भारतीय संसद में सिंधी में अपना भाषण दिया था।
- सी. एच. आत्मा और बूलो सी. रानी हिन्दी फिल्मों के सिंधी गायक थे।
- 'हमें तो लूट लिया मिल के हुस्न वालों ने
काले-काले बालों ने गोरे-गोरे गालों ने'
इस विख्यात कव्वाली को बूलो सी. रानी ने ही हिन्दी फिल्म अल्लाह-हिलाल में प्रस्तुत किया था।
- गोविन्द निहालाणी, रमेश सिप्पी, धर्म कुमार, कुमार शाहानी, जी. पी. सिप्पी आदि विख्यात हिन्दी फिल्म डायरेक्टर सिंधी मूल के हैं।
- शोले फिल्म के निर्माता जी. पी. सिप्पी थे।
- रिचर्ड एटेनबरो की फिल्म गाँधी के फोटोग्राफर गोविन्द निहालाणी थे।
- विख्यात फिल्मी हिरोइन साधना, बबिता, कुमुद छुगाणी, संगीता बिजलानी एवं शत्रुघ्न सिन्हा की पत्नी पूनम सिन्हा सिंधी हैं।
- सिंधी मूल की कुछ मिस इंडिया बनने वाली रही हैं-कविता

अग्रणी, पूनम सिन्हा, संगीता बिजलानी आदि।

- स्टारडस्ट पत्रिका के मालिक श्री एन. हीरानंदानी सिंधी हैं।
- सिंधी समाज के साधु टी. एल. वासवानी के जन्मदिन 25 नवम्बर को मांसाहार विहीन दिवस के तौर पर मनाया जाता है।
- हुन्दराज दुख्याल एक विख्यात सिंधी थे। इन्होंने विनोवा भावे के भूदान आन्दोलन में अपना विशिष्ट योगदान दिया था।
- स्वामी लीलाशाह एक महान सिंधी संत और समाज सुधारक थे। उन्होंने दहेज प्रथा और खर्चीली शादियों को लेकर सघन अभियान चलाया। उन्होंने सामूहिक शादी और सिंधियों में जनेऊ धारण को लेकर प्रचार किया।
- जीवन लाल जयराम दास पहले सिंधी थे जिन्हें 1970 में पद्म श्री पुरस्कार से नवाज़ा गया था।
- श्री लालकृष्ण आडवाणी भारत में सिंधी समाज के सबसे बड़े राजनेता हैं। ये भारत के उप प्रधानमंत्री रह चुके हैं। ये अभी भी सक्रिय राजनीति में हैं। ये सिंधी भाषा और सिंधियत के प्रबल समर्थक हैं।
- श्री राम जेठमलानी भारत के पहले सिंधी हैं जो बार कॉन्सिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष बने हैं। इन्होंने ग्लोबल सिंधी कॉन्सिल की स्थापना की है। ये सिंधी भाषा और सिंधियत के बड़े समर्थक हैं।
- डॉ. इंद्रा हिंदूजा को भारत के पहले टेस्ट ट्यूब बेबी के सफल प्रयोग का श्रेय जाता है।
- चूहरमल कुन्दनमल पंजाबी पहले सिंधी थे, जिन्होंने 1862 में मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। वही पहले ग्रेजुएट भी थे। रूकी शाहानी पहली सिंधी महिला थी, जिन्होंने 1920 में बी. ए. किया था।
- गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन के पहले चार शिक्षकों में से एक सिंधी थे। उनका नाम रेवाचंद था। यह सन् 1901 की बात है।

- मनोहर अगनानी पहल सिंधी आई. ए. एस. थे, जिन्होंने अपना एक विषय सिंधी भाषा रखा था।

इस विषय को आपके सामने रखने का उद्देश्य यह है कि इसी तथ्य से यह साबित होता है कि भारत में सिंधी भाषा और साहित्य का स्तर कितना ऊँचा है।

- भारत में एपार्टमेंट और फ्लैट कल्चर को सोसायटी बनाकर प्रचारित करने का श्रेय सिंधी समाज को जाता है।
- गाँधी धाम के संस्थापक भाई प्रताप डीयल दास थे।
- 1909 में बर्लिन में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में साधु टी. एल. वासवानी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था।
- भारत सरकार ने साधु वासवानी, हेमू कलानी, आचार्य जे. वी. कृपलाणी, जयराम दास दौलतराम तथा भगत कंवर राम के सम्मान में डाक टिकट जारी किया है।
- भारत की पहली हवाई यात्रा 1931 में बम्बई से कराँची के बीच हुई थी।
- मुम्बई का जसलोक अस्पताल सिंधियों द्वारा संचालित होता है।
- काका प्रभुदास तोलानी ने गाँधीधाम में शैक्षणिक संस्थानों और कॉलेजों की झड़ी लगा दी। आज गाँधीधाम में हर तरह की पढ़ाई हो रही है।
- विभाजन के बाद भारत में सिंधियों ने शिक्षा के विकास में बड़ी भूमिका निभाई है। करीब 50 कॉलेजों को उनके द्वारा खोला गया है।
- उल्हास नगर के सिंधी रिसेटलमेंट कॉलोनी को महाराष्ट्र में भारत का मिनी जापान कहा जाता है। यहाँ कॉटेज इन्डस्ट्री का जाल है।
- लक्ष्मण दास डेम्बा एक सिंधी ठीकेदार थे जिन्होंने भारत के संसद भवन को बनाया था।

- मुम्बई का सिंधियों द्वारा निर्मित श्याम निवास पहली बहुमंजली इमारत थी जिसके फ्लैट को मालिकाना हक देकर बेचा गया था।
- सिंध के साधु बेला की प्रतिकृति को मुम्बई के महालक्ष्मी में बनाया गया है।
- आज गुजरात में सबसे ज्यादा सिंधी रहते हैं।
- आज देश-विदेश को मिलाकर सिंधियों की संख्या करीब एक करोड़ तक जा सकती है।
- गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सन् 1923 में सिंध की यात्रा की थी।
- आज भी पाकिस्तान के सिंध प्रांत में ही हिन्दुओं की सबसे बड़ी संख्या है। ये हिंदू सिंधी पाकिस्तान की आबादी में तो नगन्य हैं पर सिंध की पाँच करोड़ की आबादी में 6 प्रतिशत हैं। पाकिस्तान के 96 प्रतिशत हिंदू सिंध में ही रहते हैं।
- भारत के मध्यप्रदेश में एक नदी का नाम सिंद/सिंध है।
- पंकज आडवाणी वर्ल्ड बिलियर्ड चैम्पियन और वर्ल्ड स्नूकर चैम्पियन हैं।
- पद्मभूषण डॉ. एल.एच. हीरानन्दानी विख्यात इ.एन.टी. डॉक्टर हैं। ये राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के डॉक्टर हैं।
- पद्मश्री डॉ. सुरेश आडवाणी विश्वविख्यात कैंसर विशेषज्ञ हैं।
- पद्मभूषण श्री शांतू जवाहरमल साहनी को भगवान ने 48 वर्ष की अवस्था में अपने पास बुला लिया। ये भारत सरकार के आयुध कारखानों के महानिदेशक थे।
- पद्मश्री डॉ गुरुमुख सैनानी विश्वविख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ हैं।
- पद्मभूषण नारायण दास रतनमल मलकानी महान समाजसेवी थे।
- श्री भगवान गिदवाणी एक विख्यात लेखक हैं।

Gandhi Memorial College Of Education Bantala Jammu

- श्री अजुन असरानी इंडसट्री फाउंडेशन के पूर्व चैअरमैन एवं जापान के राजदूत रहे हैं।
- हिन्दुजा ब्रदर्स सिंधियों में सम्पन्नतम लोगों में हैं। ये श्रीचंद, गोपीचंद, प्रकाश और अशोक नामक चार भाई हैं। अशोक लिलैन्ड इन्हीं की कम्पनी है। ऊपर के दो भाई लंदन, तीसरे भाई ज्यूरिख और चौथे मुम्बई में रहते हैं।
- सिंधी लोगों द्वारा संचालित वाटूमल फाउंडेशन कई परोपकारी कार्यों में संलग्न है।
- माउंटआबू में मुख्यालय बना आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत ब्रह्मा कुमारी सिंधियों द्वारा संचालित है। देश-विदेशों में इसकी शाखायें हैं।
- ICICI की प्रधान चन्दा कोचर सिंधी हैं।
- गजल गायक घनश्याम वासवानी जगजीत सिंह के शिष्य हैं।
- द्वारको सुंदरानी एक विख्यात समाजसेवी हैं। इनका गया (बिहार) स्थित समन्वय आश्रम मुसहर जाति के उन्नयन में लगा है।
- विख्यात गायिका शांति हीरानंद बेगम अख्तर की शिष्या हैं।
- श्रीमति रानी कर्ण विख्यात कथक नर्तकी हैं।
- नलिनी मालानी एक विख्यात पेंटर हैं।
- डॉ. नारायण समतानी एक विख्यात आध्यात्मिक व्यक्ति हैं।
- महिरवान सुंदरानी एक विख्यात चित्रकार हैं।
- एडमिरल राम एच. ताहिलियानी नौ सेना के पूर्व नेवल स्टाफ थे। ये सिक्कम के गवर्नर भी रह चुके हैं।
- फिल्मी सितारे जीतेन्द्र की पत्नी तथा एकता कपूर और तुषार कपूर की माँ शोभा सिंधी मूल की हैं।

विशाल इंदलानी हिंदी फिल्मों के विख्यात संगीतकार हैं।

- स्वर्गीय के.आर. मलकाणी विख्यात पत्रकार-सम्पादक, लेखक, राजनेता, एवं गवर्नर थे। द स्टोरी ऑफ सिंध इन्हीं की रचना है।
- निरंजन हीरानंदानी विख्यात बिल्डर हैं।
- सिंधी समाज के लोग एक-दूसरे को तथा समाज के बाहर के लोगों को भी स्नेह और आदर स्वरूप सम्बोधन में साई शब्द का प्रयोग करते हैं। यह शब्द इष्टदेव या ईश्वर का भी पर्यायवाची है।
- आज देश-विदेश में हजारों सिंधी करोड़पति-अरबपति हैं। जीवन के हर क्षेत्र में सफलतम सिंधियों की लम्बी सूची है।

सात सिंधी विद्वानों में से एक कोलकाता के श्री दीलेश भवनानी ने अंत में कहा कि सिंध से सम्बन्धित कहने के लिए तो सामग्री इतनी ज्यादा है कि अभी और समय लेता पर सुबह से ही लोग विभिन्न कार्यक्रमों में इतने व्यस्त रहे हैं की उन्हें खाने-पीने तक की सुध नहीं रही है।

सात बजने को हैं। एक भी कुर्सी खाली नहीं है। सारा भोजन बनकर रखा है। इसलिए हमलोग अपनी बात समाप्त करते हुए इतना ही आग्रह करते हैं कि अब बनने वाला सिंध आपका है। पूरे भारत का है। हम सभी पटना विश्व विद्यालय के आभारी हैं। धन्यवाद।”

चांसलर माइक पर आये। उन्होंने मंच पर उपस्थित सभी लोगों को आगे आने का आग्रह किया और एक साथ दोनों हाथों को उठाकर सिंध जिन्दाबाद का तीन बार जयकारा लगवाया। मुख्य मंत्री और उप मुख्य मंत्री सहित सबों ने सारे श्रोताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने सिंध निर्माण के संघर्ष में अपनी हर तरह की सेवा और भागीदारी का भरपूर आश्वासन दिया।

अंत में प्रोफेसर रघुनंदन माइक पर आये और धन्यवाद ज्ञापन किया। सिंध निर्माण के लिए देश में जन समर्थन के अगले कार्यक्रमों की रूपरेखा पेश की। वहाँ उपस्थित सभी सिंधीजनों से आग्रह किया कि सिंध की माँग को मुखर करें। हमें सिंध की माँग करनी है। माँगने से ही मिलता है। हमें सिंध बनाना है। बनाने से ही बनेगा। सिंध निर्माण का साफ रास्ता मिल गया

है। मंजिल साफ नजर आ रही है। बस मिलजुल कर चलना है। सुर में सुर मिलाना है।

प्रजातंत्र और जनसमर्थन की राजनीति का गति विज्ञान ही है, जो हाशिए पर बैठे सिंध निर्माण के इस मुद्दे को न सिर्फ खींचकर बीच में ले आया है बल्कि उसे उसके योग्य मंजिल तक पहुँचा भी देगा। अब जब यह विचार उठकर पूरी तरह खिल चुका है तो इस उचित अवसर का हमें भरपूर लाभ उठाकर इस राष्ट्रीय उद्देश्य को पूर्ण कर ही लेना है।

अब सिंध निर्माण जन-जन की माँग होने जा रही है। इस माँग को कोई रोक नहीं सकता है। सच पूछिये तो कोई रोकना चाहता ही नहीं है। सभी के पास केवल बात पहुँचानी है। सहयोग माँगना है। बस कदम बढ़ाते हुए मिल-जुल कर चलना है।

आप सभी पटना विश्व विद्यालय के आह्वान पर आये इसलिए आप सभी को कोटिशः धन्यवाद। इस विषय को देश-विदेश तक फैलाने के लिए मीडिया को धन्यवाद। कृपया भोजन करके ही इस स्थान को छोड़ें।

समर्थन का सैलाब

21 सितम्बर की संध्या बीतते-बीतते पटना की सभा का असर देश पर होने लगा। सारा सिंधी समाज तो पटना की गतिविधियों के साथ एकाकार था ही पर देश के अधिकांश लोग भी इस राष्ट्रवादी कदम को सकारात्मकता के साथ स्वीकार कर रहे थे।

सबसे पहली धमाकेदार समर्थन की ध्वनि गुजरात से गूँजी। वहाँ के मुख्य मंत्री ने सिंध निर्माण के समर्थन की घोषणा बाकायदा एक त्वरित संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर की।

उन्होंने कहा, “गुजरात का सौभाग्य है कि आज भारत विभाजन की सबसे बड़ी कीमत चुकाने वाले सिंधी समाज का एक बड़ा हिस्सा सिंधी रहते हुए भी गुजराती है। भारत में सबसे ज्यादा सिंधी गुजरात में ही रहते हैं। उन्होंने गुजरात की स्मृद्धि में अपना महान योगदान दिया है। आजादी की बलिवेदी पर सिंध बलिदान के बाद गुजरात के कच्छ के महाराजा ने महात्मा गाँधी की पहल पर सिंधी समाज को सम्मानजनक ढंग से बसाने के लिए 15,000 एकड़ जमीन दी। इसी पर आज का आदीपुर बसा है।

सिंध से गुजरात की जड़ें काफी गहरी हैं। यहाँ के शहरों में सिंधी समाज की अच्छी आबादी है।

हमें अभी विस्तृत जानकारी नहीं मिली है कि पटना में सिंध निर्माण का प्रारूप और उसकी रूपरेखा किस प्रकार बनाई जा रही है, पर कच्छ के समुद्री तट के पास सिंध की प्रतिकृति के अनुरूप द्वीप बनाकर सिंध निर्माण पर किया जा रहा विचार अद्भुत है। राष्ट्रीय महत्व के इस महान योजना को मैं, मेरी सरकार और गुजरात की जनता की ओर से कोटिशः बधाई और धन्यवाद। महान पाटलीपुत्र के नेतृत्व में पहली बार अखिल भारतीय सत्ता स्थापित हुई थी। मौर्य साम्राज्य, जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी, ने सबसे पहली बार भारत को राजनैतिक रूप से एक किया था। पुनः इतिहास अपने को दुहरा रहा है। आज फिर पाटलीपुत्र भारत से पूरी तरह खोया एक राज्य

को पुनः भारत में निर्मित करने का अगुवा बना है। सिंधी समाज जल के पूजक हैं। जल में से ही सिंध का उदय इस समाज की आस्था का अद्भुत प्रतिफल है। इनके इष्ट देव श्री झूलेलाल भी जल के देवता के रूप में महान सिंधु नदी में से ही प्रकट हुए थे। जिस स्थान विशेष पर सिंध का उदय होगा वहाँ के समुद्री जल में उस सिंधु का जल भी मिला है जिससे भगवान झूलेलाल प्रगट हुए थे। सिंधी समाज के कई उत्सव भी जल के प्रति अपार श्रद्धा से ओत-प्रोत हैं। निर्विवाद सिंध निर्माण के इस विचार पर तो मैं फिदा हूँ।

क्या बात है! हमारा राष्ट्रगान पूरा होगा! हमारा सिंधी समाज प्रसन्न होगा! उनका उत्साह दूना होगा! भारतवर्ष की आत्मा तृप्त होगी! देश का बंटवारा तो हो ही गया। श्रेष्ठता यही है कि बंटवारे की हम क्षतिपूर्ति करें। पुनः बंटवारे का दंश न झेलना पड़े इसके बारे में सतर्क रहें।

गुजरात अपनी परम्परा के अनुरूप शुरू से ही सिंधी समाज के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करता रहा है। कांडला पोर्ट के निर्माण में उनकी शानदार भूमिका रही है। गाँधीधाम में भी उनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है।

कहना चाहिए कि कच्छ से सिंध की निकटता के कारण उनके भाषाई तथा अन्य संस्कृतिगत संबंधों के कारण आज दोनों में परस्पर भारी मेल-जोल दिखता है। भारत का सौन्दर्य तभी होगा जब सिंध गुजरात के निकट हो। उस राज्य के आस पास जल की प्रचुरता रहनी ही चाहिए। कच्छ के नजदीक जल में से सिंध का उदय देखने को हर गुजराती बेताव है। देश के सम्भावित निर्णय के साथ पूरा गुजरात है। सिंध राज्य बने, इसके लिए हर गुजराती तन-मन-धन से खड़ा रहेगा। इस महान योजना को हम जल्द से जल्द साकार होते देखें यही परमात्मा से विनती है। देश को बधाई। सभी सिंधी भाई-बहनों को बधाई। धन्यवाद।”

दूसरे दिन से गुजरात के हर हिस्से में सिंधी भाई-बहनों ने सिंध निर्माण के समर्थन में रैलियों को निकालने का सिलसिला शुरू कर दिया।

गुजरात के बाद राजस्थान और महाराष्ट्र सरकार ने भी सिंध निर्माण के

लगी। अखबारों और टेलीविजन पर यह एक स्थाई समाचार हो गया। उसके बाद मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा पश्चिम बंगाल सरकार ने भी समर्थन की खुली घोषणा कर दी। फिर तो समर्थन की झड़ी लग गई। देश की लगभग सभी राज्य सरकारों ने समर्थन की घोषणा कर दी।

भारत सरकार में भी गहन चिंतन-मनन का दौर चालू था। दरअसल 21 सितम्बर से ही केन्द्रीय सरकार सारी चीजों को सकारात्मकता से ले रही थी। पर केन्द्र सरकार में सभी पहलुओं पर गंभीर विचार-विमर्श चल रहा था। देशवासियों के मानस को ठीक ढंग से समझते हुए प्रधानमंत्री ने पूरी कैबिनेट की बैठक बुलाई। सिंध निर्माण के प्रस्ताव पर पूरी कैबिनेट का स्वर एक था। सभी सिंध निर्माण के प्रबल समर्थक थे। कुछ मंत्री समर्थन पर हो रही देरी को लेकर असंतुष्ट थे। पर अंत में यह स्पष्ट किया गया कि राज्यों के समर्थन और केन्द्र के समर्थन में दायित्व निर्वहन को लेकर बहुत बड़ा अंतर है। केन्द्र के समर्थन का अर्थ केवल मौखिक न होकर केन्द्रीय भूमिका में होना है।

राष्ट्र के सम्मुख प्रधानमंत्री ने देश में सिंध निर्माण की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह एक युगांतकारी घटना है। यह देश और सिंध दोनों के लिए देर से आये दुरुस्त आये वाली कहावत के समान है। उन्होंने सिंधी समाज को महान अनुशासन प्रिय समाज कहा। उन्होंने कहा कि इतनी विशाल संख्या और प्रभावशाली समाज होते हुए भी इस समाज ने कभी भी अपने होम लैन्ड के लिए उत्तेजना या प्रदर्शन आदि का सहारा नहीं लिया। कभी भी केन्द्र सरकार पर दबाव की राजनीति नहीं की। कभी भी सिंध की माँग के लिए वोटों की सौदागिरी नहीं की। यहाँ तक की केन्द्र शासित प्रदेश तक की माँग को लेकर भी आग्रह-दुराग्रह नहीं किया। लेकिन देखिये! समय ने ऐसा करवट लिया कि अब पूरा देश इस समाज को एक पूर्ण राज्य देने का निर्णय लिया है। हमारे पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि जहाँ भी सिंधी हैं वहाँ सिंध है। सिंध-हिंद के अन्तर संबंधों की इससे अच्छी केमिस्ट्री नहीं बताई जा सकती है। यह वक्तव्य निश्चित रूप से इस समाज की विलक्षण समन्वयकारी क्षमता को दर्शाता है।

सिंध निर्माण को लेकर सरकार एक समिति गठित करेगी। इसमें भारत सरकार, सभी राज्य सरकारों के प्रतिनिधि, प्रमुख सिंधी संगठनों के प्रतिनिधि, सिंधी मूल के विभिन्न क्षेत्रों के उल्लेखनीय व्यक्ति, सिंध निर्माण के विचार को सर्वस्वीकार्य बनाने वाले पटना विश्व विद्यालय के प्रतिनिधि तथा कुछ अन्य विशिष्ट अतिथि होंगे। संसद के दोनों सदनों द्वारा सिंध निर्माण की आवश्यक प्रक्रिया पूरी की जायेगी।

सिंध निर्माण कहाँ होगा, कैसा होगा और कैसे पूरा होगा आदि का जिम्मा उसी समिति की होगी। यदि किसी राय को और स्पष्ट करने की आवश्यकता हुई तो इसके लिए समिति संसद से भी परामर्श ले सकती है।

आज हमारा देश हर ढंग से सक्षम है। अपने देश-विदेश के सिंधी समाज को पूरी तरह साथ में लेकर हम एक ऐसा सिंध राज्य निर्मित करेंगे की पूरा भारत इस पर गर्व करेगा और पूरी दुनिया हमारी क्षमता का लोहा मानेगी।

शायद भारत की कोई ऐसी राजनैतिक पार्टी, कोई ऐसा संगठन नहीं था जिसने इस पर सहर्ष अपनी सहमति की मुहर ना लगाई हो।

देश का हर उद्योगपति, हर व्यावसायिक, औद्योगिक और वाणिज्यिक संगठन तथा विभिन्न क्षेत्रों के हर वर्ग के प्रभावशाली संगठनों ने खुलकर अपना समर्थन व्यक्त किया। विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्ध एवं प्रख्यात लोगों के तरफ से समर्थन के स्वर गूँज रहे थे। देश में आधार स्वरूप सिंधी समाज का प्रदर्शन चालू था।

पूरे पाकिस्तान सहित विशेष रूप से पाकिस्तान के सिंध प्रांत में भी इस खबर का स्वागत हो रहा था। वहाँ के सिंधी भारत के सिंध के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त कर रहे थे। पाकिस्तानी सिंध के क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम सिंधी या ईसाई सिंधी सभी प्रसन्न थे कि चलो सिंध नाम से दो-दो राज्य अब विश्व पटल पर नजर आयेंगे।

यदि कुछ लोग नाक-भौं सिकोड़ते थे तो वहीं उपस्थित दूसरा व्यक्ति कहता था कि जब भारत और पाकिस्तान में पंजाब नाम का प्रांत रह सकता है तो फिर सिंध क्यों नहीं?

भारत ही नहीं विश्वस्तरीय सभी सिंधी संगठनों ने अखबारों के माध्यम से देश की सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्रीय सरकार को विज्ञापनों के द्वारा आभार प्रकट किया। पूरे देश में सिंधी समाज की गतिविधियाँ बढ़ गई और मीडिया में चारों तरफ उसकी चर्चा हो रही थी।

संसद के आगामी शीतकालीन सत्र में संसद के दोनों सदनों में ध्वनि मत से सिंध प्रांत के निर्माण का प्रस्ताव पास हो गया। संसद के दोनों सदनों में वहाँ से जनप्रतिनिधि भी आयें इस हेतु साठ सदस्यीय विधान सभा की योजना रखी गई। विधान परिषद की आवश्यकता को नकारा गया।

संसद में सरकार ने सिंध निर्माण के लिए तीस सदस्यीय कमिटी के गठन की घोषणा की। इसमें पाँच प्रतिनिधि भारत सरकार के, सर्वाधिक सिंधी समाज की जनसंख्या वाले दस राज्यों के दस प्रतिनिधि, आठ प्रतिनिधि विभिन्न सिंधी संगठनों के, तीन पटना विश्व विद्यालय से तथा चार प्रतिनिधि इस महान कार्य को देखते हुए उपयुक्त लोगों के लिए। ये अंतिम चार प्रतिनिधि छब्बीस लोगों की सहमति से ही इस समिति में लिये जायेंगे।

भारत के राष्ट्रपति इस समिति के प्रधान बने और उन्हीं के निर्देश पर इस समिति की गतिविधियों के संचालन का निर्णय हुआ। कार्य को देखते हुए उप समिति आदि बनाने का दायित्व राष्ट्रपति के हाथों में रखा गया। निर्णय लेने के क्रम में यदि वैचारिक मतभेद आता है तो राष्ट्रपति बहुमत की राय को स्वीकारेंगे और यदि स्पष्ट निर्णय नहीं बन पा रहा है तो राष्ट्रपति जिस विचार को स्वीकारेंगे वही सर्वस्वीकार्य होगा। राष्ट्रपति जब भी चाहें किसी भी बाहर के व्यक्ति को समिति में बुलाकर उसकी राय या उसकी योग्यता तथा क्षमता का सिंध निर्माण में उपयोग कर सकते हैं।

सरकार ने कहा कि राष्ट्रपति के नेतृत्व वाली समिति के सारे निर्णय को केन्द्रीय सरकार तथा अन्य राज्य सरकारें मानेंगी।

स्पष्ट घोषणा की गई कि सिंध निर्माण किसी पार्टी की सरकार का एजेंडा नहीं है। यह राष्ट्रीय एजेंडा है और इसे दोनों सदनों की सर्वानुमति प्राप्त है। राष्ट्रपति पूरे देश के होते हैं, इसलिए सिंध निर्माण का नेतृत्व राष्ट्रपति कर रहे हैं।

संसद में इस घोषणा के बाद सिंध निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो गया। देश-विदेश में सिंधी समाज ने अपनी चिरप्रतीक्षित आकांक्षा को पूरा होते देखने की खुशी में कई दिनों तक जश्न मनाया। पूरे देश में सभी राज्य सरकारों तथा अन्य सभी संगठनों ने हर्ष व्यक्त किया।

पटना विश्व विद्यालय में छाई खुशी का तो पारावार ही नहीं था। वहाँ तो अबीर-गुलाल उड़ाये गये। गंगा तट के सिंध मंदिर के पास होली के फाग गीत गाये गये। यहाँ पर पटना के सभी सिंधी परिवारों के पुरुषों के साथ ही स्त्रियाँ-बच्चे बड़ी संख्या में जुटे थे। गंगा स्नान, जल पूजा और सिंध दर्शन कर अपने को कृत-कृत महसूस कर रहे थे।

प्रोफेसर रघुनंदन तो लोगों से मिलते एवं बधाई लेते-देते तथा मोबाइल से भी बधाई देते और लेते शरीर से अधमरे हो रहे थे पर मन बल्लियों उछल रहा था।

प्रोफेसर के फ्लैट में उत्सव का माहौल था। मिठाइयाँ उड़ रही थी और लोगों के आने-जाने का तांता लगा हुआ था। उसकी कैन्सर पीड़ित माँ का देहांत हो चुका था पर पिता जी अंगा-धोती पहने और गमछे को गले में लपेटे हुए ड्राइंग रूम के एक सोफे पर बैठे प्रसन्न मुद्रा में लोगों को आते-जाते देख रहे थे। प्रोफेसर के दोनों बच्चे मेहमानों के स्वागत में लगे थे।

जब प्रधान मंत्री की संसद में घोषणा हो रही थी तो दोनों संतानों ने लगभग एक साथ बोला था, “पिता जी, देखिये आखिरकार आपने सिंध बनवा ही दिया।” प्रोफेसर ने तुरंत टोकते हुए कहा था, नहीं बेटा, हमने नहीं। सिंध निर्माण के विचार में इतनी ताकत थी कि इस विचार ने सिंध को बना दिया। मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ। कोई भी ढंग से इस बात को उठाता और थोड़ी प्रभु कृपा रहती तो पूरे देश का एवं सिंधी समाज का खड़ा होना अवश्यमभावी था।”

जब थोड़ा एकान्त मिला तब उसकी पत्नी जानकी ने रात्रि में उन्हें याद दिलाते हुए कहा कि जब बेचैन रहते हैं तो दौड़े-दौड़े माँ के पास पहुँचते हैं और काम हो जाता है तो माँ को भूल जाते हैं। आपको सबसे पहले माँ

काली के पास जाना चाहिए और माँ की पूजा करनी चाहिए। कल अहले सुबह चुपचाप चलिए और वहीं गंगा स्नान कर माँ की पूजा करेंगे।

दूसरे दिन ठंड के बावजूद पाँच बजे सुबह जगकर शौचादि से निवृत्त होकर पति-पत्नी दोनों ने गंगा स्नान किया। ठंड से बुरा हाल था। जल्दी से ऊनी वस्त्रों द्वारा पूरी तरह अपने को ढक कर दम्पति मंदिर में गया और कम्बल बिछाकर माता के सामने बैठ गया।

प्रोफेसर एक घन्टा से ऊपर बैठा रहा। पहले वाली मनःस्थिति नहीं बन पा रही थी। प्रोफेसर चाहता था कि माँ के प्रति उसकी अभ्यर्थना का प्रतिदान भी पहले जैसा ही उसे मिले। उसे कोई संदेश प्राप्ति का बोध हो। पर वैसा कुछ नहीं हो रहा था। जब प्रोफेसर थोड़ा उदास होकर उठने ही वाला था कि उसको और बैठने की प्रेरणा अकस्मात् भीतर से मिली।

कुछ देर बाद प्रोफेसर को ऐसा लगा कि मंदिर में एक आवाज गूँजी, “जगे रहो, भारत जाग रहा है!”

प्रोफेसर ने चौंक कर देखा। उसकी पत्नी ने भी चौंक कर प्रोफेसर को देखा। स्वर नारी का था। मंदिर प्रांगण में कोई नहीं था। पत्नी ने मुँह पर अंगुली रख मौन रहने का कहा।

जब थोड़ी देर बाद पति-पत्नी बाहर निकले तो प्रोफेसर ने जानकी से पूछा-तुमने कुछ सुना! जानकी ने कहा कि हाँ! मैंने सुना की जगे रहो भारत जाग रहा है। जब प्रोफेसर ने पूछा कि आवाज कैसी थी, पत्नी ने कहा कि बहुत मीठी आवाज थी।

पति-पत्नी दोनों माँ की भक्ति में अभिभूत हो गए थे। सचमुच भारत में सिंध निर्माण ईश्वरी इच्छा का साफ प्रतिफल नजर आ रहा था।

जहाँ ऐसा समर्थन फिर कहाँ अड़चन!

जहाँ राम धुनी वहाँ कौन कमी!

शुभारंभ

अप्रैल के पहले हफ्ते में राष्ट्रपति भवन से प्रोफेसर को फोन आया कि आप तीस सदस्यीय सिंध निर्माण समिति के एक सम्मानित सदस्य बनाये गये हैं। आपको सदस्य नियुक्ति का पत्र भेजा जा रहा है। 27 अप्रैल 2006 को समिति की पहली बैठक राष्ट्रपति भवन में होने जा रही है। आप सुबह 9.30 बजे तक राष्ट्रपति भवन आ जायें।

हालाँकि यह प्रत्याशित ही था। पर सिंध को लेकर गाड़ी अब खुल रही है; यही समाचार प्रोफेसर को उन्मत्त कर रहा था। संयोग से जिस समय फोन आया उस समय वह गंगा तीरे सिंध शरीरे स्थल यानि सिंध मंदिर की ओर ही जा रहा था। उसने तुरंत अपनी पत्नी जानकी को इसकी सूचना दी। फिर गंगा तट पर जाकर हाथ-मुँह-धो माँ काली के दर्शन कर अश्रुपूरित नयनों से निहारते हुए कुछ पल व्यतीत कर शांति से अपने कक्ष में लौट आया।

उसने अपने सहयोगियों को बुलाया। उन्हें इस बात की सूचना दी।

प्रोफेसर ने चांसलर से समिति के सदस्यों को लेकर चर्चा की थी और सिंध निर्माण के फलक को बड़ा करने में प्रोफेसर अवध बिहारी के उल्लेखनीय योगदान पर बहुत प्रकाश डाला था। प्रोफेसर की दिली इच्छा थी कि यदि प्रोफेसर अवध भी समिति में रहें तो एक प्रबल सहयोगी और कल्पनाशील मानस का साथ उन्हें सदा मिलता रहे।

अभी प्रोफेसर ऐसा सोच ही रहा था कि प्रोफेसर अवध बिहारी का सेल फोन बज उठा और राष्ट्रपति भवन से समिति सदस्य के नाते उन्हें भी 27 अप्रैल का आमंत्रण प्राप्त हो गया। कक्ष में आनंद के हिलोरें उठने लगे।

पूरे दरभंगा हाउस में जंगल के आग की तरह यह समाचार फैल गया। पटना विश्व विद्यालय के इस सम्मान की खबरें तुरंत विश्व विद्यालय में फैल गई। बधाईयाँ आने लगी। तभी प्रोफेसर रघुनंदन को चांसलर का फोन

आ गया। चांसलर ने बताया कि पटना विश्व विद्यालय के चांसलर के नाते हमें भी सदस्य बनाया गया है पर इसका सारा श्रेय आपका है।

बधाईयों के परस्पर आदान-प्रदान के बाद चांसलर ने प्रोफेसर रघुनंदन को कहा कि आज मेरा रात्रि का भोजन आपके घर पर होगा। चांसलर की इस विनम्रता का प्रोफेसर ने आभार माना।

जब वार्तालाप समाप्त हुआ तो प्रोफेसर को कहा गया कि सैकड़ों विद्यार्थी बाहर खड़े हैं और वो आपसे मिलना चाहते हैं। प्रोफेसर बाहर आया और दरभंगा हाउस के पोर्टिको के पास खड़े हो सबों को हाथ जोड़ प्रणाम किया। काफी उल्लास का माहौल था। प्रोफेसर ने कहा, “मेरे प्यारे विद्यार्थियों एवं मित्रो। यह आपके सुर में सुर मिलाने का परिणाम है। सोचने पर ही माँग उठती है। जब माँग उठती है तभी पूरी होती है। पवित्र माँग के साथ जन समर्थन हो तो भगवान भी अपनी कृपा बरसा देते हैं। सिंध निर्माण की नींव में आप है। दरभंगा हाउस है। पटना विश्व विद्यालय है। हमारा बिहार है। हमारी सरकार है। आप सभी बधाई के पात्र हैं। आपने देश के लिए सोचा है, संगठित हुए हैं। आप विश्वास रखें। सिंध निर्माण तक हम जगे रहेंगे। सिंध निर्माण के दौरान ही देश जाग जायेगा। आपके दो शिक्षक ही समिति में नहीं हैं, आप सभी हैं। हम आपकी गरिमा को बना कर रखेंगे। आप विश्वास रखें.....”

फिर इसी तरह की अन्य बातों से विद्यार्थियों को संतुष्ट कर प्रोफेसर अपने कक्ष में आ गया। प्रोफेसर अवध बिहारी उनके बगल में आकर बैठ गये और उनका हाथ अपने हाथ में थोड़ी देर लिये रहे। फिर प्रोफेसर के हाथ को चूमा। प्रोफेसर रघुनंदन उनके मनोभाव को समझ स्निग्ध भाव से उन्हें देख रहा था। आह्लादित होकर प्रोफेसर अवध बिहारी ने कहा, “सर! मैं धन्य हो गया। कहाँ मैं और कहाँ यह सम्मान।”

प्रोफेसर ने उन्हें स्नेह से देखते हुए कहा, “प्रोफेसर साहब, चांसलर साहब रात्रि भोजन पर हमलोगों के यहाँ आ रहे हैं। अब चांसलर साहब का स्वागत कीजिए और 27 ता. की तैयारी कीजिए।”

प्रोफेसर के आवास पर रात्रि भोजन पर चांसलर के साथ प्रोफेसर अवध बिहारी के अतिरिक्त पटना विश्व विद्यालय के वी.सी. डॉ. दामोदर प्रसाद भी थे। घंटों बातें होती रही।

निर्णय हुआ कि पटना की टीम अपने विचारों और सुझावों को संजीदगी से रखेगी और सभी प्रस्तावों को अच्छी प्रकार समझ-बूझ कर ही अपनी राय देगी।

नियत समय पर पटना की टीम राष्ट्रपति भवन पहुँची। एक बड़े हॉल में सभी 26 सदस्य इक्कठे थे। राष्ट्रपति 10 बजे आये। उन्होंने सबों का स्वागत किया और एक महान राष्ट्रीय कार्य को तय समय सीमा के अंदर पूरा करने की बात कही। चूँकि लम्बे विचार-परामर्श के बाद ही उन्होंने सारे सदस्यों का चयन किया था इसलिए हर सदस्य के बारे में उन्हें पूरी जानकारी थी।

सर्वप्रथम उन्होंने बिहार के गवर्नर (जो पटना विश्व विद्यालय के चांसलर थे) से हंसते हुए पूछा कि पहले प्रोफेसर रघुनंदन जी से तो मेरा परिचय कराइये। प्रोफेसर रघुनंदन खड़े होकर हाथों को जोड़ नमस्कार किया। मुस्कुराते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि आपको भी हमारा अभिनन्दन है। मैं आपके बारे में सब कुछ जानता हूँ। आपके बारे में बहुत सारी बातें मीडिया में आ चुकी हैं। मेरी शुभकामना है कि जैसा सिंध आप चाहते हैं, वैसा ही सपनों का सिंध जल्दी बने।

राष्ट्रपति ने सभी सदस्यों का परिचय एक दूसरे से कराया। भारत सरकार के जो पाँच प्रतिनिधि थे उनमें प्रधानमंत्री कार्यालय से आशीष कुलकर्णी, वित्त मंत्रालय से नारायण मजुमदार, गृह मंत्रालय से संतोष सिंह, विदेश मंत्रालय से विष्णु देव कुकरेजा और रक्षा मंत्रालय से ब्रिगेडियर रामप्रीत राय का परिचय सबों से कराया।

उसके बाद राज्यों का नम्बर आया। गुजरात से डॉ. महेश मलकानी, महाराष्ट्र से डॉ. बलदेव कलानी, मध्यप्रदेश से श्री ईश्वर झमानी, उत्तर प्रदेश से राधेकृष्ण पाण्डेय, दिल्ली से मोहन भाटिया, बिहार से दिलीप भवनानी,

कर्नाटक से मधुकर बंगारप्पा, तमिलनाडू से चेन्ना स्वामी और चण्डीगढ़ से मुकेश खन्ना का परिचय सबों से कराया गया।

इन परिचयों के बाद राष्ट्रपति ने सिंधी समाज तथा सिंधी संस्थाओं से जुड़े आठ लोगों का परिचय कराया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सिंधोलॉजी से श्री विष्णु चंद खिलानी, सिंधी कॉन्सिल ऑफ इंडिया से श्री मनन भाटिया एवं दुर्गा थरानी, सिंधी पत्र-पत्रिकाओं की ओर से श्री विमल नोपानी, हांगकांग से अर्जुन दास गुरमानी, ब्रिटेन से पवन कुमार हिन्दुजा, अमेरिका से श्री चन्द मद्यान और दक्षिण अफ्रिका से राजेश गिदवाणी के बाद पटना की टीम का परिचय कराया गया।

जितने लोगों का चयन किया गया था सभी विभिन्न क्षेत्रों के सफलतम व्यक्ति थे। सिंध निर्माण में इनकी अहम भूमिका होने वाली थी।

राष्ट्रपति ने कहा कि अन्य चार व्यक्ति का चयन आप लोगों को ही करना है। बताइये कैसे और किनका चयन करना है।

राष्ट्रपति की स्वीकृति ले विष्णु देव कुकरेजा ने कहा, “सर्वप्रथम सिंध निर्माण के स्थान का चयन हो जाना चाहिए। स्थान के अनुरूप ही उसके अनुकूल व्यक्ति के चयन पर विचार करना श्रेयकर होगा।”

दिल्ली के मोहन भाटिया ने कहा कि क्या बिना समिति के पूर्ण हुए हम लोग कोई निर्णय कर सकते हैं?

राष्ट्रपति ने कहा कि चार व्यक्ति के चयन के पीछे स्थान, परिवेश और परिस्थिति के अनुरूप ही उन चार लोगों के चयन का निर्णय लिया गया था। इसलिए श्री कुकरेजा जी की बात सही है।

फिर सभी लोगों ने इस विचार का समर्थन किया।

बिहार के चांसलर श्री नारायण भारती ने कहा कि पटना विश्व विद्यालय की सभा में इस पर एक विचार आ चुका है। पहले समिति इस विचार पर गौर कर ले। यदि कहीं से असंतुष्टि की बात हो तो विकल्प खुला है।

राष्ट्रपति के आदेश पर प्रोफेसर रघुनंदन ने विस्तार से अपने सिंध निर्माण की परिकल्पना को रखा। उसका सबसे ज्यादा जोर निर्विवाद सिंध निर्माण को लेकर था। दूसरा असांजी प्यारी सिंध की चाहत को सिंध की प्रतिकृति वाला द्वीप बनाकर ही संभव किया जा सकता था। तीसरा जल पूजक समाज को उनका सिंध जल में से ही मिल रहा था। चौथा इस प्रोजेक्ट से हम दुनिया को बड़ा मैसेज देंगे और पाचवाँ हम द्वीप द्वारा बने सिंध में ही पूर्ण सिंधी माहौल और परिवेश देंगे। किसी राज्य से यदि जमीन मिल भी जाती है तो भी सिंधी परिवेश देना असंभव है।

वैचारिक रूप से सबों ने गुजरात के पश्चिमी कच्छ के तट के दक्षिण समुद्र में भारतीय समुद्री सीमा के अंदर सिंध निर्माण को स्वीकारा पर कुछ ने प्रश्न भी खड़े किये। यू.पी. के राधेकृष्ण पाण्डेय ने समुद्र में पर्यावरण के दुष्प्रभाव, प्राकृतिक आपदा, सुरक्षा और विशाल लागत के लगने की बात उठाई।

तमिलनाडू के चेन्ना स्वामी ने गुजरात के कच्छ में ही कहीं पर सिंध बनाने की बात कही। लेकिन दोनों की बातों को स्वीकारा नहीं गया। सिंध की प्रतिकृति लिए समुद्र में सिंध निर्माण का प्रस्ताव इतना साफ, विवाद रहित, इनोवेटिव और चैलेंजिंग था कि सभी की सहमति इसी के पक्ष में आई।

सबों ने कहा कि राशि के बारे में सोचना ही नहीं है। जब भारत सरकार, सभी राज्य सरकारें, पूरा देश और पूरा सिंधी समाज खड़ा है तो पैसा कौन सी चीज है।

जब छोटे-छोटे अरब देश समुद्र में द्वीप बनाकर शहर बसा रहे हैं, टाउनशिप बना रहे हैं और इजरायल ओलिंपिक आयोजन को समुद्र में कराने की योजनाओं पर कार्यान्वयन कर रहा है तो भारत को इस पर ज्यादा सोचने की आवश्यकता नहीं है। अमेरिका चाँद पर बस्ती बसाने के बारे में सोच रहा है और हम समुद्र में भारतीय सम्मान और उसके स्वप्न को पूरा करने के लिए एक द्वीप भी नहीं बना सकते हैं?

जब राष्ट्रपति ने भी कच्छ के नारायण सरोवर के पास समुद्र में सिंध निर्माण के बारे में अपनी स्पष्ट राय दे दी तो फिर सभी 26 सदस्यों ने भी हर्षध्वनि से इसी के पक्ष में अपनी राय दी।

समिति की पहली बैठक की यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी। पटना टीम का मनोबल बम-बम था।

स्थान के चयनोपरांत उन चार व्यक्तियों का चयन होना था जो स्थाई सदस्य के तौर पर लिये जाने वाले थे।

लम्बे विचार विमर्श के बाद देश के विख्यात भूगर्भशास्त्री डॉ. कृपाशंकर पाठक, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के समुद्र ज्ञान विज्ञानी डॉ. लीलाधर दत्त, देश के मशहूर भवन निर्माता श्री रामदेव हीरानन्दानी तथा विश्वविख्यात आर्किटेक्ट डॉ. सुब्रह्मन्यम भारती को सदस्य बनाया गया।

अब टीम पूरी हो चुकी थी। कार्यारंभ की दुर्दुर्भि बज उठी। पहली बैठक में ही बड़ा निर्णय यह हुआ कि समिति ने द्वीप निर्माण संबंधी बड़े निर्णय लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

फिर तो हर महीने एक सप्ताह तक चलने वाली बैठक का दौर शुरू हो गया। बैठक के तीन सत्र के बाद ही अगस्त महीने के प्रथम सप्ताह तक निम्नलिखित निर्णय ले लिये गये—

1. गुजरात के कच्छ की खाड़ी और कोरी क्रीक (वे) के मुहाने से दस किलोमीटर दक्षिण-पूर्व समुद्र में भारतीय समुद्री सीमा के अंदर सिंध निर्माण होना है। भारतीय सिंध अखण्ड भारत के मौलिक सिंध की प्रतिकृति होगा। बड़े सिंध का यह छोटा फोटो कॉपी होगा। अखण्ड भारत के सिंध का क्षेत्रफल 140914 वर्ग कि.मी. था। आज भी वही है। उत्तर से दक्षिण यह 579 कि. मी. और पूरब से पश्चिम 442 कि.मी. से 281 कि.मी. में फैला है। अभी सिंध की आबादी करीब 5.50 करोड़ है। सिंध की पूरी आबादी में 6% हिन्दू हैं और पाकिस्तान के 96% हिंदू यहीं रहते हैं।

समिति ने निर्णय किया कि अखण्ड भारत के सिंध के सौवें हिस्से से लेकर हजारवें हिस्से के बीच यानि 140 से लेकर 1400 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में भारतीय सिंध का निर्माण किया जायेगा। भारत में केन्द्रशासित क्षेत्र

चण्डीगढ़ का क्षेत्रफल 114 वर्ग कि.मी. है। लक्षद्वीप 32 वर्ग कि.मी. में है। पॉण्डिचेरी राज्य 492 वर्ग कि. मीटर में है।

प्रस्तावित सिंध इतना बड़ा तो हो ही कि उसमें सिंध की सारी संभावनाओं को समेटा जा सके। कोई भी जब इसकी यात्रा करे तो प्राकृतिक रूप से उसे यह सिंध ही लगे। यह भी निर्णय हुआ कि पाकिस्तानी सिंध में जैसे-जैसे सिंधु नदी गुजरी है उसी प्रकार नहर बनाकर पूरे सिंध में सिंधु नदी के पानी को बहाया जाय। सिंधु नदी का पानी कैसे यहाँ आयेगा इस पर बाद में निर्णय लिया जायेगा।

इस प्रकार प्राकृतिक रूप से सिंध निर्माण हेतु द्वीप बनाकर सिंधु नदी के पानी को बीचोंबीच बहाकर सिंध संबंधी पहला निर्णय लिया गया।

2. भारत के सिंध को विश्व का सबसे बड़ा पर्यटन स्थल बनाना है। सिंध को उस ऊँचाई तक ले जाने के लिए सात सबसे बड़े आधुनिक आश्चर्यों का निर्माण करना है—

- (i) सिंध की भूमि पर भारत माता 'मातृभूमि' की सबसे बड़ी प्राकृतिक आकृति का निर्माण करना है। इसमें भारत की सारी नदियों का जल बहते रहना चाहिए। इसमें सप्त सैन्धव का जल, पूरी ब्रह्मपुत्र नदी (जो तिब्बत में त्सांगपो कही जाती है) का जल से लेकर कावेरी के जल को अनवरत बहते रहना है।

जहाँ-जहाँ भारत जिस रूप में है उसी रूप में नजर आना चाहिए। इसके लिए स्थान विशेष से मिट्टी, बालू, पत्थर, पानी, वनस्पति आदि का प्रयोग करना है। मातृभूमि की आकृति इतनी बड़ी हो कि भारत के हर क्षेत्र की जीवंत छवि नजर आये। लोग बीच-बीच में या किनारे के ऊँचे स्थानों से एक निगाह में अपनी मातृभूमि को निहार सकें।

इसमें हिंदु कुश, पामीर का पाठार, खैबर-खुर्रम-तोची-गोमल और बोलान के दर्रे, कराकोरम, कैलाश-मानसरोवर, पूरा हिमालय से लेकर खूबसूरत कन्याकुमारी समाया रहे। हिमालय क्षेत्र में अनवरत बर्फ की वर्षा करायी जायेगी।

इसके निर्माण से भारतीय विशालता, विविधता, एकता तथा सक्षमता का पृथ्वी पर डंका बजेगा। फिर विश्व हमारा नकल करे या असमर्थ रहे।

- (ii) मातृभूमि की खड़ी सबसे ऊँची आकृति के निर्माण का निर्णय लिया गया। कोई भी व्यक्ति आँख उठाकर अपने देश को देख सके और अभिभूत हो सके। इसमें देश की सभी नदियों के बहाव को लेकर किरणों के द्वारा दिखाया जाय। रात्रि में इसका दर्शन एक तिलस्म जैसा लगे।
- (iii) दुनिया का सबसे बड़ा ग्लोब बनाया जायेगा।
- (iv) पृथ्वी यानि भारतीयों की नजर में 'धरती माता' को सिंध की धरती पर पूरे विस्तार से फैलाकर बनाना है। धरती माता पर आये पर्यावरणीय संकटों और ग्लोबल वार्मिंग को बताकर धरती माता के संरक्षण के भावों का विश्व संचरण कराना है। जलवायु परिवर्तन के कारणों एवं दुष्प्रभाव से लोगों को अवगत कराना है। सुरक्षित धरती को अनवरत अगली पीढ़ी को सौंपते जाने का विचार सदा विश्व स्तर पर जन-जन में पहुँचाना है।

लोग नावों के सहारे एक महादेश से दूसरे महादेश जायेंगे। 'धरती माता' अपने प्राकृतिक रूप में ही होगी। इस संभावना को तलाशा जायेगा कि क्या विश्व की तमाम नदियों के जल को धरती माता पर प्रवाहित कराया जा सकता है या नहीं। उसी प्रकार जहाँ तक संभव होगा क्षेत्र विशेष के लिए वहीं से सामग्री यानी धरती माता की ऊपरी सतह के लिए मिट्टी, पत्थर, बालू, आदि लायी जायेगी। विश्व पर्यटन की मानसिकता को हरेक भारतीय अपने अन्तःकरण में बिठा सकेगा।

- (v) विश्व के सबसे ऊँचे टावर का निर्माण और उस पर कई दूरबीन स्थापित करना है, जिससे कोई भी व्यक्ति न केवल अपने सिंध का चप्पा-चप्पा देख सके बल्कि पाकिस्तानी सिंध को भी देख सके।
- (vi) विश्व का सबसे बड़ा एवं अत्याधुनिक बहुआयामी प्लैनिटोरियम (तारा मंडल) बनाना है। यहाँ अंतरिक्ष, ग्रह-नक्षत्र और ब्रह्माण्ड की

विस्तृत एवं शूक्ष्मतम जानकारी मिल सकेगी। सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा के हर रूपों और गतिविधियों को सरलता और सहजता से देखा-समझा जा सकेगा। पृथ्वी की दैनिक एवं वार्षिक गतिविधि को समझा जा सकेगा। मौसम एवं ऋतु विज्ञान को एक आम आदमी एवं आम स्कूल का विद्यार्थी समझ सकेगा।

- (vii) विश्व की 12 यानि एक दर्जन सबसे ऊँची इमारत बनाने का निर्णय लिया गया। जिन नामों पर यह इमारत बनेगी उनके नाम भी तय कर दिये गये। ये नाम होंगे— सिंध हुंकार, हिंद संसार, गंगा जी, सिंधु जी, देव ब्रह्मपुत्र, सप्त सैन्धव, ग्वालंदो, हिंदु कुश, कैलाश पर्वत, देवात्मा हिमालय, मानसरोवर एवं कन्याकुमारी।

ये विश्व की सबसे ऊँची एक दर्जन इमारतें एक स्थान पर न होकर पूरे सिंध के भिन्न स्थानों पर होंगी। ये सिंध की आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र होंगे। सभी भवनों के ऊपर हैलीपैड होगा। एक-एक इमारत अपने आप में एक संसार होगा।

3. प्रस्तावित सिंध में प्लॉट का निर्धारण एक बार ही होगा। जिस भी काम के लिए जो भी प्लॉट तय होगा उस पर वही काम होगा। उस प्लॉट की खरीद-बिक्री हो सकती है पर प्लॉट का बंटवारा नहीं हो सकता। पूरा का पूरा ही बिकेगा। यह सब सिंध के सुनियोजित स्वरूप को सदा के लिए बना कर रखने के लिए ऐसा निर्णय हुआ।

4. सिंध को ज्ञान का केन्द्र बनाने का निर्णय लिया गया। ज्ञान आधारित अर्थशास्त्र ही विश्व को भविष्य में संचालित करने वाला है। इसीलिए विश्वस्तरीय कई विश्व विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। इसमें मानव सभ्यता विश्व विद्यालय (इसमें भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य की सभ्यता का अध्ययन आदि) एवं इतिहास विश्व विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया।

5. किसी भी देश और क्षेत्र का पॉपुलेशन और वहाँ की डेमोग्राफी ही उसका डेस्टिनी यानि भविष्य होता है। भारत के हरेक व्यक्ति को विश्व

सहित भारत की जनसंख्या की प्रकृति और प्रवृत्ति को गंभीरता से समझाने के लिए एक बहुआयामी पॉपुलेशन एण्ड डेमोग्राफी यूनिवर्सिटी के निर्माण का निर्णय लिया गया। योजना यह बनाई गई कि यहाँ की जानकारी तथा तथ्य को मनोरंजक रूप से हर एक भारतवासी तक पहुँचाया जायेगा। उद्देश्य है भारत की जनसंख्या का स्थिरीकरण हो, संतुलन हो और विभिन्न समाजों की जनसंख्या प्रतिशत के उतार और चढ़ाव पर गंभीर विवेचना और उसके संभावित परिणामों को सार्वजनिक किया जाय।

सभी समाजों के जनसंख्या प्रतिशत का स्थिरीकरण हो एवं देश की जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगे। समिति में इस पर खुल कर बहस हुई।

प्रोफेसर रघुनंदन ने कहा कि भारत का बंटवारा स्थान विशेष पर खास धर्मावलंबियों की उपस्थिति के आधार पर हुआ था। यदि आजादी के समय सिंध की जनसंख्या में हिन्दू सिंधी पचास प्रतिशत से ऊपर होते और सिंध विधान सभा में उनकी मेजॉरिटी होती तो क्या सिंध की विधान सभा में पाकिस्तान में मिलने का प्रस्ताव पारित होता। सिंध भारत में रहता और अभी भारत की तस्वीर दूसरी होती।

इसलिए प्रस्तावित विश्व विद्यालय को विश्वस्तरीय बनाना है और देश के एक-एक व्यक्ति को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा जनसंख्या और डेमोग्राफी के प्रति सचेष्ट करना है।

जनसंख्या नियंत्रण, विभिन्न समाजों में जनसंख्या के आनुपातिक-प्रतिशकीय संतुलन तथा जनसंख्या स्थिरीकरण के लिए यह निर्णय हुआ कि सिंध में दो बच्चे की मानसिकता को शुरू से ही स्थापित करना है। इससे पॉपुलेशन और डेमोग्राफी के प्रभाव को आसानी से समझाया जा सके तथा सिंध को आबादी बोझ से बचाया जा सके।

6. नया सिंध तथ्यों के आधार पर सत्य के आलोक में मानवता और मनुष्य के नये क्षितिज को भी खोलने का प्रयास करेगा। यहाँ एक ऐसा संस्थान खोला जायेगा जहाँ दुनिया के सभी मतों, पंथों, सम्प्रदायों और आस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा। जीवन और मृत्यु को लेकर उनकी अवधारणाओं पर गहन वैज्ञानिक विवेचना होगी। 'मृत्यु के बाद क्या होता है' को लेकर विश्वस्तरीय चिंतन-मनन एवं शोध की व्यवस्था होगी।

में कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाऊँगा? इन तीनों प्रश्नों के सत्य को खोजने का भागीरथी प्रयास होगा।

यदि इसे जान लिया गया तो विश्व मानव की कल्पना तुरंत साकार हो जायेगी। जैसे एक आदमी कहाँ से और कैसे आता है वैसे ही सभी आते हैं। मरने के बाद जो एक के साथ होता है, वही विश्व के सारे मानवों के साथ होगा। फिर विभिन्न मतों, पंथों, आस्थाओं, सम्प्रदायों में बंटी मानवता तुरंत एक हो जायेगी। सत्य की स्थापना होगी। सत्यमेव जयते का संदेश स्थापित होगा। विश्व में तनाव का एक बड़ा स्तंभ ध्वस्त हो जायेगा। मानवता का बहुत बड़ा कल्याण होगा।

7. भारत की सारी नदियों के जल को यहाँ लाना है। उनको पूरी तरह साफ कर अलग-अलग पीने और उसमें स्नान करने की व्यवस्था करनी है। मातृभूमि की आकृति में बहते देश की सारी नदियों के जल को दूषित करने पर पूर्ण रोक रहेगी।

8. सिंध निर्माण में प्रतीक के तौर पर पाकिस्तानी सिंध से मिट्टी आदि लानी है। भारत के हर हिस्से से मिट्टी, पत्थर, बालू, गिट्टी, ईटा, सरिया, सीमेंट लानी है। उसी प्रकार भारत के हर हिस्से की वनस्पति और पशु-पक्षी को भी लाना है।

9. आवासीय भूखंडों के 75% हिस्से को सिंधी मूल के लोगों को एवं 25% हिस्से को सम्पूर्ण भारत के लोगों के बीच वितरित किया जायेगा।

10. प्रस्तावित सिंध में प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। गुटखा, धूम्रपान, मद्य सेवन एवं अन्य मादक पेय, ड्रग्स तथा अखाद्य भोजन पर प्रतिबंध होगा।

11. सिंध में किसी भी तरह की औद्योगिक गतिविधियों की पूर्ण मनाही होगी। केवल प्रदूषण विहीन निर्माण की गतिविधियों की ही स्वीकृति होगी।

12. सिंध की राजधानी का नाम अरोड़ होगा। सारे पुराने और नये शहरों के नाम पर ही मुहल्लों का नाम रखा जायेगा। सिंध के बंदरगाह का नाम देवल होगा।

13. सिंध को देश की मुख्य भूमि से रेल, रोड, स्टीमर एवं हवाई मार्ग से जोड़ा जायेगा। ये सारी सुविधायें विश्वस्तरीय से भी दो कदम आगे की होगी। ये सारी संरचनायें भविष्य को ध्यान में रखकर की जायेंगी।

14. भारत के हर व्यक्ति के यहाँ आने और विश्व भर के यात्रियों को ध्यान में रखकर होटल व्यवसाय, भोजन व्यवसाय, वाटर स्पोर्ट्स और बाजार निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। इंटरटेनमेंट इंडस्ट्री को बढ़ाने वाले इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण पर अलग से ध्यान दिया जायेगा।

15. भारत के सारे राज्यों के लिए बड़े-बड़े पेवेलियन की व्यवस्था की जायेगी। यहाँ सभी राज्य अपने-अपने राज्यों की विशिष्टताओं का प्रदर्शन करेंगे। हर राज्य अपने यहाँ पर्यटक, निवेश तथा व्यापार-व्यवसाय को चमकाने की जोर आजमाइश करेंगे।

16. प्राकृतिक आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सिंध की सीमाओं को काफी मजबूत बनाया जायेगा। इसे समुद्री तूफान, चक्रवात तथा टी सुनामी जैसी प्राकृतिक विभीषिकाओं से बचाने के लिए सिंध निर्माण के समय ही ध्यान में रखा जायेगा। सारे निर्माण भूकम्परोधी होंगे। उच्च अंतर्राष्ट्रीय तकनीक का इस्तेमाल होगा।

17. समिति को पक्का विश्वास है कि आज तो भारत सिंध का निर्माण कर रहा है, पर निर्मित सिंध कल भारत की उत्तमोत्तम संभावनाओं को कुरेदेगा। भारत के पुनर्निर्माण और पुनर्जागरण को गति देगा। सिंध को देखकर भविष्य का भारत प्रेरणा लेगा और फिर उसी के अनुरूप भारत का निर्माण होगा।

18. पाकिस्तान के साथ भारत की सन् 1960 में सिंधु जल संधि हुई थी। इसी संधि से छः नदियों पर दोनों देशों के अधिकार संचालित होते हैं। प्रस्तावित सिंध के लिए हमें जो जल चाहिए वह उसी जल में से होगा जो समुद्र में बेकार बह जाता है। इसलिए पाकिस्तान और उसके प्रांत सिंध को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाये बगैर मनचाहा जल प्राप्त हो जायेगा। भारतीय सिंध में सिंधु नदी का पानी एक नहर के माध्यम से सिंध में गुजरता रहेगा। हम उसी पानी को फिर रीसर्कुलेट भी करते रह सकते हैं। भारतवासी

अपनी सबसे लम्बी नदी सिंधु के जल का भरपूर आनंद ले सकेंगे। इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा।

सिंध सरकार को करोड़ों लीटर क्षमता वाला एक वाटर प्लांट लगाना है। पूरे देश में सिंधु के इस पीने वाले पानी की मार्केटिंग की जायेगी। समिति की ऐसी सोच है कि सिंधु का बोलत बंद पानी जब भारत भर में पीया जाने लगेगा तो पूरा भारत अपनी जड़ों वाली पहचान को समझता अपने भारतीयत बोध को महसूस कर सकेगा और तनकर खड़ा हो जायेगा। राष्ट्रवाद की गर्मी में भारत के सारे कृत्रिम भेद मिट जायेंगे।

19. सिंध में बाग-बगीचे, पेड़-पौधे, लैंड स्कैपिंग, हरे मैदान आदि तो होंगे पर कृषि के लिए भूमि नहीं होगी। अब कोई अपने आवासीय प्लॉट में किचन गार्डन बनाये तो यह उनकी इच्छा।

वैसे पूरा सिंध हरीतिमा की चादर से ढका होगा। कालान्तर में सिंध का स्वरूप न्यूयार्क के मैनहट्टन जैसा होगा। आवास के निजी प्लॉट कम ही होंगे। वास्तव में यह राज्य एक वृहत अत्याधुनिक शहर में तब्दील हो जायेगा। समिति को पूरा विश्वास है कि सिंध के चारों ओर का समुद्र भी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से भर जायेगा।

20. सिंध में प्राकृतिक ऊर्जा के अधिकतम उपयोग पर ध्यान दिया जायेगा। पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, टाइडल ऊर्जा का अत्याधुनिक उपयोग होगा। रेन वाटर कंजर्वेशन की सौ फीसदी उपलब्धि के लक्ष्य को लेकर काम करना है। यहाँ न थर्मल पावर प्लांट लगेंगे न न्यूक्लियर पावर प्लांट लगेंगे। सारी बिजली नेशनल ग्रीड से आयेगी। बिजली को सिंध सरकार खरीदेगी। यह राज्य अपने यहाँ की विभिन्न गतिविधियों से इतना धनी होगा कि हांगकांग और सिंगापुर से इसकी तुलना होगी।

21. पहले से ही सिंधी समाज उद्यमी और व्यवसायी रहा है। हमें सिंध को विश्व व्यापार एवं वाणिज्य का केन्द्र बनाना है। विश्व भर के सफलतम और इनोवेटिव मष्तिष्क वाले सिंधियों को सिंध निर्माण से जोड़ना है।

22. भारतीय चिंतनधारा भोगवादी प्रवृत्ति के स्थान पर 'तत्त्व्येन भुंजिथा' को मानती है। सिंध को मेनहट्टन वाला वैभव, व्यस्तता और सार्थकता दिलानी है पर मानसिकता भारतीय रखनी है। जल संरक्षण, खाद्य संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण पर जोर दिया जायेगा। बचत की मानसिकता एवं मितव्ययता के जमीनी यथार्थ पर सदा जोर देना है। लूट लाओ कूट खाओ या चार्वाक के कथन— 'यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत्, ऋणं लीत्वा घृतं पीवेत्' की मानसिकता के निषेध को शुरू से ही विकसित किया जायेगा।

23. सिंधी भाषा जो अष्टम सूची में आने के कारण भारत की संवैधानिक भाषा सन् 1967 में ही हो गई है, कि लिपि का निर्णय सिंधी सरकार और सम्पूर्ण सिंधी समाज को मिल कर करना है। इसकी लिपि अरबी ही रखनी है या देवनागरी रखनी है। पाकिस्तानी सिंध में अरबी लिपि प्रचलित है। यदि देवनागरी लिपि स्वीकारी जाती है तो यह भारत की दूसरी भाषा होगी जिसकी दो-दो लिपियाँ होंगी। जिस प्रकार पंजाबी पाकिस्तान में अरबी लिपि में लिखी जाती है पर भारत में गुरुमुखी में लिखी जाती है।

24. एक विशाल सिंधी पुस्तकालय की स्थापना करनी है। सिंधी साहित्य के हिन्दी अनुवाद को बढ़ाया जायेगा। उसी प्रकार विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ पुस्तकों का अनुवाद सिंधी में किया जायेगा। अनुवाद के उच्च मानक होंगे।

25. सिंध में केवल विधान सभा होगी। यहाँ विधान परिषद की व्यवस्था नहीं होनी है। साठ सदस्यीय विधानसभा, राज्य सचिवालय एवं प्रांत के सारे मुख्यालय एक ही परिसर में होंगे। वह परिसर भी सिंध की प्रतिकृति के ही अनुरूप रखने का निर्णय लिया गया। पूरे परिसर का नाम अरोड़ होगा।

26. आई.टी. सेक्टर में विकास की सारी सम्भावनाओं को फलने-फूलने के लिए सारी सुविधाओं एवं सहूलियतों की स्थापना की जायेगी। एक आई.आई.टी. एवं एक आई.आई.एम. की शाखा भी यहाँ खोलने का निर्णय लिया गया।

27. सिंध से देश के सभी राज्यों की राजधानियों के लिए ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया गया। इसमें से कुछ नाम इस प्रकार रखने का निर्णय हुआ—

सिंध-जम्मू कश्मीर एक्सप्रेस को पूर्ण एक्सप्रेस, सिंध-कन्याकुमारी एक्सप्रेस को संपूर्ण एक्सप्रेस, सिंध-नागालैंड एक्सप्रेस को विस्तार एक्सप्रेस, सिंध-पाटलीपुत्र एक्सप्रेस को दृष्टि एक्सप्रेस, सिंध-दिल्ली एक्सप्रेस को हेमू कलानी एक्सप्रेस, सिंध-भुज एक्सप्रेस को भाई एक्सप्रेस, सिंध-गाँधीधाम एक्सप्रेस को विश्राम एक्सप्रेस, सिंध-गाँधीनगर एक्सप्रेस को शांति एक्सप्रेस, सिंध-मुम्बई एक्सप्रेस को कैप एक्सप्रेस, सिंध-इंदौर एक्सप्रेस को झूलेलाल एक्सप्रेस, सिंध-कोलकता एक्सप्रेस को राष्ट्रगान एक्सप्रेस, सिंध-चेन्नई एक्सप्रेस को अरोड़ एक्सप्रेस, सिंध-त्रिवेन्द्रम एक्सप्रेस को देवल एक्सप्रेस, सिंध-लखनऊ एक्सप्रेस को कंवर भगत राम एक्सप्रेस जैसे नाम रखने का निर्णय लिया गया।

समिति में इन नामों के इतने पहले रखे जाने के समय यह बात स्पष्ट कर दी गई कि इन नामों को इतने पहले रखने के प्रतिकात्मक संकेत हैं। राष्ट्रीय चर्चाओं से राष्ट्रीय मनोबल बढ़ता है और मानस निर्माण होता है। करोड़ों भारतवासियों सहित सिंधी समाज को इससे प्रबल मैसेज जायेगा।

28. अंतिम निर्णय यह हुआ कि 15 अगस्त 2011 को सिंध का उद्घाटन होना है। इसी दिन से सिंध भारतीय संघ का एक पूर्ण राज्य बन जायेगा।

यह एक समय सीमा तय हो गई। पाँच साल का समय था और युद्ध स्तर पर इसे पूरा करने पर पूरी समिति को संकल्पबद्ध किया गया।

29. अंत में राष्ट्रपति ने अपनी इच्छा व्यक्त की की 15 अगस्त 2012 से स्वतंत्रता दिवस के साथ ही सिंध दिवस को भी देश उसी गरिमा से मनाये। पूरी समिति ने राष्ट्रपति की इस इच्छा का पूर्ण अनुमोदन किया।

वैश्विक विश्वकर्मा उदय

निर्माण के सम्पादन का दायित्व समिति ने सिविल कन्सट्रक्शन के विख्यात लोगों की बनी एक उप समिति को सौंप दिया। हर काम का ग्लोबल टेंडर जारी किया जाने लगा।

सबसे पहले द्वीप बनाने में कुशल एवं विख्यात फर्मों ने अपने-अपने टेंडर भरे। तेजी से काम निकालने के लिए दस फर्मों का चयन किया गया। युद्ध स्तर पर काम शुरू हो गया।

दो साल के दिन-रात की मिहनत से द्वीप निर्मित हो गया। द्वीप की आकृति एक दम सिंध जैसी बनाई गई। अब उसको चारों ओर से किले की मजबूत दीवार की घेराबंदी का कार्य भी शुरू हो गया।

रेल और सड़क द्वारा मुख्य भूमि से सिंध को जोड़ने के लिए समुद्र में पुल के लिए शुरू में ही विश्व की सबसे बड़ी दो पुल निर्माण करने वाली कम्पनी टेफ्कौन एवं ग्लोबल विजन को ठीका दे दिया गया था। दो साल नौ महीने में दोनों पुल बनकर तैयार हो गये।

सड़क और रेल पुल बनते ही भारत के कोने-कोने से भवन निर्माण सामग्री तेजी से पहुँचने लगी। शुरू से ही बड़े-बड़े पानी के जहाज इसमें लगे हुए थे। भारत के सभी बंदरगाहों से बड़े-बड़े जहाजों द्वारा मिट्टी, गिट्टी, बालू एवं अन्य भवन निर्माण तथा द्वीप निर्माण करने वाली सामग्री आ रही थी।

सिंध के ऊपरी परत पर मिट्टी बिछाने के लिए भारत के कोन-कोन से मिट्टी आने लगी। पाकिस्तानी सरकार और सिंध सरकार ने समिति के आग्रह पर सिंध के विभिन्न हिस्सों से मिट्टी आदि ले जाने की छूट दे दी। कराँची बंदरगाह पर एक यार्ड इसी काम के लिए दे दिया गया था।

सबसे ज्यादा सतर्कता सिंधु नदी की जलधारा के मार्ग को निर्धारित करने में रखा गया। एक दम उसी तरह प्रवाह का मार्ग बनाया गया जैसा पाकिस्तानी सिंध में है। जहाँ-तहाँ चौड़े घाट का निर्माण किया गया। स्नान की

सुविधा को लेकर सुरुचिपूर्ण घाटों की व्यवस्था की गई। साधुबेला को प्राकृति रूप देने का प्रयास किया गया। टापू का क्षेत्र पाँच एकड़ का रखा गया। सिंधु से समुद्र मिलन को अति सतर्कता से मिलाया गया। सिंधु से समुद्र मिलन का दृश्य अति मनोरम था। व्यवस्था इस प्रकार थी कि सिंधु के सारे पानी को पुनः शुरू से बहाने की आवश्यकता हुई तो वह भी संभव था।

पाकिस्तान से सिंधु नदी के जल को जहाजों, टैंकरों और पाइप लाइन बिछाकर सिंध लाने की व्यवस्था हुई और उस जल को साफ कर भारतीय सिंध में बहाना था।

सिंध द्वीप निर्माण की सारी राशि भारत सरकार, राज्य सरकारों, आम जनता की स्वेच्छा से दान में दी गई राशि तथा विश्व के कोने-कोन से सिंधी समाज एवं अन्य भारतवर्षियों द्वारा दान में दी गई राशि से ही की गई। सिंध द्वीप निर्माण में कहीं से भी ऋण नहीं लिया गया और न तो इसमें किसी की हिस्सेदारी थी। यह पूरी तरह भारतवर्ष का अभिन्न अंग था। पूरी तरह भारत सरकार के स्वामित्व में था।

द्वीप निर्माण के बाद के सारे बड़े-बड़े निर्माण पी.पी.पी. (प्राइवेट पब्लिक पार्टनरशीप) से होने की होड़ लगी थी। चूँकि हर निर्माण में सिंधी समाज की उपस्थिति का ख्याल रखा जा रहा था, इसलिए सिंधी उद्यमी विश्व स्तरीय संस्थाओं के साथ अपने को सम्बद्ध कर पी.पी.पी. मोड पर काम को हासिल करने का प्रयास कर रहे थे।

कई निर्माण के लिए हिस्सेदार (शेयर होल्डर) बाजार में आ गये थे। विभिन्न प्रोजेक्ट्स के शेयर को लेने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होड़ मची थी। विशाल लाभ की भावी संभावनाओं को देखते हुए लोग अधिक से अधिक शेयर खरीदने की जुगत बिठाते देखे जाते थे।

जब इसमें गड़बड़ी की खबरें आने लगी तो समिति की आपात बैठक हुई और तय हुआ कि प्रस्तावित सिंध से संबंधित कम-से-कम एक-एक शेयर देश के हर नागरिक को मिले। यह एक ऐसा निर्णय था जिसने सिंध की गरिमामय उपस्थिति को हर घर में पहुँचा दिया। सिंध का संबंध देश के

हर व्यक्ति के जेब और चूल्हे से जुड़ गया। सिंध के खुल जा सिमसिम खजाने तक सबकी पहुँच हो गई।

आवासीय भूखंड तथा फ्लैट आदि के लिए कहीं-कहीं नीलामी और कहीं-कहीं लॉटरी सिस्टम का सहारा लेना पड़ा। दुकान तथा विभिन्न उद्देश्यों के भूखंड एवं भवनों में स्थान दिलाने के लिए दोनों पद्धतियों का सहारा लेना पड़ा।

देश के हरेक नागरिक के लिए कम-से-कम एक शेयर की घोषणा होते ही वहाँ के हर निर्माण एवं काम में अपनी-अपनी हिस्सेदारी लेने की होड़ मच गई।

सिंध निर्माण को लेकर सबसे ज्यादा आर्थिक हलचल गुजरात में आ गई थी। वहाँ की सम्पूर्ण आर्थिक गतिविधियों में उफान आ गया था। गुजरात की समृद्धि का राजमार्ग और चौड़ा हो गया था।

चूँकि सड़क मार्ग और रेल मार्ग गुजरात के कच्छ से होकर ही जा रहा था इसलिए सिंध निर्माण का सबसे बड़ा आर्थिक लाभ गुजरात को ही हो रहा था। सिंध जाने वाले मार्ग पर गुजरात के पेट्रोल पम्पों पर डीजल-पेट्रोल एवं ल्यूब की बिक्री आसमान छूने लगी थी। सिंध जाने वाला मार्ग विश्व का सबसे व्यस्ततम मार्ग होने जा रहा था। मार्ग पर विश्वस्तरीय वेसाइड फैंसिलिटीज एवं नेशनल हाइवे रिजोर्ट का फैलाव हो रहा था। गुजरात के आम जन के साथ वहाँ का उद्योग जगत एवं व्यावसायी वर्ग कुलाचें भर रहा था।

सिंध निर्माण के हर प्रोजेक्ट्स में सारे देशवासी अपनी सक्रिय भागीदारी करें तथा हर देशवासी वहाँ दान आदि भी दें; को लेकर सिंध निर्माण समिति के सदस्य देश का सघन दौरा कर रहे थे। जहाँ-तहाँ विचार संगोष्ठी, नुक्कड़ सभा तथा संवाद की अन्य प्रक्रियाओं का सहारा लिया जा रहा था।

पूरे देश में सिंध-सिंध की ही अनुगूँज सुनाई दे रही थी। उसके इतिहास और वर्तमान को लेकर छोटी बड़ी पुस्तकों की बाजार में भरमार देखने को मिल रही थी।

सिंध निर्माण करोड़ों को रोजी-रोटी दे रहा था। अर्थशास्त्रियों का अनुमान था कि सिंध भारत के भविष्य को दूर तक प्रभावित करने वाला होने जा रहा है।

सिंध के नाम से बाजार में ढेर सारे उत्पाद आ गये थे। सिंध नमक, सिंध पापड़, सिंध मशाले, सिंध बिन्दी, सिंध फैशन, सिंध साइकिल, सिंध मोटर्स, सिंध आयरनस्, सिंध इलेक्ट्रॉनिक्स आदि-आदि। सिंध पर धड़ा-धड़ एलबम आ रहे थे।

सिंध को लेकर गंभीर पुस्तकें भी छपने लगी थी। सिंध की लोक कथायें देश भर में पढ़ी जा रही थी। इन लोक कथाओं का नाट्य मंचन भी शुरू हो गया था। फिल्मी जगत एवं टेलीविजन पर सिंधी पृष्ठभूमि पर फिल्म एवं सीरियल निर्माण की खबरें आ रही थी। भगत पद्धति वाले कार्यक्रम हर शहर में होने लगे थे। शायद ही कोई छोटा-बड़ा शहर न हो जहाँ सिंधी भोजन के रेस्त्रां नहीं खुले हों।

सिंध के आलोक में भारतीय इतिहास की विवेचना होने लगी थी। सच पूछिये तो सिंध भारत बोध की पाठशाला का रूप लेने लगा था। इस स्थिति को लेकर देश में एक नारा गढ़ा जा चुका था—

‘सिंध संवारे हिंद’

समिति के सदस्य भी यही कह रहे थे कि हम सभी भारतवासी ऐसे सिंध की रचना कर रहे हैं जो भारत को भविष्य में सिंध की उन्नति के ढर्रे पर ले जायेगा। आधुनिकता के साथ सिंध की मौलिकता यानि सिंधियत का ख्याल रखते हुए जिस प्रकार का श्रम हो रहा है उसी प्रकार आगे भी भारत के लिए भारतीयत के मूल्यों को बनाये रखना है।

पाँच साल बीतते-बीतते सात लाख से ज्यादा लोग सिंध में रहने लगे थे। इसमें पाँच लाख सिंधी थे। सारे मौलिक प्रोजेक्ट्स अपना आकार ले चुके थे। इस प्रकार अंततः 15 अगस्त 2011 नजदीक आ गया।

वन्दे सिंध वन्दे

आज 15 अगस्त है। देश में राष्ट्रवाद का उन्माद छाया है। आज सिंध राष्ट्र को समर्पित किया जाना है। आज से ही सिंध भारतीय संघ का एक राज्य हो रहा है।

पूरे देश से लगभग 50 लाख लोग सिंध पहुँच चुके हैं। हजारों पाकिस्तानी सिंधी भी भारतीय सिंधियों को बधाई देने सिंध आ चुके हैं। पूरे सिंध में महाउत्सव का माहौल है। पूरे सिंधु नदी के प्रवाह क्षेत्र में लाखों लोग स्नान कर रहे हैं। आज के दिन सारे आगंतुकों के लिए निःशुल्क भंडारे एवं लंगर की व्यवस्था है।

ब्रह्ममुहूर्त में सपरिवार स्नान करने वालों में प्रोफेसर रघुनंदन भी एक था। प्रोफेसर के लिए यह स्नान परमानंद के समान था। उसने एक सौ एक डुबकी लगाई और हर-हर सिंधु के बोल भी लगता रहा। जब समीप स्नान कर रहे एक सज्जन ने उसे हर-हर शब्द गंगा एवं शिवशंकर के लिए ही प्रयोग को सही बताया तो प्रोफेसर ने उन्हें हर-हर की सार्थकता को गंगा से सिंधु के संदर्भ में भी कम महत्त्व की बात नहीं कही। हर-हर शब्द जल के प्रवाह के लिए प्रयुक्त होता है। यह प्रायः भगवान शंकर और गंगा जी के लिए प्रयुक्त होता है। इस महान सिंधु नदी की धारा मानसरोवर से निकलते हुए और कैलाश से होते हुए गुजरती है। कैलाश भगवान शंकर का निवास स्थान है। इसलिए यह नदी भी भगवान महादेव से सम्बद्ध है। इसलिए हर-हर सिंधु बोलना भी उतना ही सही, पवित्र और आनंदकारी है जितना हर-हर गंगा बोलना। तब वह सज्जन ही नहीं बल्कि उस घाट पर सभी हर-हर सिंधु बोल कर डुबकी लगाने लगे।

मातृभूमि की खड़ी एवं भव्य-विस्तृत भूतल आकृति को लाखों लोग निहार रहे हैं। मातृभूमि की भव्यता और सौन्दर्य को देखकर सभी अभिभूत हैं। सभी एक सिहरन और सनसनी की मनोदशा में हैं। अपने भारतवर्ष का ऐसा विहंगम दृश्य एक निगाह में ही देखने का सुख और आनंद अद्वितीय

है। भूतल आकृति पर श्रद्धा भाव से लाखों लोग विचरण कर रहे हैं। सभी नदियाँ प्रवाहमान हैं। पूरा हिमालय क्षेत्र हिमाच्छादित है। सभी इसे एक आश्चर्यजनक निर्माण मान रहे हैं।

जैसे ताजमहल के भिन्न-भिन्न कोणों में खड़े होकर लोग फोटोग्राफी करते हैं वही दृश्य मातृभूमि की खड़ी एवं भूतल आकृति के समक्ष है। सभी लोग बार-बार यहाँ आने की भावना व्यक्त कर रहे हैं।

वही स्थिति 'धरती माता' की भी है। लाखों लोग धरती माता पर विचरण कर रहे हैं। लोग छोटी-छोटी यंत्रचालित नौकाओं द्वारा एक महादेश से दूसरे महादेश पर आ-जा रहे हैं।

ठीक नौ बजे राष्ट्रपति राजधानी अरोड़ में ध्वजारोहण करते हैं और राष्ट्रगान के बाद सिंध राज्य को भारतीय संघ में विधिवत शामिल करने की घोषणा करते हैं। आसमान से सैकड़ों हेलीकॉप्टर और हवाई जहाजों द्वारा पुष्प वृष्टि की जाती है। सिंध को चारों ओर से घेरे हुए नौ सेना के 101 पनडुब्बियों एवं जहाजों द्वारा 101 तोपों की सलामी दी जाती है। राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्र को सम्बोधित किया जाता है।

प्रधानमंत्री आज के दिन पहली बार लाल किला के स्थान पर सिंध के अरोड़ से राष्ट्र को सम्बोधित कर रहे हैं। उनके भाषण में सिंध में देश-विदेश के लोगों की विशाल उपस्थिति, मातृभूमि और धरती माता के प्रति दर्शन को लेकर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय रूचि का उल्लेख बार-बार हो रहा है। उन्होंने कहा कि अब सिंध दुनिया का केन्द्र बन गया है। सिंध देखे बगैर भारत पर्यटन या विश्व पर्यटन अधूरा है।

मंच पर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के अतिरिक्त सिंध निर्माण समिति के सभी तीसों सदस्य उपस्थित हैं। प्रोफेसर की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे हैं। जब उसके बोलने की बारी आई तो वो केवल माइक के पास जाकर हाथ जोड़ खड़ा हो गया और रूंधे गले से 'हर-हर सिंधु' और 'वन्दे सिंध वन्दे' बोलकर चुप हो गया।

जब वो माइक छोड़कर जाने लगा तो चारों ओर से बोलिये-बोलिये की आवाजें आने लगी। वो रूक गया। उसने एक ग्लास सिंधु का जल पीया और फिर बोला, “आज क्यों भारत को सिंध बनाना पड़ा है? पहले इसे हर सिंधी-हर भारतीय समझे। भारत बचा है तब आपने सिंध बना लिया। जब भारत ही नहीं रहेगा तब फिर कुछ भी कहाँ बनेगा? इसलिए हम इतिहास बोध को समझें। भारत के भविष्य को नियंत्रित करने को लेकर जगें। वर्तमान को बिगड़ने न दें, भविष्य आपके कब्जे में रहेगा।

हमारा जीवन धन्य हो गया है। मैंने पूरा जीवन जी लिया है। हमें सब कुछ मिल गया है। भगवान करे हमारा सिंध, सिंधी समाज सदा अक्षुण्ण रहे। लेकिन भारत का सबसे पुराना समाज होने के कारण भारत की भविष्य रक्षा का दायित्व भी आप पर है। आप अपनी जीवटता और संघर्षशीलता से भारत को ओत-प्रोत करें। आप बारह-तेरह सौ वर्षों में भी समाप्त नहीं हुए और साठ वर्षों में ही तनकर चट्टान सदृश खड़े नजर आ रहे हैं। आप अपनी तुलना इजरायल से करते हैं। इजरायल एक देश है। भारत एक देश है। अब इजरायली मानसिकता को अपने सहित भारत में भी प्रवाहित करने का दायित्व आपका है।

आज भारत का प्रायश्चित पूरा हो गया है। भारत ने अपनी भूल को सुधार लिया है। आज भारत सिंध की ऐतिहासिक उपेक्षा के कलंक से मुक्त हो गया है। अब भारत द्वारा सिंध निर्माण के लाभ को भारत देखेगा। सन् 1973 में सिंध का जो काँटा विद्यार्थी जीवन से हमारे कलेजे में फंसा हुआ था आज 38 वर्षों के बाद बाहर निकला है। इसी से आप हमें पहुँच रहे आराम का अनुमान कर सकते हैं। यह आराम हमें आनंद की उड़ान का मजा दे रहा है।

आज हमारा राष्ट्रगान पूरा हो गया। राष्ट्र पूरा हो गया। हम-आप सब भारतवासी पूरे हो गये। अब और क्या कहना! आनंदम्-आनंदम्-परमानंदम्! आप सबों को हार्दिक शुभकामना-बधाई-धन्यवाद।”

पूरे भारत सहित विश्व में आज टेलीविजन पर डायरेक्ट टेलीकास्ट के इन घटनाओं के दर्शकों की संख्या गणना से परे है।

प्रोफेसर आज सुबह से ही मन की एक अपनी दुनिया में जी रहा है। उसका मन गंगा तट और माँ काली के प्रति अनुरक्त है। रह-रह कर उसका मन गंगा तीरे सिंध शरीरे के चक्कर काटने लगता है। न मालूम आज वो कितनी बार गंगा में स्नान कर चुका है और कितनी बार माँ के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर चुका है।

वह सिंध सपरिवार आया है। दोनों बच्चों, पत्नी जानकी और पिता जी को प्रसन्न देखकर अपनी स्वर्गीय माँ को भी स्मरण कर खुद मुदित है।

यह पहला स्वतंत्रता दिवस है जो किसी एक राज्य के नाम समर्पित हो गया है। पूरा देश सिंधमय हो गया है। भारत माता की जय-जयकार के बाद देश भर में वन्दे सिंध वन्दे का जय-जयकार हो रहा है।

देश-विदेश की व्यावसायिक उड़ानों वाली एअरलाइंस कम्पनियाँ हजारों लोगों को सिंध का एरियल व्यू दिखला रही हैं। कई लेन वाली शानदार सड़कों और रेल मार्ग से देश की मुख्य भूमि से जुड़ा सिंध ने पहले दिन ही यह बता दिया कि यहाँ अतिशीघ्र जापान आदि की तरह समुद्र के अंदर के परिवहन व्यवस्था के बारे में सोचना पड़ेगा।

पूरे विश्व के सिंधी घरों में पर्व मनाया जा रहा है। पूरा सिंध और सिंधी समाज दीपावली मनाने की तैयारियों में डूबा हुआ है। कोटि-कोटि कंठों से—

वन्दे सिंध वन्दे

वन्दे सिंध वन्दे

वन्दे सिंध वन्दे

के बोल मुखरित हो रहे हैं।

G.M. College of Education
Raipur, Bantala
Jammu.

Ass No.....
Date..... 11-11-2023

जनसत्ता

चौपाल, 27 मार्च 2010

सिंध का सवाल

में इतिहास का विद्यार्थी रहा और कॉलेज के दिनों से यह धारणा तीव्रतर होती चली गई कि सन् 712 से ही सिंध की उपेक्षा ने हर कालखंड में भारत को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। लेकिन यह उपेक्षा या शत्रुमूर्ग सरीखा व्यवहार केवल सिंध के साथ हुआ है यह कहना भी गलत है। यह प्रवृत्ति भारतीय मानस की त्रासदी है।

देश विभाजन में संपूर्ण सिंध का परित्याग एक ऐसी रिक्तता है जिसकी आंशिक भरपाई के प्रति भी देश में सोच बनना चाहिए था; लेकिन इसके उलट मूढमति का प्रति-निधित्व करते हुए संजीव भटनागर ने तो राष्ट्रगान से ही सिंध को हटाने की याचिका सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल कर दी। याचिका का जो हश्र होना था सो हुआ पर एक गैर सिंधी होते हुए भी एक भारतीय के नाते मैं तो हिल गया।

हमें लगा कि अब इतिहास में झांकते और भविष्य पर निगाह रखते हुए यदि राष्ट्रगान, सिंध और भारतीय सिंधीजनों को केंद्र में रख कर कुछ पहल नहीं हुई तो वैचारिक-बौद्धिक खोखलेपन का यह क्षेत्र और बृहत्तर होता चला जाएगा।

इस दंढ में हमारे जैसा एक सामान्य व्यक्ति क्या करे? विचार दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। मैंने उसी का सहारा लेने का निश्चय किया है। क्या राष्ट्रगान को संपूर्णता नहीं मिलनी चाहिए? क्या लाखों सिंधीजनों की संतुष्टि के लिए भारत के अंदर 'सिंध' राज्य का निर्माण नहीं होना चाहिए? क्या 'सिंध' निर्माण कर पूरा भारत सिंध संबंधी प्रायश्चित न करे? क्या 'सिंध' निर्माण से ही हम 'भारत बोध' के बीज का अंकुरण न करें?

हेमन्त कुमार, पटना

दैनिक जागरण

पाठकनामा, 15 जून 2010

सिंधी जाति में सिंधियत लिखें

सिंधु नदी और प्रकारान्तर में सिंधु से सटे सिंध क्षेत्र के अपभ्रंश उच्चारण के कारण जिस भारत देश का नाम विदेशियों ने 'हिन्दुस्तान' तथा 'इंडिया' रखा, वही सिंध 1947 के भारत विभाजन और आजादी के बाद भारत से पूरी तरह पृथक हो गया। पाकिस्तानी सरकार के व्यवहार से आक्रांत हो लाखों हिन्दू-सिंधी शरणार्थी सम्मान एवं रोजी-रोटी के लिए पूरे देश में फैल गये।

1991 की जनगणना में भारत में इनकी आबादी 23 लाख थी। वास्तव में आज के दिन में विदेशों में वैसे अप्रवासी हिन्दू सिंधियों सहित भारत में सिंधियों की आबादी 40-50 लाख से कम नहीं होगी। सिंधी 2011 की जनगणना में जम कर हिस्सा लें। यह एक अनूठा अवसर है सिंधियों को अपनी उपस्थिति एवं राष्ट्रीय पहचान बनाने की। यदि जाति आधारित जनगणना होती है तो सिंधी लोग जाति में सिंधियत लिखें।

अपनी उपराष्ट्रीयता को ही जाति बना लें। जाति-विहीन सिंधी समाज से भारतीय समाज प्रेरणा लेगा। वैसे भी आजादी पूर्व सिंध में व्यवसाय तथा कर्म आधारित दो समाज 'आमिल' और 'भाईबंद' का अंतर अब भारत में समाप्त हो गया है। जनगणना में अपनी महत्ता स्थापित कर एक छोटा ही सही पर पृथक 'सिंध' राज्य के निर्माण की राष्ट्रीय आवश्यकता स्थापित की जा सकती है।

हेमन्त कुमार, पटना



नोवेल्टी एंड कम्पनी

ताराभवन, अशोक राजपथ, पटना-800 004

ISBN: 978 81 906934 0 0



9 788190 693400